विक्रम पंचांग



विक्रमादित्य

उज्जयिनी के सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य अपने आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व और स्वीकार्य कृतित्व के कारण सतत लोकप्रिय तथा भारतीय अस्मिता के उज्ज्वल प्रतीक रहे। वे शकारि तथा साहसांक थे। वे शक विजेता, सम्वत् प्रवर्तक, वीर, दानी, न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, स्तत्व सम्पन्न थे। वे साहित्य, संस्कृति तथा विज्ञान के उत्प्रेरक रहे। उनकी सभा कालिदास, वराहमिहिर, वेतालभट्ट, अमरसिंह, घटखर्पर, धन्वन्तरि, वररुचि, शंकु, क्षपणक आदि नवरत्नों से उज्ज्वल थी। अपने गुणगौरव के कारण उनका नाम परवर्ती अनेक राजाओं की उपाधि बनता रहा। भारत के इतिहास में रामराज्य के बाद विक्रमादित्य के सुशासन का ही स्मरण किया जाता रहा। भारतीय सांस्कृतिक प्रभामंडल का वे आदर्श प्रतीक और लोकमान्य हैं।



शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

संदेश

सम्राट विक्रमादित्य भारतवर्ष के सांस्कृतिक विकास, शौर्य और वैभव के प्रतीक थे। वे अपने औदार्य, विद्वत्ता, साहित्य-सेवा, अलौकिक प्रतिभा एवं दिग्विजय के कारण सर्वश्रुत थे। वे प्रत्येक बात में इतने अद्वितीय थे कि उनकी उपमा संभवतः किसी से भी नहीं दी जा सकती। उनकी शालीनता, मनुष्यता, वाग्मिता, बुद्धिमत्ता विविध विचित्रताओं की गाथाएँ आज भी भारतीय जनमानस में प्रचलित हैं।

भारतीय संस्कृति के लिए यह गौरवपूर्ण बात है कि भारतवर्ष में सम्राट विक्रमादित्य द्वारा प्रवर्तित विक्रम सम्वत् संसार के प्रायः सभी प्रचलित ऐतिहासिक संवतों में प्राचीनतम है। भारतीय जनमानस की दैनिक गतिविधि में इस सम्वत् का सर्वोच्च स्थान है। विक्रम सम्वत् नाम उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य के नाम से ही प्रसिद्ध है। दुर्जेय विदेशी शकों पर विक्रमादित्य ने अपूर्व विजय प्राप्त की थी। अतः उस विजय की स्मृति में जिस सम्वत् का आरम्भ किया गया वह विक्रम सम्वत् नाम से विख्यात है। यह लोकमान्य सम्वत् भारत की विदेशी शकों पर अप्रतिम विजय का स्मरण होने से भारत के आत्मगौरव तथा भारतीय अस्मिता का प्रतीक है। विक्रम सम्वत् एवं विक्रम पंचांग, भारतीय पंचांगों और काल निर्धारण का आधार है। इस पंचांग की विशेषता है कि यह वैज्ञानिक रूप से काल की गणना के आधार पर निर्मित है। भारत में काल गणना की अनेक पद्धतियाँ प्रचलित रही है जिसमें 'सूर्य सिद्धांत' सबसे प्राचीन पद्धति मानी जाती है। वैदिक काल के पश्चात् आर्यभट, वराहमिहिर, भास्कर आदि जैसे खगोलशास्त्रियों ने पंचांग को विकसित किया। पंचांग का पठन एवं श्रवण अति शुभ माना जाता हैं हिंदू सनातन परंपरा में पंचांग का महत्व सर्वज्ञात है।

विक्रम सम्वत् 2080 के अवसर पर प्रकाशित विक्रम पंचांग हमारी प्राच्य विद्याओं और ज्ञान को समकालीन समाज के सम्मुख अपने वृहद और विस्तृत स्वरूप में प्रस्तुत करेगा।

(शिवराज सिंह चौहान)

विक्रम पंचांग

नियामक
- **श्री शिवराज सिंह चौहान**, मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश
- **सुश्री उषा ठाकुर,** मंत्री संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मध्यप्रदेश
- **डॉ. मोहन यादव,** मंत्री, उच्च शिक्षा, मध्यप्रदेश
- **श्री शिव शेखर शुक्ला,** प्रमुख सचिव संस्कृति, मध्यप्रदेश शासन

सम्पादक • **श्रीराम तिवारी**
सह सम्पादक • **राजेश्वर त्रिवेदी**
सहयोग • **पं. चंदन श्यामनारायण व्यास, राजेश शर्मा**
आकल्पन • **एलिमेंट स्टुडियो,** भोपाल

स्वत्वाधिकार प्रकाशकाधीन
प्रथम संस्करण विक्रम सम्वत् 2080
ईस्वी 2023

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ
स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग
मध्यप्रदेश शासन का प्रकाशन
1, उदयन मार्ग, उज्जैन - 456010
दूरभाष : 0734- 2521499

महाकाल मंदिर, उज्जैन



मानवलोकेश्वर महाकाल मन्दिर, उज्जैन

'मृत्युलोके महाकालम्' इस पुराणोक्ति की पृष्ठभूमि में अवश्य ही ऐतिहासिक तथ्य-परम्परा विद्यमान है। समस्त मानवलोक की स्वामिता का अधिकार महाकालेश्वर को केवल धार्मिक भावना से ही प्राप्त नहीं है, किन्तु महाकालेश्वर की इस विशिष्टता के लिए हमें मालव-भूमि की प्राग्- ऐतिहासिक युग से भी पूर्व की स्थिति पर दृष्टिपात करना होगा। प्रलयकालीन भारत की हमारे समक्ष एक धुंधली सी कल्पना-रेवा है। उसके पश्चात् यदि कहीं मानव-सृष्टि के आरम्भिक विस्तार का कारण-स्वल ज्ञात होता है तो वह मालव-प्रदेश ही है और इसी कारण अवन्ती देश की पौराणिक विभिन्न नामावलियाँ रहस्य से परिपूर्ण है। उसमें भी प्रतिकल्पा शब्द ऐसा है जो विभिन्न युगों (कल्पों) में इस प्रदेश के अस्तित्व की सूचना देता है। ये नाम और पौराणिक राजवंशों के वे नाम जो सुमेर एवं इजिप्शियन संस्कृति से नाम-साम्य ही नहीं, अधिकार क्षेत्र के व्यापक स्वरूप की भी संगति जुड़ाने में पर्याप्त सहायक होते हैं, मालव की अति पुरातन महत्ता स्थिर करने में सहायक बनते हैं। और यही कारण है कि पुराणों के 'प्रलयो न बाघते तत्र महाकाल पुरी इस पद्यांश में तत्कालीन ऐतिय भावना का ही प्रतिबिम्ब है। नर्मदा उपत्यका की सभ्यता के अनुसन्धान ने भी इन्हीं विचारों को पुष्टि दी है। फलत: महाकालेश्वर की यह पावन पुरी मानव-जननी के रूप में ही प्रकट होती है। तक्षशिला के धर्मराजिका मठ की मही से जिस पुरातनत मानव के कंकाल ने प्रकट होकर भारत की किसी विशिष्ट सभ्यता का प्रदर्शन किया था, उससे भी शताब्दियों पूर्व की सभ्यता के समर्थन करने के लिए एक दूसरे महामानव के मूल पुरुष के कंकाल ने प्रकट होकर उज्जैन में मानव शक्ति की प्रथमोत्पन्नता का प्रत्यक्ष प्रमाण उपस्थित कर दिया।

वैदिक-रामायणयुगीन अवन्ती की आर्य-संस्कृति की रक्षा, विस्तार और व्यापकता एक नहीं अनेक प्रमाणों से सिद्ध है। प्रलयावृत पृथ्वीतट पर भारत-हृदयासीन मध्य भारत ही मानव सृजन में सन्नद्ध था, यही कारण है कि मानवलोकेश महाकाल इस सृष्टि-समारंभ-साधिका पुरी के पुराण प्रथित्त प्रभु हैं। उपनिषद् और आरण्यक ग्रंथों ने वाराह पुराण की उस पद्य-संगति को सबल बनाया है जो इस भारत-भूमि के नाभिदेशावस्था में शरीर-क्षेत्र के मानव मानचित्र पर अवन्ती रूप में प्रस्तुत है। "नाभिदेशे महाकालस्तन्नाम्ना तत्र वं हरः इत्येवा तैत्तिरी श्रुतिः" और जिसको उपनिषदों में से अनेक ने प्रमाणित भी किया है। महाकालेश्वर इसी कारण ज्योतिर्लिंगों की द्वादशसंख्यक सत्ता से उठाकर मृत्युलोकेश की सार्वभौम सत्ता के सर्वाधिकारी रूप में स्वीकृत हो गये हैं। यह उस आध्यात्मिक युग की स्थिति है जिस युग की महत्ता ने समस्त जग को हमारे महादेश को सर्वतोपरि सुसंस्कृत स्वीकृत करने को विवश कर दिया है। महाकालेश्वर के आवन्तिक अस्तित्व और उनकी पुरातन प्रमाणों की खोज करना सूर्य के महाप्रकाश में दीप का प्रकाश करना है। महाकालेश्वर मन्दिर की सुन्दरता और विशालता का वर्णन साहित्य एवं धर्मग्रंथों में है। बाण एवं कालिदास ने इस स्थल की अभिरामता का जैसा मनहर चित्र खींचा है वह तो मनोमुग्धकारी ही है। यह मान्यता महाकालेश्वर के विषय में समस्त मालव में स्वीकृत है कि उज्जयिनी के इस महामन्दिर के प्रांगण के विशालकाय किन्तु कलांकित स्तंभों की संख्या 121 थी और मन्दिर भी 121 गज ऊँचा था ऐसी जनश्रुति शताब्दियों से प्रचलित है। परन्तु इस जनश्रुति का आधार सत्य पर समाश्रित ही है, केवल कथानक तक ही सीमित नहीं। आज भी महाकाल मन्दिर के निकटवर्ती भूस्तरों में वैसे ही वास्तुशिल्प से उत्कीर्णित अनेक स्तम्भ सहज ही रजकण सम्पुटों को उठाते ही प्राप्त हो जाते हैं, तब इस कथन में भी सन्देह को स्थान नहीं रहता कि मन्दिर गगनोन्नत था। सम्राट् विक्रमादित्य की यह कथा प्रसिद्ध है कि वह महाकाल की आराधना में सदोद्यत रहता था, अवन्तीनाथ का पद किसी व्यक्ति के लिए नहीं महाकालेश्वर के लिए ही स्वतंत्र था। हरसिद्धि देवी के चरणों में तो उसने कहा जाता है,अपने मस्तक की बलि देकर 134 बार कमल-पूजा ही की है। 135वीं बार जब मस्तक चढ़ा देने पर उसका मस्तक कबन्ध पर वापिस नहीं आया, तभी उसके शासन की इति हो गयी। जो कुछ भी हो, धर्म, आध्यात्म, पुराण, और तांत्रिक ग्रंथों में भी महाकाल की महत्ता का असाधारण वर्णन हुआ है। भारतवर्ष में नाट्यकला के अभ्युदय के साथ सर्व प्रथम जिस अभिनय की कल्पना का उल्लेख विदित होता है वह इन्द्रध्वज महोत्सव के प्रसंग पर महाकालेश्वर के प्रांगण में ही सर्व प्रथम अभिनीत हुआ था। इसी प्रकार यह भी असम्भव ज्ञात नहीं होता कि महाकालेश्वर का मन्दिर अनेक रत्नालंकरणों से जटित था, उसके स्फटिकप्रभ धवल प्रांगण में मणि-मौक्तिकों के झूमर-तोरण झूला करते थे, जिनकी आभा से वह स्फटिक शिलाएँ विविध वर्णों की द्युति धारण कर अनेक चित्रों की झाँकी बना दिया करती थी, प्रवेशद्वार पर लटकती हुई घंटिकाएँ, सुवर्ण-रजत- राशि से निर्मित रहती थीं, और उनके चारों ओर भी मोतियों की झालरें लटकती रहती थीं, फिर भगवान् शिवजी के पूजार्चन वैभव का तो कहना ही क्या है। इस काव्य-कथित सौन्दर्य रचना की सचाई में इस कारण भी सन्देह नहीं होता कि महाकवि कालिदास स्वयं स्वीकार करते हैं कि वैभवशालिनी अवन्ती के बाजारों में धान्य राशियों की तरह समस्त रत्नों की ढेरियाँ यत्रतत्र विस्तृत रहती थीं, जिसके कारण कवि को यह कहना पड़ा है कि रत्नाकर सागर शायद इसीलिए केवल जलमात्रावशेष रह गये हैं क्योंकि समस्त रत्नराशि तो इस नगरी के बाजार में चकाचौंध लगाए हुए हैं।

सम्राट् चण्ड प्रद्योत के शासनकाल (6ठी सदी ई.पूर्व) महाकाल मंदिर में शिवलिंग स्थापित था। सम्राट् प्रद्योत के पश्चात् के इतिहास ने मन्दिर की महिमा विक्रम-कालिदास से ही प्राप्त की है। और पुनः कई शताब्दियों के नन्तर सिंधुराज एवं मुंज ने इसे सादर स्मरण किया है। भोज के आत्मज उदयादित्य ने तो मन्दिर का पुनर्वार जीर्णोद्धार करवाया है, जिसके प्रमाणस्वरूप अनेक शिलाखण्ड यथासमय महाकाल के पार्श्ववर्ती भू-भाग से उपलब्ध होते रहे हैं। भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक महाकालेश्वर मंदिर है। स्वयंभू, भव्य और दक्षिणमुखी होने के कारण महाकालेश्वर महादेव की अत्यन्त पुण्यदायी महत्ता है। इसके दर्शन मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

कालांतर में 1235 ई. में इल्तुत्मिश के द्वारा इस प्राचीन मंदिर का विध्वंस किये जाने के बाद से यहाँ जो भी शासक रहे, उन्होंने इस मंदिर के जीर्णोद्धार और सौन्दर्यीकरण की ओर विशेष ध्यान दिया, इसीलिए मंदिर अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर सका है।

मराठा शासकों ने मालवा क्षेत्र में अपना आधिपत्य स्थापित किया और उज्जैन का खोया हुआ गौरव पुनः लौटाने का प्रयास किया। मराठों के शासनकाल में यहाँ दो महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटीं- पहली, महाकालेश्वर मंदिर का पुनिर्नर्माण और ज्योतिर्लिंग की पुनर्प्रतिष्ठा तथा दूसरी, सिंहस्थ पर्व स्नान की स्थापना।



विविध सम्वत्सर

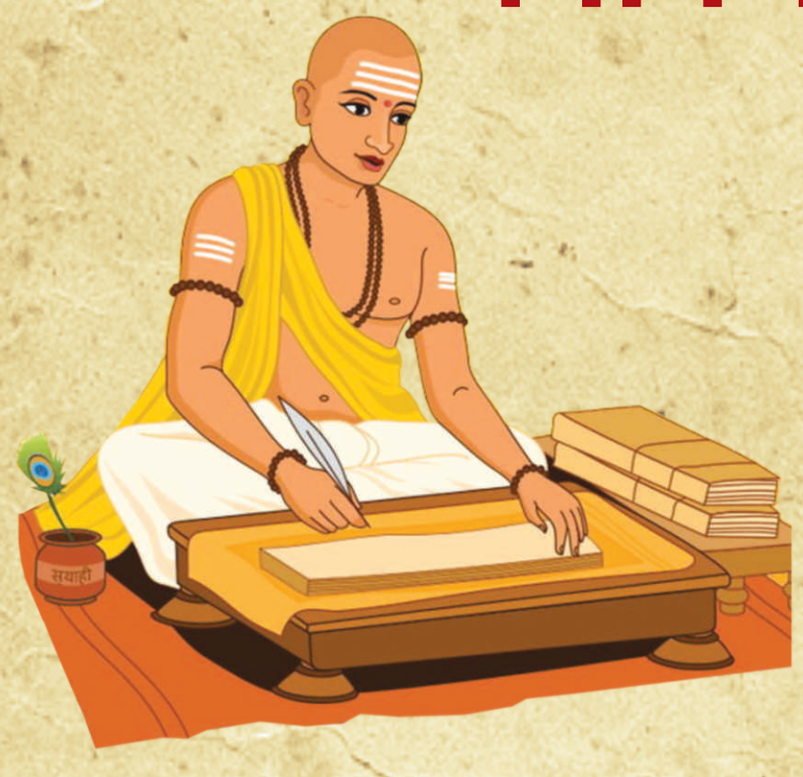

देश में चर्चित, प्रचलित और अब विस्मृत हो चले विविध सम्वत्सर विक्रम सम्वत् की शुरूआत लगभग ईसा पूर्व 57 वर्ष पहले चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से की गयी थी । ईस्वी सन् और विक्रम सम्वत् में 57 वर्षों का अंतर है। इस हिसाब से ईस्वी सन् 2022 में विक्रम सम्वत् 2079 चल रहा है। वैसे भारत में 36 तरह के प्राचीन कैलेंडर वर्ष की चर्चा की जाती रही है। हालाँकि, इनमें से अधिकांश अब प्रचलन से बाहर हैं। दुनियाभर में कई देशों के जो अपने कैलेंडर हैं उनमें नये वर्ष की शुरूआत जनवरी से अप्रैल के मध्य होती है। हमारे यहाँ फिलहाल विक्रम सम्वत्, ईस्वी सन्, हिजरी सन् आदि प्रचलित हैं। विक्रम सम्वत् अत्यंत प्राचीन सम्वत् है । भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय लोकमान्य राष्ट्रीय सम्वत् विक्रम सम्वत् ही है।

1. सप्तर्षि सम्वत्

सात तारों की गति के साथ इसका सम्बन्ध माना जाता है।

2. कृष्ण सम्वत् (3179 वि.पू, 3236 ई.पू.)

3. कलियुग सम्वत् (3045 वि.पू, 3102 ई.पू.)

इसका प्रयोग धार्मिक तिथियों के लिए इस्तेमाल वर्षों पूर्व किया गया

था ।

4. युधिष्ठिर सम्वत् (2391 वि.पू, 2448 ई.पू.)

5. बुद्ध निर्वाण सम्वत् (430 वि.पू, 487 ई.पू.)

गौतम बुद्ध के निर्वाण वर्ष से इस सम्वत् का आरंभ हुआ था।

6. वीर निर्वाण सम्वत् (370 वि.पू, 527 ई.पू.)

अंतिम जैन तीर्थंकर महावीर के निर्वाण वर्ष विक्रम सम्वत् में 470 एवं ई.पू. 527 से इसका आरंभ माना जाता है।

7. मौर्य सम्वत् (263 वि.पू. 320 ई.पू.)

चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी। इसके साथ ही उसने मौर्य सम्वत् को आरंभ किया था।

8. सेल्यूसिडियन सम्वत् (255 वि.पू, 312 ई.पू.) सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस ने जब पश्चिमी एशिया का साम्राज्य प्राप्त किया तब अपने नाम का सम्वत् चलाया था।

9. लौकिक सम्वत् (32 विक्रम सम्वत्, 25 ई.पू.)

10. विक्रम सम्वत् (57 ई.पू.)

इसकी शुरूआत उज्जैन के लोकप्रिय सम्राट विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में की थी। इसको मालव सम्वत् भी कहते हैं। मालवराज विक्रमादित्य ने शकों को परास्त कर अपने नाम का सम्वत् चलाया, यह चैत्र शुक्ल 1 से आरंभ होता है।

11. ईस्वी सन्

ईसा मसीह के जन्म वर्ष से इस का आरंभ माना जाता है। ई.स. 527 को रोम निवासी पादरी डायोनिसियस ने गणना कर रोम नगर की स्थापना से 795 वर्ष बाद ईसा मसीह का जन्म होना निश्चित किया था। 1000 ईस्वी तक जाकर यूरोप सहित विश्व के अनेक देशों में इसका प्रचलन शुरू हुआ ।

12. शक सम्वत् (135 विक्रम सम्वत्, 78 ई.)

इसकी शुरूआत शकों द्वारा विक्रमादित्य के शासन के 137 वर्ष बाद उज्जैन पर पुनः विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में की गयी थी ।

13. कलचुरि सम्वत् (305 विक्रम सम्वत्, 248 ई.) इसको चेदि सम्वत् और त्रैकुटक सम्वत् भी कहते हैं। इसको त्रैकुटक नामक एक राजवंश द्वारा आरंभ किया गया था।

14. गुप्त सम्वत् (377 विक्रम सम्वत्, 320 ई.)

इसकी शुरूआत चन्द्रगुप्त प्रथम ने की थी । इसको गुप्त काल या गुप्त वर्ष भी कहा जाता है।

15. शाहूर सन् तुगलक द्वारा चलाया गए यह सन् हिजरी सन् का संशोधित रूप है। चंद्र मास के बदले सौर मास के अनुसार माना गया है। इसमें 650 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है। मराठी पंचांग में यह अभी भी मिलता है।

16. बंगाल सन्

इसे 'बंगाब्द' भी कहते हैं। इसका आरंभ वैशाख से होता है। इसमें 651 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है। बंगाल के अनेक भागों में कभी यह व्यापक रूप से प्रचलित था।

17. गांगेय सम्वत्

यह सम्वत् कलिंगनगर (तमिलनाडु) के गंगा वंशी राजा द्वारा चलाया हुआ सम्वत् माना जाता है। दक्षिण भारत में अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख मिलता है। 633 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

18. हर्ष सम्वत् (663 विक्रम सम्वत्, 606 ई.)

इसकी शुरुआत कन्नौज के शासक हर्षवर्धन ने की थी और हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद एक सदी तक यह उत्तर भारत में चलन में था।

19. हिजरी सन्

इस्लामिक कैलेंडर के हिसाब से (679 विक्रम सम्वत्) 622 ईस्वी सन् से इसका आरंभ माना जाता है। यह चंद्र वर्ष है, चाँद देखकर इसका आरंभ किया जाता है। इसकी तारीख एक शाम से दूसरी शाम तक चलती है।

20. भट्टिक सम्वत्

यह सम्वत् जैसलमेर के राजा भट्टीक (भाटी) द्वारा शुरू किया गया था। इसमें 680 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

21. कोल्लम सम्वत्

केरल मालाबार के लोग इसे परशुराम सम्वत् भी कहते हैं। तमिल में इसे कोल्लम और संस्कृत में कोलंब सम्वत् कहा गया है। 881 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है।

22. नेवार (नेपाल) सम्वत्

नेपाल के राजा जयदेव मल्ली ने इस सम्वत् को आरंभ किया था। इसमें 936 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है।

23. यहूदी सन्

इजराइल और विश्व के यहूदी इसका प्रयोग करते है।

24. फसली सन्

अकबर ने टोडरमल के परामर्श से लगान वसूली के लिए हिजरी सन् 971 (1506 विक्रम सम्वत्) में चलाया था । यह भी हिजरी सन् का संशोधित रूप ही था। क्योंकि इसके महीने सौर मास के अनुसार चलते थे।

25. इलाही सन्

अकबर ने बीरबल के सहयोग दीन-ए-इलाही के साथ इस सन् को हिजरी सन् 992 (विक्रम सम्वत् 1527 एवं 1584 ई.) में चलाया। इसमें 1 महीना 32 दिनों का होता था। बाद में शाहजहाँ ने इसे समाप्त कर दिया।

26. चालुक्य विक्रम सम्वत्

दक्षिण के चालुक्य राजा विक्रमादित्य (छठे) ने शक सम्वत् के स्थान पर चालुक्य विक्रम सम्वत् चलाया। इसको चालुक्य 'विक्रम का काल' वह 'विक्रम वर्ष' भी कहा जाता है। इसमें 1132 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है।

27. सिंह सम्वत्

इस सम्वत् की शुरुआत काठियावाड़ के गोहिल शासकों ने की थी । इस सम्वत् को शिवसिंह सम्वत् के नाम से भी जाना जाता था । इसमें 1170 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

28. लक्ष्मणसेन सम्वत्

बंगाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मण सेन के राज्याभिषेक से इसका आरंभ हुआ । इसका प्रचलन बंगाल बिहार और उड़ीसा में था । इसमें 1175 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

29. पुडेचैप्पू सम्वत्

यह से (1398 विक्रम सम्वत्) 1341 में केरल के कोच्चि के पास एक टापू की स्मृति में चलाया गया था। इसका प्रचलन कोचीन राज्य के आसपास तक ही रहा ।

30. राज्याभिषेक सम्वत् (विक्रम सम्वत् 1731 ईस्वी 1674)

ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ था, जिसे आनंदनाम सम्वत् का नाम दिया गया। महाराष्ट्र में रायगढ़ किले में एक भव्य समारोह में शिवाजी पूर्णरूप से छत्रपति अर्थात् एक प्रखर हिन्दू सम्राट के रूप में स्थापित हुए ।

मंदिर परम्परा

मंदिर भारतीय संस्कृति का प्रधान अंग रहे हैं। गुप्तकालीन अभिलेखों में मन्दिर निर्माण की चर्चा है। कुमारगुप्त 'महेन्द्रादित्य' के गंगधार (मालवा के दक्षिण में अवस्थित) के लेख में ब्राह्मण द्वारा स्वामीमहासेन के मन्दिर के निर्माण की चर्चा है। कुमारगुप्त विष्णु-मन्दिर एवं सप्तमातृकाओं के देवालयों की स्थापना का वर्णन मिलता है। यह लेख विक्रमी 423 ई. का है। 435 ई. विक्रमी के तुम्बवन (जिला गुना, मध्य प्रदेश) अभिलेख के अनुसार हरिदेव, धनदेव, भद्रदेव एवं संघदेव नामक स्थानीय भाइयों ने तुम्बवन में विष्णु-मन्दिर का निर्माण किया। मन्दसौर-प्रशस्ति (472-73) के अनुसार दशपुर (आधुनिक मन्दसौर) के बुनकरों ने एक सूर्य मन्दिर का निर्माण दशपुर में किया। जूनागढ़ के एक शिलालेख विक्रमी (437 ई.) के अनुसार सुराष्ट्र प्रान्त में अवस्थित गिरिनगर (गिरिनार) के चक्रपालित नामक कर्मचारी द्वारा सुदर्शन-तटाक् के तट पर विष्णु-मन्दिर का निर्माण कराया गया। इन्दौर (इन्द्रपुर) से प्राप्त एक ताम्रपट (465 ई.) विक्रमी के अनुसार क्षत्रिय अचलवर्मा एवं भृकुंटसिंह ने एक सूर्यमन्दिर की स्थापना की। उज्जयिनी में स्थापित महाकाल के मन्दिर की चर्चा मेघदूत" में है। शिल्परत्न में देवालयों में स्थापित मूर्तियों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। अग्निपुराण में मन्दिर निर्माण को परम धार्मिक कर्तव्य बताया गया है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में गंगा-यमुना के देवीरूप की मन्दिर में स्थापना पर प्रकाश डाला गया है। कुमारसम्भव में बताया गया है कि गंगा और यमुना छोड़कर महादेव पर चंवर डुलाने लगीं। कमल पुष्प से देवता की अर्चना पर पद्मपुराण में चर्चा है। मन्दिर में पूजा करने को विधि पर मत्स्यपुराण में वर्णन किया गया है। रघुवंश में राजमन्दिर का उल्लेख मिलता है, जिसके द्वार की चौकियों पर मंगल-कलश रखे हुए थे। रामायण, वृहत्संहिता और मत्स्यपुराण में स्वस्तिक चिह्न के धार्मिक पहलू पर प्रकाश डाला गया है। बृहदारण्यक उपनिषद् में मन्दिरों में स्थापित नग्न प्रतिमाओं के पक्ष में प्रकाश डाला गया है। इस तथ्य पर रघुवंश एवं कुमारसम्भव में भी चर्चा की गयी है। उज्जयिनी के सम्राट विक्रमादित्य द्वारा श्री महाकाल मंदिर पुनर्निर्माण, हर की पौड़ी, द्वारका में मंदिरों के निर्माण की जानकारी मिलती है। अयोध्या के राम मंदिर (जिसका ध्वंस बाबर के सेनापति मीर बांकी ने किया था) के निर्माण का श्रेय भी विक्रमादित्य को जाता है। भारत मन्दिरों का देश कहा जाता है। समूचे देश में विभिन्न देवी-देवताओं के मन्दिर आज भी पाये जाते हैं। मन्दिर भारतीय स्थापत्य कला का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। गुप्तकाल में से हिन्दू मन्दिरों का विकास हुआ था। मानव ने अपनी धार्मिक आस्थाओं को अभिव्यक्त करने के लिए जिन प्रतीकों का निर्माण किया, उनसे मूर्ति पूजा आरम्भ हुई। ईश्वर की विविध रूपों में कल्पना की गयी। देवी-देवताओं के मूर्त रूपों की पूजा हेतु स्थापना के लिए जो सुन्दर भवन निर्मित हुए वह भवन 'मन्दिर' कहलाये। देवालय के निमित्त 'मन्दिर' शब्द गुप्त-काल के अनन्तर प्रचलित हुआ। अर्थशास्त्र, महाभारत एवं रामायण में मन्दिर के लिए देवायतन, देवकुल, देवगृह तथा देवालय आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। गुप्तकालीन साहित्य एवं लेखों में मन्दिर के लिए 'प्रासाद', 'देवायतन', 'देवकुल', 'देवगृह' एवं 'देवधाम' आदि शब्दों मिलते हैं। विक्रम-संवत् 529 (472-73 ई.) की मन्दसौर- प्रशस्ति में (जिसमें प्रथम कुमारगुप्त का उल्लेख मिलता है) दशपुर के सूर्य मन्दिर के लिए 'दीप्तरश्मि-प्रासाद' शब्द का उल्लेख हुआ है। हिंदू मन्दिर वास्तुकला कला के संश्लेषण, धर्म के आदर्शों, विश्वासों, मूल्यों और हिंदू धर्म के तहत पोषित जीवन के तरीके को दर्शाता है। मन्दिर तीर्थ तीर्थ के लिए एक जगह है। सभी ब्रह्मांडीय तत्व जो हिंदू देवताओं में जीवन का निर्माण और उत्सव मनाते हैं, एक हिंदू मन्दिर में मौजूद हैं- अग्नि से जल तक, प्रकृति की छवियों से लेकर देवताओं तक, स्त्री से पुरुष तक, काम से अर्थ तक, क्षणभंगुर से। पुरुष के लिए ध्वनि और धूप की गंध-शाश्वत शून्यता अभी तक सार्वभौमिकता एक हिंदू मन्दिर वास्तुकला का हिस्सा है। भारत एक धर्म प्रधान देश है, जो सनातन धर्म और अपने अद्भुत मंदिरों के लिए जाना जाता है। मन्दिरों में स्थापत्य तत्वों के रूप और अर्थ को उस स्थान के रूप में कार्य करने के लिए आकल्पित किया गया है जहाँ यह मनुष्य और परमात्मा के बीच की कड़ी है। आध्यात्मिक ज्ञान और सत्य की प्रगति में मदद करने के लिए, उसकी मुक्ति को मोक्ष कहते हैं। भारत में हिंदू मंदिरों के स्थापत्य सिद्धांतों का वर्णन शिल्प शास्त्रों और वास्तु शास्त्रों में किया गया है। हिंदू संस्कृति ने अपने मन्दिर निर्माताओं को सौंदर्य स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया है, और इसके वास्तुकारों ने कभी-कभी हिंदू जीवन शैली को व्यक्त करने के लिए मन्दिर निर्माण में अन्य परिपूर्ण ज्यामिति और गणितीय सिद्धांतों को अपनाकर रचनात्मक अभिव्यक्ति में काफी लचीलेपन का प्रयोग किया है। सदियों से यह मन्दिर भारतीय समाज के अभिन्न अंग बने हुए हैं और भारतीय धार्मिक जीवन का केंद्र है। मन्दिरों की भूमिका केवल मनुष्य के धार्मिक जीवन तक सीमित नहीं होती, वे देश के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत मे भी योगदान करते हैं। भारत मे कई ऐसे मन्दिर है जिनकी अद्भुत सुंदरता और कलात्मकता का कोई जवाब ही नहीं। यह मन्दिर सैकड़ो वर्ष पुराने है परन्तु इनकी भव्यता आज भी जीवित हैं। अनेक भारतीय प्राचीन ग्रंथों से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत में हिंदू मन्दिर वास्तुकला के कई घराने विकसित हुए थे। प्रत्येक घराने ने अपने स्वयं के गुरुकुल (अध्ययन केंद्र) और ग्रंथ विकसित किये। इनमें से दो सबसे प्रमुख विश्वकर्मा और दानवेन्द्र मय का घराना। मन्दिर शब्द की संस्कृत वाङ्मय में उपस्थित है। महाकाव्य और सूत्रग्रन्थों में मंदिर की अपेक्षा देवालय, देवायतन, देवकुल, देवगृह, देवस्थान आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। मन्दिर का सर्वप्रथम उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। अधिकांश प्रारंभिक ग्रंथों में मंदिर शब्द का निवास के अर्थ में प्रयोग किया गया है। वस्तुत: वैदिक युग में प्रकृति देवों की उपासना प्रमुख थी, जिसमें पूजन से अधिक यजन का विधान था। इसमें बल मूर्तिपूजा पर नहीं, यज्ञ पर था, इसलिए परंपरागत रूप से देवालय के रूप में मन्दिर बनने के स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिलते। कालांतर में महाकाव्य व पौराणिक युग में वैदिक देवता क्रमशः मूर्त होते गये और उनके साथ देवालय के रूप में मन्दिर बनने प्रारंभ हो गए। फिर तो उनकी अगणित श्रृंखला बनती गई, जो रूप बदलते हुए आज तक अनवरत विद्यमान है। मन्दिर शब्द संस्कृत का है, जो मूलतः मंद (मन्द धातु + किरच प्रत्यय) शब्द से बना माना जाता है। यह शब्द शिथिलन व विश्रांति का वाचक होने से मूलतः गृह के लिए प्रयुक्त होता था, जो कालांतर में अर्थांतरित होकर देवगृह के लिए रूढ़ हो गया। अनेक विचारक इसकी व्युत्पत्ति मन शब्द से निकालते हैं, जिसका आशय आध्यात्मिक मनन बताते हैं। पर यह बहुत व्याकरण सम्मत नहीं है। अन्य भाषाओं में मन्दिर के लिए अलग-अलग शब्द मिल जाते हैं। सामान्यत: तमिल भाषा में मन्दिर के लिए 'कोविल', कन्नड़ में 'देवस्थान' व 'गुडी', तेलुगू में 'आलयम्', मलयालम में 'क्षेत्रम्' शब्दों का प्रयोग होता है। मंदिरों का युग वास्तव में विश्वास व निष्ठा का युग था। उस समय शास्त्रीय ज्ञान की उच्चतम बौद्धिक लक्ष्य माना जाता था और व्यक्ति की योग्यता के मूल्यांकन के लिए निश्चित किये गये मानदंड बहुत ही श्रेष्ठ थे। अपनी प्रसिद्ध तथा मान्यता के इच्छुक विद्वानों के बीच, वाद-विवाद तथा विचार-विमर्श मंदिर के प्रांगण में ही हुआ करते थे। इस प्रकार इन मंदिरों में, विभिन्न प्रकार के मतों तथा दार्शनिक

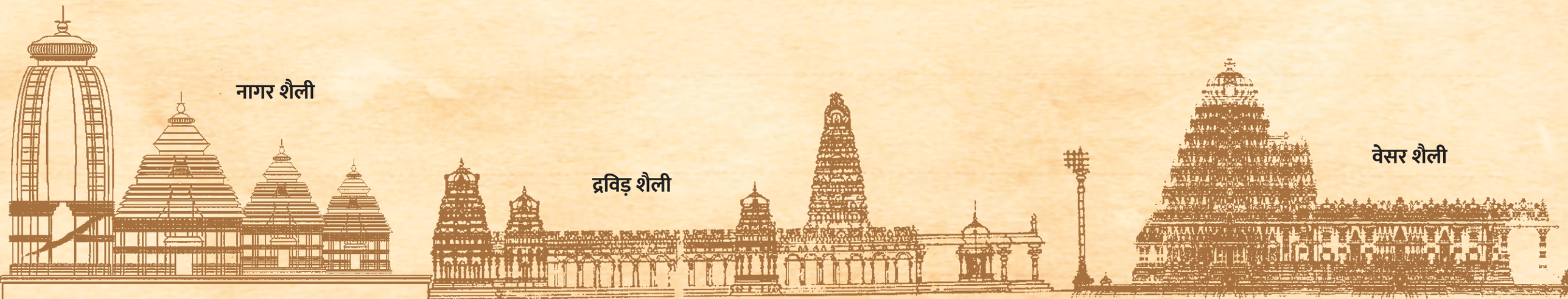

विचारधाराओं का प्रचार करने के लिए महत्वपूर्ण मंच मिल जाता था। मंदिरों के साथ विद्यालय अथवा पाठशालाएँ भी जुड़ी हुई थीं। उनमें विद्यार्थी पढ़ाई, लिखाई व गणित से लेकर धर्मशास्त्र, दर्शन तथा नीतिशास्त्र तक प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करते थे। भारतीय स्थापत्य कला व शिल्पशास्त्रों के अनुसार मंदिरों विशेषत: हिंदू मंदिरों की तीन मुख्य शैलियाँ हैं- नागर शैली मुख्यतः उत्तर भारतीय शैली, द्रविड़ शैली मुख्यत: दक्षिण भारतीय शैली वह बेसर शैली: नागर-द्रविड़ मिश्रित। मुख्यतः दक्षिण-पश्चिमी भारतीय शैली पर यह वर्गीकरण भी बहुत स्थूल है। समय व संस्कृति भेद के साथ इनमें भी अनेक भेद व मिश्रण हैं। इनके अतिरिक्त हिमालय में हिमाचल, उत्तराखंड में अपनी पहाड़ी शैली प्रमुख है, तो पूर्वोत्तर में बहुत अलग पूर्वोत्तरीय शैली। इसी प्रकार राजस्थान में अनेक मध्यकालीन मंदिरों में राजपूताना शैली का प्राचुर्य या मिश्रण है, तो आधुनिक काल में ग्रीक रोमन या यूरोपीय शैली का भी मिश्रण मिल जाता है। 'नागर' शब्द नगर से बना है। सर्वप्रथम नगर में निर्माण होने के कारण इन्हें नागर की संज्ञा प्रदान की गयी। नागर शैली की बहुलता मुख्यतः उत्तर व मध्य भारतीय परिक्षेत्र में है। नागर शैली का प्रसार हिमालय से लेकर विंध्य पर्वतमाला तक विशेषत: नर्मदा नदी के उत्तरी क्षेत्र तक देखा जा सकता है। यह कहीं-कहीं अपनी सीमाओं से आगे भी विस्तारित हो गयी है। वास्तुशास्त्र के अनुसार नागर शैली के मंदिरों की पहचान आधार से लेकर सर्वोच्च अंश तक इसका चतुष्कोण होना है। विकसित नागर मंदिरों में गर्भगृह, उसके समक्ष क्रमशः अन्तराल, मण्डप तथा अर्द्धमण्डप प्राप्त होते हैं। एक ही अक्ष पर एक दूसरे से संलग्न इन भागों का निर्माण किया जाता है। नागर वास्तुकला में वर्गाकार योजना के आरंभ होते ही दोनों कोनों पर कुछ उभरा हुआ भाग प्रकट हो जाता है जिसे अस्त' कहते हैं। इसमें मूर्ति के गर्भगृह के ऊपर पर्वत-श्रृंग जैसे शिखर की प्रधानता पायी जाती है। कहीं चौड़ी समतल छत के ऊपर उठती हुई शिखा सी भी दिख सकती है। माना जाता है कि यह शिखर कला उत्तर भारत में सातवीं शताब्दी के पश्चात् अधिक विकसित हुई. कई मंदिरों में शिखर के स्वरूप में ही गर्भगृह तक को समाहित कर लिया गया है। दक्षिण भारत के मंदिरों का वर्गीकरण स्थापत्य कला की दृष्टि से मुख्य रूप से द्रविड़ तथा चालुक्य शैलियों में किया जा सकता है। द्रविड़ शैली के मंदिर मुख्यत: तमिल भाषी क्षेत्र में हैं और चालुक्य शैली के मंदिर कन्नड़ भाषा क्षेत्र में। दक्षिण पश्चिम तथा सुदूर दक्षिण केरल में चालुक्य और द्रविड़ शैली का प्रभाव रहा। दक्षिण भारत में हजारों मंदिर हैं। उनमें से कुछ इतने प्राचीन और प्रतिष्ठित हैं कि वे तीर्थ स्थल बन गये हैं। उनमें सबसे पुराने 14वीं शताब्दी के स्मारक हैं। उनकी प्राचीनता तथा कलात्मक उत्कृष्टता के अलावा, एक रोचक तथा महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ये मंदिर दीर्घकालीन विकास प्रक्रिया से गुजरे हैं और दक्षिण भारत की तत्कालीन संस्कृति के साक्षी के रूप में विद्यमान हैं। इन मंदिरों की विशालता, मूर्तिकला, छत, मीनारें तथा चित्र वल्लरीयुक्त दीवारें और स्तम्भ शिल्प का उत्कृष्ट नमूना हैं। दक्षिण भारत के ये विशिष्ट मंदिर जो कि स्थापत्य कला की दृष्टि से पूर्ण दिखाई देते हैं शताब्दियों के विकास तथा क्रम-विकास की देन हैं। यह इमारतों का एक मिश्रित समूह होता था जिनमें से कुछ ही वृत्तिमूलक उपयोगिता थी जबकि कुछ दूसरों का स्थापत्य तथा आलंकारिक महत्व तो था परन्तु उससे अधिक उनकी और कोई उपयोगिता नहीं थी। मंदिर की विभिन्न इमारतों को क्रम से मुख्य पूजागृह के साथ जोड़ दिया जाता था। ये इमारतें प्राय: अव्यवस्थित रूप में होती थीं और स्थापत्य कला की दृष्टि से उनका अधिक महत्व नहीं होता था। परन्तु वे परिष्कृत व विस्तृत धार्मिक अनुष्ठान की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोगी होती थीं और उत्सव के अवसर पर तो उनकी आवश्यकता और भी अधिक हो जाती थी। भक्तों के लिए स्वयं मंदिर ही "देवताओं" के आवास स्थान-"देव- स्थानम्" होने के नाते उपासना व आराधना की वस्तु थे। अत: उनके लिए केवल विशाल तथा भव्य होना ही पर्याप्त नहीं था, बल्कि यह भी आवश्यक था कि उनमें सौंदर्य तथा स्थायित्व भी हो। आरम्भ में मंदिर की स्थापत्यकला का विकास उपासना के एक साधारण आडम्बर रहित देव मंदिर के रूप में हुआ पर भक्तों की बढ़ती हुई भावात्मक अभिलाषा की पूर्ति के लिए उसने इमारतों के समूह का रूप धारण कर लिया है। पूर्णरूप से विकसित स्थापत्य कला वाले भवन में गर्भगृह, प्रकोष्ठ (अन्तरालय), मंडपम, गर्भगृह के ऊपर बुर्ज (शिखर), मठ अथवा आयताकार कक्ष, भव्य गोपुरम् अथवा द्वारों पर गुम्बज, असंख्य आले, मंडप तथा गुफा होती थी। ये सब ऐसे विकसित रूप हैं जो प्राचीन मंदिरों का आकल्पन बनाने वाले लोगों की कल्पना से बाहर थे। प्राय: मंदिर के अहाते ही सार्वजनिक आमोद-प्रमोद व मनोरंजन के एकमात्र स्थान होते थे। कुश्तियों की प्रतियोगिताएँ संगीत तथा नृत्य के कार्यक्रम मंदिर के उत्सव के विशेष अवसरों में जान डाल कर उन्हें रोचक बना देते थे। धनी तथा निर्धन सभी वर्गों के लोगों को आमोद-प्रमोद के इन कार्यकमों का आनन्द लेने का समान अवसर मिलता था। मंदिर के आनन्दोत्सव के दौरान मंदिरों के साथ लगे विश्राम-गृहों में यात्रियों के लिए आवास तथा भोजन की निःशुल्क व्यवस्था की जाती थी। मंदिरों के साथ विद्यालय अथवा पाठशालाएँ भी जुड़ी हुई थी। उनमें विद्यार्थी पढ़ाई, लिखाई व गणित से लेकर धर्मशास्त्र, दर्शन तथा नीतिशास्त्र तक प्रत्येक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करते थे। धर्मार्थ चिकित्सालय प्राय: मंदिर के प्रांगण में स्थित होते थे। नगर के मामलों अथवा वैयक्तिक विवादों का निर्णय करने के लिए स्थानीय सभा अभवा पंचायत की बैठकें मंदिर में ही होती थीं। ऐसा माना जाता था कि यदि चुनाव अथवा लोगों के विवादों की सुनवाई देवताओं के समक्ष मंदिर में होगी तो उनमें सच्चाई तथा ईमानदारी रहेगी। मन्दिरों की वास्तुकला स्थानिक रूप में केवल इस बात को अभिव्यक्त करती थी कि उस समय निर्माताओं की "जीवन की मोक्ष" के प्रति कितनी प्रबल इच्छा थी। जिस देवता के नाम-पर वह समर्पित होता था वह "विश्व नियंता के सर्वोच्च सिद्धान्त" का प्रतीक होता था और आत्मिक प्रवृत्ति को दिशा प्रदान करता था। इस कारण मन्दिर सब प्रकार के नागरिक तथा सामाजिक जीवन का केन्द्र बन गये थे। अपनी इमारत की स्थिति तथा आकार के कारण मन्दिर का आसपास के क्षेत्र में बहुत प्रमुख स्थान था। उसकी मजबूती तथा आकार उन अन्य संस्थाओं को स्थायित्व का भाव प्रदान करते थे जिनका मुख्य कार्य, मंदिर के कार्य के समान ही परम्परागत मूल्यों की रक्षा करना था। चूँकि मंदिर सब क्रिया-कलापों का केन्द्र होता था, अत: ग्राम तथा नगर उसके आसपास ही बस जाते थे। मंदिर का प्रभाव विशुद्ध धार्मिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्रों के अलावा अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ा और अपने प्रभाव के कारण वह ग्राम की अर्थव्यवस्था का भी एक महत्वूपर्ण कारक बन गया। जहाँ ऐतिहासिक रूप से भारतीय संस्कृति का प्रभाव रहा है, जिसे वृहत्तर भारत कहा जाता है, दक्षिण-पूर्व एशिया तक फैला हुआ था। इसमें दक्षिणपूर्व एशिया के भारतीयकृत राज्य मुख्य रूप से शामिल है जिनमें पाचवीं से पन्द्रहवीं सदी तक हिन्दू धर्म का प्रसार हुआ था। म्यांमार, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया, लाओस और वियतनाम आदि देशों में हिन्दू मंदिरों का निर्माण हुआ था। दक्षिण-पूर्व एशिया में हिन्दू मंदिरों ने अपने स्वयं के विशिष्ट संस्करण विकसित किये, जो ज्यादातर भारतीय वास्तुशिल्प उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय दोनों शैलियों पर आधारित थे। दक्षिण पूर्व एशियाई हिन्दू मंदिर वास्तुकला का उल्लेखनीय उदाहरण प्रंबानन का त्रिमूर्ति मंदिर परिसर जावा, (इंडोनेशिया) और अंगकोरवाट (कंबोडिया) है।

आज भी अंकोर क्षेत्र में लगभग एक हजार छोटे-बड़े मंदिर हैं। यह सारे मंदिर भारतीय हिंदू सनातन परंपरा के यश और कीर्ति की गाथा गा रहे हैं जो हमें यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि कभी यहाँ पर आर्य हिंदू संस्कृति का बहुत ही व्यापक रूप से प्रसार था। वेदों की ऋचाएँ यहाँ पर गूँजा करती थीं। दक्षिण पूर्वी एशिया के यह प्राचीन भारतीय स्थापत्य भारतीय सनातन संस्कृति के महान अंश कहे जा सकते हैं।

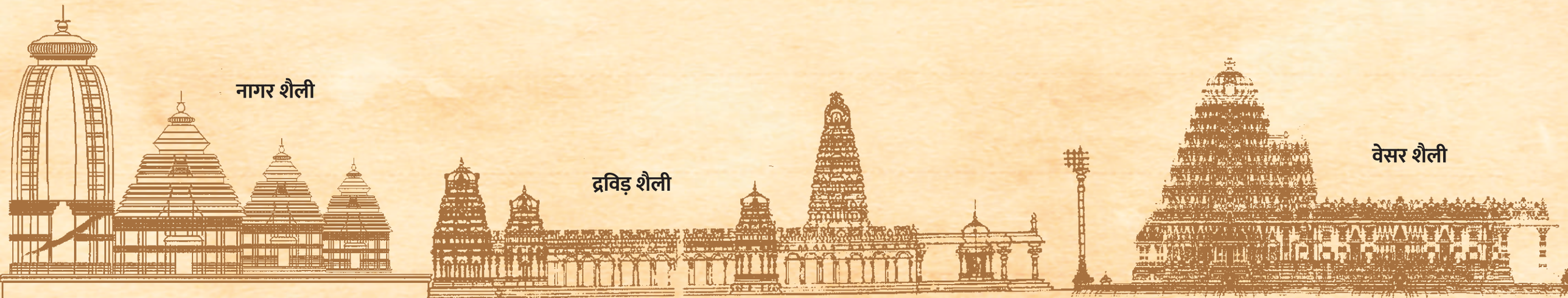



सूर्य मंदिर
कोणार्क (ओडिशा)

विक्रम पंचांग

बसंत ऋतु
चैत्र शुक्ल पक्ष
22 मार्च से 06 अप्रैल 2023 तक



सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०
'नल' नाम संवत्सर
• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४
राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

बसंत ऋतु
वैशाख कृष्ण पक्ष
07 अप्रैल से 20 अप्रैल 2023 तक

	कृतिका १४/०१ **26 मार्च** पंचमी — श्रीराम राज्योत्सव, श्री लक्ष्मी पंचमी, नाग पंचमी	मघा दिन/रात **02 अप्रैल** द्वादशी	**रविवार**		विशा २९/१९ **09 अप्रैल** तृतीया	शत १८/०० **16 अप्रैल** एकादशी — श्री वल्लभाचार्य जयंती, वरूथिनी एकादशी (खरबूजा)
	रोहिणी १५/२७ **27 मार्च** षष्ठी — स्कन्धषष्ठी, यमुना जयंती	मघा ०७/२४ **03 अप्रैल** द्वादशी — सोम प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी	**सोमवार**		अनुराधा २८/०० **10 अप्रैल** चतुर्थी — श्री संकष्टी चतुर्थी, चन्द्रोदय ०९/४०	पू.भा. १७/३९ **17 अप्रैल** द्वादशी — संत सेन जयंती
	मृगशिर १७/३१ **28 मार्च** सप्तमी	पू.फा.०९/३५ **04 अप्रैल** त्रयोदशी — श्री महावीर जयंती	**मंगलवार**		ज्येष्ठा २९/१९ **11 अप्रैल** पंचमी — गुरू तेगबहादुर जयंती	उ.भा. १८/०४ **18 अप्रैल** त्रयोदशी — प्रदोष व्रत
उभा ११/०९ **22 मार्च** प्रतिपदा — नवसंवत्सर प्रा., गुडी पड़वा, झूलेलाल ज., ज्योतिष दिवस, चैत्र नवरात्र प्रारम्भ, डॉ. हेडगेवार जयन्ती	आर्द्रा २०/०६ **29 मार्च** अष्टमी — दुर्गा अष्टमी, महाष्टमी	उफा ११/२२ **05 अप्रैल** चतुर्दशी — श्री शिवदमनोत्सव, श्री सत्यनारायण व्रत	**बुधवार**		मूल २४/३९ **12 अप्रैल** षष्ठी — वैतालषष्ठी, विश्व पृथ्वी दिवस	रेवती १८/२९ **19 अप्रैल** चतुर्दशी — मास शिवरात्री, विश्व नृत्य दिवस
रेवती १४/०९ **23 मार्च** द्वितीया — झूलेलाल उत्सव	पुनर्वसु २२/५८ **30 मार्च** नवमी — श्री राम नवमी, चैत्र नवरात्र पूर्ण	हस्त १२/४२ **06 अप्रैल** पूर्णिमा — चैत्री पूर्णिमा, श्री हनुमान जी प्राकट्योत्सव (हनुमान जयंती)	**गुरुवार**		पू.षा. २२/२९ **13 अप्रैल** सप्तमी — जलियावाला बाग दिवस, कालाष्टमी, शीतलाष्टमी	अश्वि १३/१७ **20 अप्रैल** अमावस्या — पंचकोषी यात्रा पूर्ण, शनिचरी अमावस्या
अश्वि १३/१७ **24 मार्च** तृतीया — मत्स्यजयंती, गणगौर तीज, गौरी मनोरथ तृतीया	पुष्य २५/५७ **31 मार्च** दशमी		**शुक्रवार**	चित्रा ०७/२९ **07 अप्रैल** प्रतिपदा — विश्व स्वास्थ्य दिवस	उ.षा. १४/२० **14 अप्रैल** अष्टमी — डा. अम्बेडकर जयंती	
भरणी १३/२० **25 मार्च** चतुर्थी — श्री विनायक चतुर्थी	श्लेषा २८/४९ **01 अप्रैल** एकादशी — कामदा एकदशी व्रत (लोंग)		**शनिवार**	स्व ०६/२९ **08 अप्रैल** द्वितीया	श्रवण २०/०० धनिष्ठा १८/३९ **15 अप्रैल** नवमी दशमी — बंगला नववर्ष, पंचकोषी यात्रा प्रारम्भ (अवन्तिका)	

सूर्य मंदिर कोणार्क (ओडिशा)

भारत के पूर्वी तट पर स्थित उड़ीसा का कोणार्क सूर्य मन्दिर, भारतीय मन्दिर वास्तुकला और कला के उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक है। जो इसकी अवधारणा, पैमाने और अनुपात में मूर्तिकला अलंकरण की उदात्त कथा शक्ति में प्रकट होता है। यह उड़ीसा की तेरहवीं शताब्दी के शासन का एक उत्कृष्ट प्रमाण और देवत्व के एकीकरण का एक स्मारकीय उदाहरण है, जो सूर्य पंथ के प्रसार के इतिहास में एक अमूल्य कड़ी का निर्माण करता है। यह सूर्य मंदिर कलिंग के मंदिर वास्तुकला की पराकाष्ठा है, जिसके सभी पारिभाषिक तत्व पूर्ण और परिपूर्ण रूप में हैं। संकल्पना और प्रस्तुति दोनों में रचनात्मक प्रतिभा की एक उत्कृष्ट कृति, कोणार्क का सूर्य मंदिर सूर्य देव के रथ का प्रतिनिधित्व करता है। यह समकालीन जीवन और गतिविधियों के परिष्कृत और प्रतीकात्मक चित्रण के साथ अलंकृत है। सूर्य को समर्पित कोणार्क मन्दिर के निर्माण का श्रेय पूर्वी गंगवंश के राजा प्रथम नरसिंह देव को दिया जाता है। तेरहवीं शताब्दी में निर्मित यह मन्दिर उड़िसा के समुद्र तट पर स्थित है। सूर्य जिन्हें स्थानीय लोग 'बिरंचि-नारायण' कहते थे। इसी कारण इस क्षेत्र को उसे अर्क-क्षेत्र (अर्क=सूर्य) या पद्म-क्षेत्र कहा जाता था। कोणार्क शब्द, 'कोण' और 'अर्क' शब्दों के मेल से बना है। अर्क का अर्थ होता है सूर्य, जबकि कोण से अभिप्राय कोने या किनारे से रहा होगा। प्रस्तुत कोणार्क सूर्य-मन्दिर का निर्माण लाल रंग के बलुआ पत्थरों तथा काले ग्रेनाइट के पत्थरों से हुआ है। इसके उत्तर और दक्षिण की ओर चौबीस नक्काशीदार पहिए हैं, जिनमें से प्रत्येक का व्यास लगभग तीन मीटर है साथ ही प्रतीकात्मक रूपांकनों में ऋतुओं और महीनों का चक्र भी उल्लेखित है। यह मंदिर - रथ की ऐद्रजालिक संरचना को पूर्ण करत हैं। पहियों के मंदिर का तलघर पूर्ण रूप से शानदार सिंहों संगीतकारों और नर्तक समूहों की नक्काशी के साथ अलंकृत किया गया है। कई भारतीय मंदिरों की तरह, सूर्य मंदिर में कई विशिष्ट और सुव्यवस्थित स्थानिक खंड शामिल हैं। कलिंग शैली में निर्मित सम्पूर्ण मन्दिर स्थल को बारह जोड़ी चक्रों के साथ सात घोड़ों से खींचते हुये निर्मित किया गया है, जिसमें सूर्य देव को विराजमान दिखाया गया है। मन्दिर के आधार को सुन्दरता प्रदान करते ये बारह चक्र साल के बारह महीनों को परिभाषित करते हैं तथा प्रत्येक चक्र आठ अरों से मिल कर बना है, जो आठ दिन और दिन के आठ पहरों को दर्शाते हैं।

पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब को उनके श्राप से कोढ़ रोग हो गया था। साम्ब ने मित्रवन में चंद्रभागा नदी के सागर संगम पर कोणार्क में, बारह वर्षों तक तपस्या की और सूर्य देव को प्रसन्न किया था। सूर्यदेव ने, जो सभी रोगों के नाशक थे, ने इसके रोग का भी निवारण कर दिया था। तदनुसार साम्ब ने सूर्य भगवान का एक मन्दिर निर्माण का निश्चय किया। अपने रोग-नाश के उपरांत, चंद्रभागा नदी में स्नान करते हुए, उसे सूर्यदेव की एक मूर्ति मिली। यह मूर्ति सूर्यदेव के शरीर के ही भाग से, देवशिल्पी विश्वकर्मा ने बनायी थी। साम्ब ने अपने बनवाये मित्रवन में एक मन्दिर में, इस मूर्ति को स्थापित किया, तब से यह स्थान पवित्र माना जाने लगा। मुख्य मन्दिर तीन मंडपों में बना है। इनमें से दो मण्डप ढह चुके हैं। तीसरे मण्डप में जहाँ मूर्ति थी,उसको रेत व पत्थर भरवा कर सभी द्वारों को स्थायी रूप से बंद करवा दिया था ताकि वह मन्दिर और क्षतिग्रस्त ना हो पाए। इस मन्दिर में सूर्य भगवान की तीन प्रतिमायें हैं: बाल्यावस्था-उदित सूर्य,

युवावस्था-मध्याह्न सूर्य, प्रौढ़ावस्था-अपराह्न सूर्य। इसके प्रवेश पर दो सिंह हाथियों पर आक्रामक होते हुए रक्षा में तत्पर दिखाये गये हैं। दोनों हाथी, एक-एक मानव के ऊपर स्थापित हैं। ये प्रतिमाएं एक ही पत्थर की बनीं हैं। मंदिर के दक्षिणी भाग में दो सुसज्जित घोड़े बने हैं, जिन्हें उड़ीसा सरकार ने अपने राजचिह्न के रूप में अंगीकार कर लिया है। मंदिर सूर्य देव की भव्य यात्रा को दिखाता है। इसके के प्रवेश द्वार पर ही नट मंदिर है। ये वह स्थान है, जहाँ मंदिर की नर्तकियाँ, सूर्यदेव को अर्पण करने के लिये नृत्य किया करती थीं। यह मंदिर भारत के उत्कृष्ट स्मारक स्थलों में से एक है। यहाँ के स्थापत्य अनुपात दोषों से रहित एवं आयाम आश्चर्यचकित करने वाले हैं। यहां की स्थापत्यकला वैभव एवं मानवीय निष्ठा का सौहार्दपूर्ण संगम है। मंदिर की प्रत्येक इंच, अद्वितीय सुंदरता और शोभा की शिल्पाकृतियों से परिपूर्ण है। इसके विषय भी मोहक हैं, जो सहस्रों शिल्प आकृतियां भगवानों, देवताओं, गंधर्वों, मानवों, वाद्यकों, प्रेमी युगलों, दरबार की छवियों, शिकार एवं युद्ध के चित्रों से भरी हैं। इनके बीच बीच में पशु-पक्षियों (लगभग दो हज़ार हाथी, केवल मुख्य मंदिर के आधार की पट्टी पर भ्रमण करते हुए) और पौराणिक जीवों, के अलावा महीन और पेचीदा बेल बूटे तथा ज्यामितीय नमूने अलंकृत हैं। उड़िया शिल्पकला की उत्कृष्त गुणवत्ता पूरे परिसर में अलग दिखाई देती है।

यह मन्दिर पूर्व-पश्चिम दिशा में निर्मित है। नागर शैली में निर्मित इन मंदिरों की ऊँचाई अत्यंत विशाल होती है। वस्तुतः, यह तत्व उड़िया स्थापत्य कला के विशिष्ट लक्षणों में से एक है। उड़ीसा में इस शैली में निर्मित प्रमुख मंदिर १०वीं शताब्दी से १२वीं शताब्दी के अंतराल में गंग वंश के शासनकाल में निर्मित किये गये थे। कोणार्क शिखर-मन्दिर शैली में रथ के रूप में बनाया गया है। मुख्य मन्दिर 'विमान' में जो पीछे की ओर सबसे ऊँचा होता है और जिसे 'बड़देवल' भी कहते हैं, देवता की मूर्ति स्थापित की जाती है। 'बड़देवल' के सामने दूसरा कक्ष रहता है, जिसे 'जगमोहन' कहते हैं, यक्षों के बैठने के लिये यह स्थान रहा करता है। शिल्पशास्त्रों में उत्तरी देवालयों के लिए प्रासाद' एवं दक्षिण व पूर्व के देवालयों के लिए 'विमान' शब्द का उल्लेख मिलता है। देवालय के लिए 'विमान' शब्द का प्रचलन शास्त्रीय वर्णनों से ही स्पष्ट है। उदाहरणार्थ- समरांगणसूत्रधार के अनुसार देवता विमान (रथ) में बैठकर अन्तरिक्ष में विचरण करते हैं। यही कारण है कि दक्षिण भारत में मन्दिरों को अब भी 'विमान' कहा जाता है। अमरकोश के अनुसार 'रथ' शब्द 'विमान' का पर्यायवाचक है। यह मन्दिर छोटे-छोटे प्रस्तर-खंडों से नहीं बनाया गया है, वरन् उसकी रचना विशाल शिलाओं द्वारा हुई है। मन्दिर के आस पास दूर दूर तक कहीं कोई पहाड़ भी नहीं है। सहज ही प्रश्न उठता है कि ये विशाल शिलाएँ कहाँ से और किस प्रकार लायी गयी होंगी। किस उपाय से एक के ऊपर एक ठेठ ऊँचाई तक चढ़ाई गयी होंगी। मन्दिर का विशालकाय रूप और कला-कृत्तियों का सौन्दर्य देखकर दर्शक चकित रह जाता है। कलिंग नागर शैली में निर्मित मंदिरों के दो प्रमुख तत्व होते हैं, गर्भगृह एवं मंडप जो एक ही अक्ष अथवा धुरी पर स्थापित होते हैं। अलंकारिक आवश्यकताओं के अनुसार इन दो तत्वों का पुनर्विभाजन भी देखा गया है। कालान्तर में इस शैली में अन्य मंडपों का भी समावेश किया गया, जैसे भोग अर्पण करने के लिए भोग देउल, नृत्य प्रदर्शनों के लिए नाट्य देउल इत्यादि। एक कथा के अनुसार, गंग वंश के राजा नृसिंह देव प्रथम ने अपने वंश का वर्चस्व सिद्ध करने हेतु, राजसी घोषणा से मंदिर निर्माण का आदेश दिया। निर्माण स्थल में निर्माण योग्य पत्थरों का अभाव था। इसलिए सम्भवतया निर्माण सामग्री नदी मार्ग से यहाँ पर लाई गयी। इसे मन्दिर के निकट ही तराशा गया। पत्थरों को स्थिरता प्रदान करने के लिए जंगरहित लोहे के क़ब्जों का प्रयोग किया गया। इसमें पत्थरों को इस प्रकार से तराशा गया कि वे इस प्रकार से बैठें कि जोड़ों का पता न चले। कहा जाता है कि कोणार्क के वास्तुकार और महाशिल्पी विशु ने इस मन्दिर निर्माण कार्य हेतु अपने जन्मस्थान को छोड़ दिया था। कार्य के प्रति समर्पण के कारण ही इस निर्माण कार्य के दौरान वह अपने पुत्र के जन्म के समय अपने घर से दूर था। बाद में यही पुत्र अपने पिता के इस परियोजना के साथ संलग्न हो गया और अपने पिता का अपूर्ण कार्य पूर्ण किया। बारह सौ वास्तुकारों और कारीगरों की सेना ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा और ऊर्जा से परिपूर्ण कला से बारह वर्षों की अथक मेहनत से इसका निर्माण किया। राजा ने पहले ही अपने राज्य के बारह वर्षों की कर-प्राप्ति के बराबर धन व्यय कर दिया था। लेकिन निर्माण की पूर्णता कहीं दिखायी नहीं दे रही थी। तब राजा ने एक निश्चित तिथि तक कार्य पूर्ण करने का कड़ा आदेश दिया। महाशिल्पी विशु महाराणा के नेतृत्व में इस पूर्व वास्तुकारों के समूह ने पहले ही अपना पूरा कौशल लगा रखा था। इसके उपरांत महाशिल्पी विशु का बारह वर्षीय पुत्र, धर्मपद आगे आया। उसने तब तक के निर्माण का गहन निरीक्षण किया, हालांकि उसे मन्दिर निर्माण का व्यवहारिक ज्ञान नहीं था, परन्तु उसने मंदिर स्थापत्य के शास्त्रों का पूर्ण अध्ययन किया हुआ था। उसने मंदिर के अंतिम केन्द्रीय शिला को लगाने की समस्या सुझाव का प्रस्ताव दिया। उसने यह करके सबको आश्चर्य में डाल दिया। मुख्य मन्दिर की संरचना को लेकर अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि जहाँ पर मुख्य मन्दिर था, उसके गर्भगृह में सूर्यदेव की मूर्ति ऊपर व नीचे चुम्बकीय प्रभाव के कारण हवा में दोलित होती थी। प्रात: सूर्य की किरणें रंगशाला से होते हुए वर्तमान में मौजूद जगमोहन से होते हुए कुछ देर के लिए गर्भगृह में स्थित मूर्ति पर पड़ती थीं। समुद्र का तट उस समय मन्दिर के समीप ही था, जहाँ बड़ी नौकाओं का आवागमन होता रहता था। अक्सर चुम्बकीय प्रभाव के कारण नौकाओं के दिशा मापक यन्त्र दिशा का ज्ञान नहीं करा पाते थे। इसलिए इन चुम्बकों को हटा दिया गया और मन्दिर अस्थिर होने से ध्वस्त हो गया। इसकी ख्याति उत्तर में जब मुग़लों तक पहुँची तो उन्होंने इसे नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इसी कोणार्क के मन्दिर शिल्प को देखकर कविवर 'रवीन्द्रनाथ टैगोर 'ने कहा था कि "कोणार्क के पाषाण की भाषा मनुष्य की भाषा से श्रेष्ठतर है।"

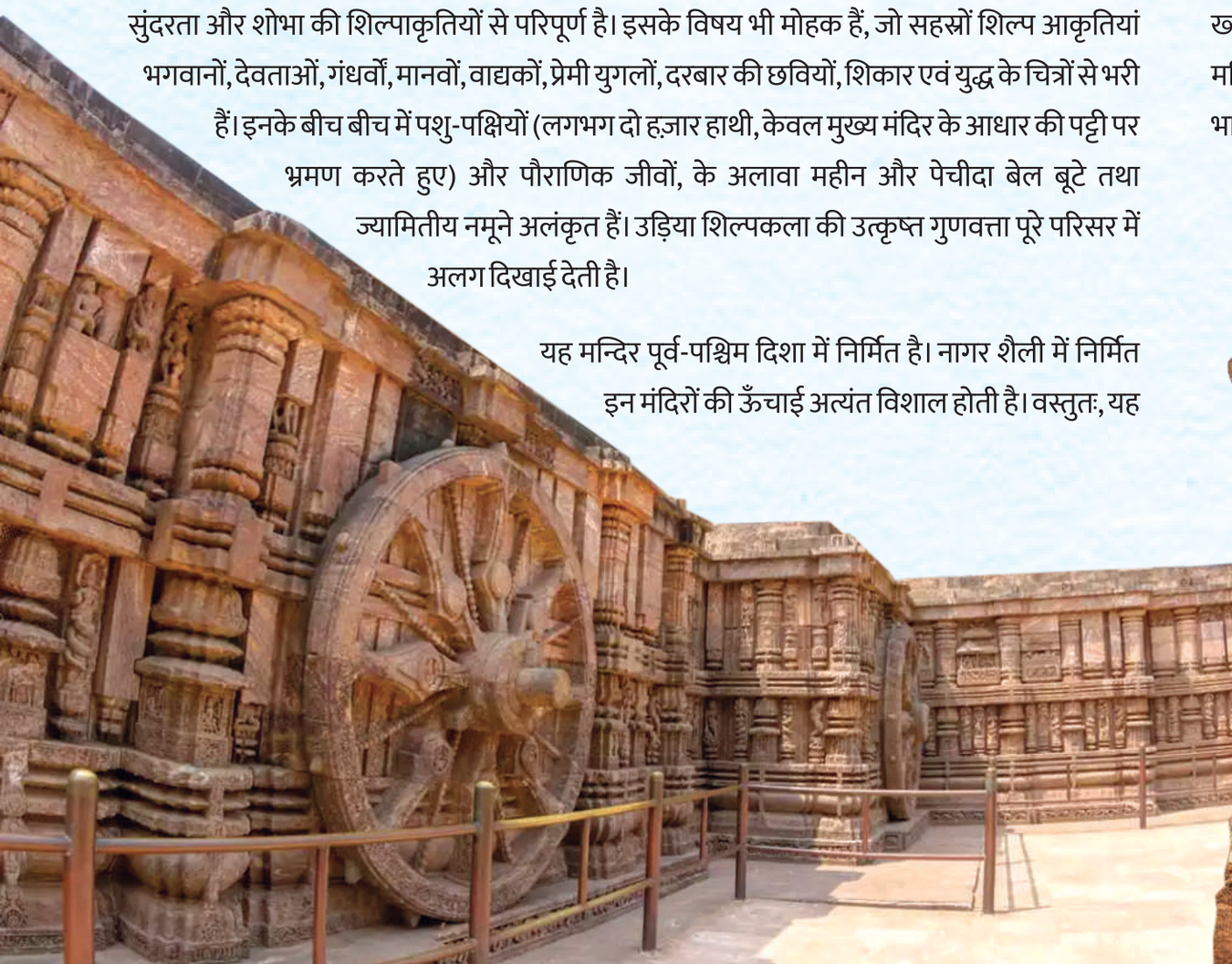





विक्रम पंचांग



सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०
'नल' नाम संवत्सर

• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४
राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

ग्रीष्म ऋतु
वैशाख शुक्ल पक्ष
21 अप्रैल से 05 मई 2023 तक

ग्रीष्म ऋतु
ज्यैष्ठ कृष्ण पक्ष
06 मई से 19 मई 2023 तक

	रोहिणी २१/२० **23 अप्रैल** तृतीया श्री विनायक चतुर्थी व्रत	मघा १२/४९ **30 अप्रैल** दशमी	**रविवार**		अनुराधा २२/२० **07 मई** द्वितीया देवर्षि नारद जयंती	शत १०/१५ **14 मई** दशमी
	मृगशिर २८/३९ **24 अप्रैल** चतुर्थी	पू.फा. १४/०० **01 मई** एकादशी श्रमिक दिवस मोहिनी एकदशी व्रत (गोमुत्र)	**सोमवार**		ज्येष्ठा १९/०९ **08 मई** तृतीया श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय ०९/०९	पू.भा. ०९/०७ **15 मई** एकादशी केवट जयंती अपरा एकादशी व्रत (ककड़ी) भद्रकाली एकादशी
	आर्द्रा २९/२९ **25 अप्रैल** पंचमी श्री आद्यशंकराचार्य जयंती संत सूरदास जयंती	उ.फा. १४/१३ **02 मई** द्वादशी	**मंगलवार**		मूल १७/४५ **09 मई** चतुर्थी गुरु रविन्द्रनाथ ठाकुर जयंती	उ.भा. ०८/१४ **16 मई** द्वादशी प्रदोष व्रत
	पुनर्वसु दिन/रात **26 अप्रैल** षष्ठी श्रीरामानुजाचार्य जंयती	हस्त १६/०० **03 मई** त्रयोदशी प्रेस स्वतंत्रता दिवस प्रदोषव्रत	**बुधवार**		पू.षा. १६/१२ **10 मई** पंचमी	रेवती ०७/३८ **17 मई** त्रयोदशी मासशिवरात्री व्रत
	पुनर्वसु ०८/२९ **27 अप्रैल** सप्तमी गंगा जयंती, गंगोत्पत्ति भ. चित्रगुप्त प्राकट्योत्सव	चित्रा २५/५८ **04 मई** चतुर्दशी गुरु अमरदास जयंती भागवान श्री नृसिंह प्राकट्योत्सव	**गुरुवार**		उ.षा. १४/३८ **11 मई** षष्ठी संत तारण तरण जयंती	अश्वि ०७/२२ **18 मई** चतुर्दशी
भरणी २१/०० **21 अप्रैल** प्रतिपदा नवीन चन्द्रदर्शन	पुष्य ११/३९ **28 अप्रैल** अष्टमी दुर्गाष्टमी, श्री हरि जयंती	स्वाती १५/०९ **05 मई** पूर्णिमा छिन्नमस्तका जयंती	**शुक्रवार**		श्रवण १३/०४ **12 मई** सप्तमी कालाष्टमी त्रिलोकीनाथ अष्टमी	भरणी ०७/२९ **19 मई** अमावस्या शनेश्चर जयंती (शनि जयंती) सोमवती अमावस्या
कृतिका २२/४० **22 अप्रैल** द्वितीया श्री शिवाजी जयंती श्री परशुराम जयंती, श्री अक्षय तृतीया	श्लेषा ११/१९ **29 अप्रैल** नवमी सीता नवमी, जानकी जयंती		**शनिवार**	विशाखा २१/१२ **06 मई** प्रतिपदा विश्व दूरसंचार दिवस	धनिष्ठा ११/३५ **13 मई** अष्टमी नवमी	

कैलाशनाथ मंदिर (वेरूल) एलोरा

द्रविड़ शैली में निर्मित और अपने में अद्वितीय वेरुल (एलोरा) का कैलाशनाथ मन्दिर एक पहाड़ को तराशकर मन्दिर रूप में रचा हुआ एक ऐसा अद्भुत शिल्प है जिसको देखकर लगता है कि ये इस दुनिया का नहीं है! कहा जाता है कि इसको तैयार करने में क़रीब एक सौ पचास वर्ष लगे और लगभग सात हजार मज़दूरों ने लगातार इस पर काम किया। भगवान शिव का निवास माने जाने वाले कैलाश पर्वत के आकार की तरह ही इस मन्दिर का निर्माण किया गया है। 276 फुट लंबे और 154 फुट चौड़े इस मंदिर को एक ही चट्टान को तराशकर बनाया गया है। इस चट्टान आमतौर पर पत्थर से बनने वाले मन्दिरों को सामने की ओर से तराशा जाता है, लेकिन 90 फुट ऊँचे कैलाश मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसे ऊपर से नीचे की तरफ तराशा गया है। इस विशाल और अद्वितीय मन्दिर का निर्माण राष्ट्रकूट शासक नरेश कृष्ण प्रथम ने (757-783 ई.विक्रमी 814-840) ने करवाया था। इस मन्दिर के निर्माण को लेकर यह मान्यता है कि राजा कृष्ण प्रथम एक बार गंभीर रूप से बीमार हुए तब राजा कृष्ण प्रथम की पत्नी ने राजा के स्वस्थ होने के लिए भगवान शिव से प्रार्थना की और यह प्रण लिया कि राजा के स्वस्थ होने पर वह शिव मंदिर का निर्माण करवाएँगी और जब तक मन्दिर पूर्ण रूप से नहीं बन जायेगा तब तक वे व्रत धारण करेंगी। राजा जब स्वस्थ हुए तो इस मन्दिर के निर्माण का कार्य प्रारंभ किया गया लेकिन रानी को यह बताया गया कि मन्दिर के निर्माण में बहुत अधिक समय लगेगा ऐसे में महारानी के लिए व्रत रख पाना मुश्किल था अपने इस समस्या के समाधान के लिए राजा की पत्नी ने भगवान शिव से सहायता माँगी कहा जाता है कि इसके बाद उन्हें भूमिअस्त्र प्राप्त हुआ कहा जाता है कि इसी अस्त्र के कारण इस कैलाशनाथ मन्दिर का निर्माण इतने कम समय में संभव हो पाया। मन्दिर निर्माण का कार्य पूर्ण होने के बाद इस भूमिअस्त्र को भूमि के नीचे छुपा दिया गया। पुरातत्वविद यह अनुमान लगाते हैं कि जिस तरह से कैलाश नाथ मन्दिर का निर्माण किया गया है इस मंदिर के निर्माण में कम से कम 100 से 150 वर्षों का समय लगना चाहिए लेकिन इतिहास की माने तो इस मंदिर का निर्माणकार्य मात्र 18 वर्षों पूरा किया गया यही कारण है कि कुछ लोग यह मानते है कि बिना दिव्य शक्ति की सहायता की इस मंदिर का निर्माण इतने कम समय में करना असंभव था। कैलाशनाथ मंदिर के निर्माण को लेकर इन सभी मान्यताओं के बावजूद इस मंदिर के निर्माण का श्रेय राष्ट्रकूट वंश के शासक राजा कृष्ण प्रथम को ही दिया जाता है क्योंकि उन्होंने ही इस मंदिर का अधिकांश भाग निर्मित करवाया था और इस मंदिर को वर्तमान रूप देने में सबसे बड़ी भूमिका निभाई थी। विशेषज्ञों का अनुमान है, कि कैलाश के इस विशाल परिवेश में एथेंस का प्रसिद्ध मंदिर 'पार्थेनन' इसके आयाम में समूचा समा सकता है और इसकी ऊँचाई पार्थेनन से कम से कम ड्योढ़ी है। विभिन्न पौराणिक पात्रों और प्रसंगों को बहुत ही मनोयोग से कैलाश मन्दिर के परिवेश में शिल्पियों ने रचा है। कैलाश के भैरव की मूर्ति जितनी भयकारक है, पार्वती की उतनी ही स्नेहशील है और तांडव का वेग तो ऐसा है, जैसा पत्थर में अन्यत्र उपलब्ध नहीं। शिव-पार्वती का परिणय भावी सुख की मर्यादा बाँधता है, जैसे रावण का कैलाशत्तोलन पौरुष को मूर्तिमान कर देता है। उसकी भुजाएँ फैलकर कैलाश के तल को जैसे पघेर लेती हैं और इतने जोर से हिलाती हैं कि उसकी चूलें ढीली हो जाती हैं और उमा के साथ ही कैलाश के अन्य जीव भी संत्रस्त हो काँप उठते हैं। फिर शिव पैर के अँगूठे से पर्वत को हल्के से दबाकर रावण के गर्व को चूर-चूर कर देते हैं। कालिदास ने कुमारसंभव में जो रावण के इस प्रयत्न से कैलाश की संधियों के बिखर जाने की बात कही है, वह इस दृश्य में सर्वथा कलाकारों ने प्रस्तुत कर दी है। यह इस मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण मूर्ति शिल्प है जिसमें रावण को कैलाश पर्वत को हिलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति शिल्प को भारतीय कला के श्रेष्ठ शिल्पों में से एक माना जाता है। एलोरा का वैभव भारतीय मूर्तिकला की मूर्धन्य उपलब्धि है। कैलास पर्वत भगवान शिव एवं भगवान आदिनाथ के कारण ही संसार के सबसे पावन स्थानों में है । कैलाश पर्वत के विषय में हमारे संस्कृत साहित्य के अनेकानेक काव्यों में वर्णन मिलता है । जैसे कि महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवधम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग में वर्णन मिलता है। एलोरा के कैलाश मन्दिर के अन्दर पूरे स्थान की रखवाली करने वाले हाथी हैं। मन्दिर के अंदर और आसपास हाथियों की वास्तविक आकार की मूर्तियाँ हैं। मंदिर के केंद्र में भगवान शिव को प्रणाम करने वाले पवित्र बैल नंदी की एक छवि है। अन्य हिंदू मंदिरों की तरह, कैलास मंदिर में एक शिखर है, लेकिन यह पूरी संरचना की तुलना में अपेक्षाकृत छोटा दिखता है। मन्दिर के अंदर के शीर्ष पर केंद्रीय कक्ष की छत पर एक अंगूठी या फूलों की नक्काशी है। मंदिर का प्रवेशद्वार लगभग पचास मीटर लम्बा तथा तैंतीस मीटर चौड़ा है। प्रवेश करते ही दो मुख्य महाकाव्य रचयिता संत क्रमश: वेद व्यास जिन्होंने महाभारत लिखी तथा वाल्मीकि जिन्होंने रामायण की रचना की, उन्हें प्रदर्शित किया गया है। इसके विशाल गोपुरम से प्रवेश करते ही सामने खुले मंडप में नन्दी की प्रतिमा नजर आती है और उसके दोनों ओर विशालकाय हाथी और स्तंभ बने हुए हैं। द्वार मण्डप पर अवस्थित चार स्तम्भ में कलश व पत्ते वस्तुत: समृद्धि व उर्वरता के प्रतीक के रूप में स्थापित किये गये हैं। द्वारमार्ग के दोनो और कुबेर के चित्र उकेरे गये है जो समृद्धि के प्रतीक है। स्वागत द्वार के दो और मुख्य आकर्षण हैं गणेश तथा दुर्गा की भव्य प्रतिमायें। प्रवेश के पश्चात दाहिनी और की दीवार पर स्तम्भों के पार्श्व में गंगा यमुना तथा सरस्वाती नदियों की प्रतिमायें हैं। प्रत्येक नदी को स्त्रीरूप में अपने वाहन अर्थात गंगा मगरमच्छ पर, यमुना कछुवे पर तथा सरस्वती को हाथी पर दर्शाया गया है, जो कि सांकेतिक रूप से शुद्धता, समर्पण तथा प्रज्ञता के प्रतीक हैं। प्रवेशद्वार पर उत्कीर्णित शंखनिधि, पद्मनिधि तथा गजलक्ष्मी राज्य के वैभव सम्पदा की साक्षी है। मंदिर का विमान एक समानांतर चतुर्भुज के आकार का है तथा उसे पच्चीस फीट ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया है। मंदिर में एक सीढी बनी हुई है जिससे ऊपर बरामदे तक पहुँचा जा सकता है। मंदिर का शिखर पन्चानवे फीट ऊँचा है। मंदिर के प्रधान भवन में एक गर्भगृह है, जिसके आगे स्तम्भ युक्त मण्डप निर्मित है। मंदिर के चारों ओर बरामदे, स्तम्भ, पंक्तियाँ तथा कमरे निर्मित हैं। मंदिर भीतर बाहर चारों ओर मूर्ति-अलंकरणों से भरा हुआ है। मुख्य भवन के पश्चात एक नंदि मंदिर निर्मित है जिसके दोनो और दो ध्वज स्तभ हैं और उनपर त्रिशूल स्थापित किये गये हैं। खुले मंडप में नन्दी है और उसके दोनों ओर विशालकाय हाथी तथा स्तंभ बने हैं। मुख्यमण्डप, नंदिमंडप, प्रवेशद्वार, गलियारा, बरामदा, तथा गौण मंदिर आदि इस संरचना के प्रमुख अंग हैं। सम्पूर्ण रचना में ताख, स्तम्भ, अर्धस्तम्भ, गवाक्ष के साथ नखशिखांत अलंकृत हैं। प्रमुख अलंकरण में देवी देवताओं की विशाल प्रतिमायें, पुराण महाकाव्य दृश्य, मिथुन मूर्तियाँ, पशु-पक्षी, बेल-बूटियाँ तथा ज्यामितीय अलंकरण का समावेश है। उत्कीर्ण पश्चात मंदिर को बार बार चित्रित किया गया था। मुख्य मंदिर तो सम्पूर्ण रूप से चित्रित था इसीलिये इसे रंगनाथ रंगमहल भी कहा जाता है। रंगमहल का सात मीटर ऊँचा आधार तल ठोस और अनुप्रयोग्य है जो विशालकाय हाथी, सिंह, काल्पनिक पशु तथा रामायण महाभारत के दृश्यों से अलंकृत है। मंदिर एक बहुत बड़े आँगन के केन्द्र में स्थित है जिसे खम्बों और विशालकाय उत्कीर्णित हाथियों का सहारा दिया गया है। इससे ऐसा आभास होता है कि यह मंदिर अधर में लटका हुआ है। मंदिर विन्यास में मुख्यत: वाद्यमण्डप, नंदीमण्डप, नाट्यमण्डप, अर्धमण्डप, स्तम्भयुक्त मण्डप, अंतराल, पूजागृह, गलियारा, गौणमंदिर आदि का समावेश है। गर्भगृह, अंतराल, मंडप की छतों पर विकसित कमल, अन्नपूर्णादेवी तथा नटराजशिव का अनुक्रम अंकन है। सम्पूर्ण मंदिर तीनों ओर से स्तम्भयुक्त गलियारे से घिरा है जहाँ हिन्दू पौराणिक मूर्तियों का उत्कीर्णन है। प्रांगण स्थित उत्तुंग कीर्ति स्तम्भ शैव धर्म का प्रभाव एवं विशाल गजराज राष्ट्रकूट वंश की सत्ता को प्रदर्शित करता है। उत्तरी गलियारे में लंकेश्वर मंदिर की रचना की गयी है। मंदिर विन्यास में मंडप, अंतराल, गर्भगृह, नंडीमण्डप आदि का समावेश है। मंदिर के आधार भाग में पशु पक्षियों की पंक्तियों के उपर मिथुन मूर्तियों का पट्ट भी उत्कीर्णित है। मंदिर के स्तम्भ व दीवार पर देवी देवताओं की मूर्तियाँ उत्कीर्णित हैं पूजागृह में भग्न शिवलिंग तथा पाश्विक दीवार पर महेशमूर्ति का अंकन है।





मोढेरा सूर्य मंदिर,
गुजरात

विक्रम पंचांग

ग्रीष्म ऋतु

ज्यैष्ठ शुक्ल पक्ष

20 मई से 04 जून 2023 तक

सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०

'नल' नाम संवत्सर

• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४

राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

ग्रीष्म ऋतु

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

05 जून से 18 जून 2023 तक

	रोहिणी ०९/०४ **21 मई** द्वितीया राजीव गांधी पुण्यतिथि	पू.फा. २३/१९ **28 मई** अष्टमी श्री दुर्गाष्टमी वीर सावरकर जयंती	**रविवार**	ज्येष्ठा २७/२२ **04 जून** पूर्णिमा जेठी पूर्णिमा व्रत संत कबीर जयंती	पू.भा. १४/३२ **11 जून** अष्टमी	मृगशिर १८/०७ **18 जून** अमावस्या आषाढ़ी अमावस्या झाँसी रानी लक्ष्मीबाई बलि.दिवस
	मृगशिर १०/३७ **22 मई** तृतीया रम्भा तृतीया छत्रसाल, महाराणा प्रताप जयंती	उ.फा. २८/३० **29 मई** नवमी महेश नवमी शिप्रातीर्थ परिक्रम यात्रा प्रारंभ	**सोमवार**	मूल २५/२४ **05 जून** प्रतिपदा द्वितीया गुरु हरगोविन्द जयंती विश्व पर्यावरण दिवस	उ.भा. १३/५१ **12 जून** नवमी	
	आर्द्रा १२/३९ **23 मई** चतुर्थी श्री विनायक चतुर्थी व्रत गुरु अर्जुनदेव पुण्यतिथि	हस्त दिन/रात **30 मई** दशमी गायत्री जयंती श्री शिप्रा जयंती शिप्रातीर्थ परिक्रमा यात्रा पूर्ण गंगा दशहरा, श्री बटुक भैरव जयंती	**मंगलवार**	पू.षा. २३/१३ **06 जून** तृतीया	रेवती १३/३३ **13 जून** दशमी	
	पुनर्वसु १५/०७ **24 मई** पंचमी	हस्त ०६/०१ **31 मई** एकादशी निर्जला एकादशी व्रत रानी अहिल्याबाई जयंती	**बुधवार**	उ.षा. २१/०४ **07 जून** चतुर्थी श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २२/४४	अश्वि १३/४० **14 जून** एकादशी योगिनी एकादशी व्रत	
	पुष्य १७/५४ **25 मई** षष्ठी अरण्य पष्ठी, आरोग्य षष्ठी आल्हा जयंती	चित्रा ०६/४८ **01 जून** द्वादशी प्रदोष व्रत	**गुरुवार**	श्रवण १८/५८ **08 जून** पंचमी	भरणी १४/११ **15 जून** द्वादशी प्रदोष व्रत	
	श्लेषा २०/५१ **26 मई** सप्तमी	स्वाती ०६/५४ **02 जून** त्रयोदशी	**शुक्रवार**	धनिष्ठा १७/०९ **09 जून** षष्ठी बिरसा मुण्डा शा. दि.	कृतिका १५/०६ **16 जून** त्रयोदशी मास शिवरात्री	
कृतिका ०८/०२ **20 मई** प्रतिपदा सुक्ष्म चन्द्रदर्शन दस दिवसीय गङ्गादशहरा प्रारंभ	मघा २३/४३ **27 मई** सप्तमी धूमावती जयंती	विशाखा ०६/१७ अनुराधा २९/०३ **03 जून** चतुर्दशी वटसावित्री व्रत श्री सत्यनारायण व्रत	**शनिवार**	शत १५/४० **10 जून** सप्तमी कालाष्टमी	रोहिणी १६/२४ **17 जून** चतुर्दशी पितृ अमावस्या पुण्य	

मोढेरा सूर्य मंदिर (गुजरात)

मोढेरा सूर्य मंदिर गुजरात के मेहसाना जिले के “मोढेरा” नामक गाँव में पुष्पावती नदी के किनारे प्रतिष्ठित है। यह स्थान पाटन से दक्षिण में स्थित है। यह सूर्य मंदिर भारतवर्ष में विलक्षण स्थापत्य एवम् शिल्प-कला का बेजोड़ उदाहरण है। सोलंकी वंश के राजा भीमदेव प्रथम द्वारा सन् 1026-1027 ई० में इस मंदिर का निर्माण किया गया था। इस सूर्य मंदिर परिसर के मुख्य तीन भाग हैं - गूढ़मण्डप (मुख्य मंदिर), सभामण्डप तथा कुण्ड (जलाशय)। इसके मण्डपों के बाहरी भाग तथा स्तम्भों पर अत्यन्त सूक्ष्म नक़्क़ाशी की गयी है। कुण्ड में सबसे नीचे तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं तथा कुछ छोटे-छोटे मंदिर भी हैं। विभिन्न पुराणों में भी मोढेरा का उल्लेख मिलता है। 'स्कंदपुराण' और 'ब्रह्मपुराण' के अनुसार प्राचीन काल में मोढेरा के आस-पास का पूरा क्षेत्र 'धर्मरण्य' के नाम से जाना जाता था। विभिन्न धार्मिक ग्रंथों के अनुसार भगवान श्रीराम ने लंका के राजा रावण के संहार के बाद अपने गुरु वशिष्ठ को एक ऐसा स्थान बताने के लिए कहा, जहाँ पर जाकर वह अपनी आत्मा की शुद्धि कर सकें और ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्ति पा सकें। तब गुरु वशिष्ठ ने श्रीराम को 'धर्मरण्य' जाने की सलाह दी थी। कहा जाता है भगवान राम ने ही धर्मारण्य में आकर एक नगर बसाया जो आज मोढेरा के नाम से जाना जाता है। श्रीराम ने यहाँ एक यज्ञ भी किया था। वर्तमान में यही वह स्थान है, जहाँ पर यह सूर्य मन्दिर स्थापित है। इस मंदिर का निर्माण एक ही समय में नहीं हुआ था। मुख्य मन्दिर, चालुक्य वंश के भीमदेव प्रथम के शासनकाल के दौरान बनाया गया था। इससे पहले, वर्ष 1024-25 के दौरान, गजनी के महमूद ने भीम के राज्य पर आक्रमण किया था, और लगभग बीस हज़ार सैनिकों की एक टुकड़ी ने उसे मोढेरा में रोकेने का असफल प्रयास किया था। इतिहासकार ए. के. मजूमदार के अनुसार इस सूर्य मंदिर का निर्माण इस रक्षा के स्मरण के लिए किया गया हो सकता है। परिसर की पश्चिमी दीवार पर, उल्टा लिखा हुआ देवनागरी लिपि में "विक्रम संवत 1083" का एक शिलालेख है, जो 1026-1027 सीई के अनुरूप है। कोई अन्य तिथि नहीं मिली है। जैसा कि शिलालेख उल्टा है, यह मन्दिर के विनाश और पुनर्निर्माण का सबूत देता है। शिलालेख की स्थिति के कारण, यह दृढ़ता से निर्माण की तारीख़ के रूप में नहीं माना जाता है। शैलीगत आधार पर, यह ज्ञात है कि इसके कोने के मंदिरों के साथ कुंड 11वीं शताब्दी की शुरुआत में बनाया गया था। शिलालेख को निर्माण के बजाय गजनी द्वारा विनाश की तारीख़ माना जाता है। इसके तुरंत बाद भीम सत्ता में लौट आये थे। इसलिए मंदिर का मुख्य भाग, लघु और कुंड में मुख्य मंदिर 1026 ई. के तुरन्त बाद बनाये गये थे। 12वीं शताब्दी की तीसरी तिमाही में द्वार, मंदिर के बरामदे और मंदिर के द्वार और कर्ण के शासनकाल के दौरान कक्ष के द्वार के साथ नृत्य कक्ष को बहुत बाद में जोड़ा गया था। इस स्थान को बाद में स्थानीय रूप से सीता नी चौरी और रामकुंड के नाम से जाना जाने लगा। अब यहाँ कोई पूजा नहीं की जाती है। मंदिर राष्ट्रीय महत्व का स्मारक है और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के देखरेख में है। स्थापत्य की दृष्टि से यह मंदिर गुजरात में सोलंकी शैली में बने मंदिरों में सर्वोच्च है। ऊँचे प्लेटफॉर्म (जगती) पर एक ही अक्ष पर बने इस मंदिर के मुख्यतः तीन भाग है: मंदिर का मुख्य भाग जिसमें प्रदक्षिणा-पथ युक्त गर्भगृह तथा एक मण्डप हैं, एक अलग से बना सभामण्डप जिसके सामने एक अलंकृत तोरण है, तथा पत्थरों से निर्मित एक कुण्ड (जलाशय) जिसमें कई छोटे-बड़े लघु आकार के मंदिर निर्मित हैं। सभामण्डप, गूढमण्डप के साथ जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि एक अलग संरचना के रूप में इसे थोड़ा दूर रखा गया है। दोनों एक पक्के मंच पर बने हैं।

मंडप में सुन्दरता से गढ़े पत्थर के स्तम्भ अष्टकोणीय योजना में खड़े किये गये है जो अलंकृत तोरणों को आधार प्रदान करते हैं। मंडप की बाहरी दीवारों पर चारों ओर आले बने हुए हैं जिनमें बारह आदित्यों, दिक्पालों, देवियों तथा अप्सराओं की मूर्तियाँ प्रतिस्थापित हैं। कोणीय योजना में बना सभामण्डप (अथवा, नृत्यमण्डप) भी सुन्दर स्तम्भों से युक्त है। सभामण्डप में चारों मुख्य दिशाओं से प्रवेश हेतु अर्धवृतीय अलंकृत तोरण हैं। सभामण्डप के सामने एक बड़ा तोरण द्वार है। इसके ठीक सामने एक आयताकार कुंड है, जिसे "सूर्य कुण्ड"' कहते हैं (स्थानीय लोग इसे "राम कुण्ड" कहते हैं।) कुण्ड के जल-स्तर तक पहुँचने के लिये इसके अंदर चारों ओर प्लेटफार्म तथा सीढ़ियाँ बनाई गयी हैं। साथ ही कुंड के भीतर लघु आकार के कई छोटे बड़े मंदिर भी निर्मित किये गये हैं जो कि देवी-देवताओं, जैसे देवी शीतलामाता, गणेश, शिव (नटेश), शेषशायी-विष्णु तथा अन्य को समर्पित किये गये हैं। स्थापत्य कला का एक अनोखा उदाहरण कहे जाने वाले इस मंदिर में सूर्य की गणनाओं से लेकर रामायण तक का चित्र पत्थरों पर साफ दिखता है। कहा जाता है कि 12 राशियों और 9 नक्षत्रों की संख्या का गुणा करके इस मंदिर में 12x9= 108 मंदिर बनाये गये। इसके अलावा इसमें नृत्य मंडप और गर्मगृह हैं। नृत्य मंडप में कुल 52 खंभे हैं जो कि साल के 52 हफ्तों के बारे में बताते हैं। इन 52 स्तंभों को ऊपर से देखने पर ये गोलाकार दिखते हैं लेकिन नीचे से देखने पर ये आठ कोनों वाले अष्टभुजाकार स्तंभ के रूप में दिखते हैं। इसके नृत्य मंडप के स्तंभों पर रामायण की पारंपरिक कलाकृतियां पत्थर पर बनायी गयी हैं। इसमें राम, सीता और अयोध्या से लेकर लंका तक के चित्र दिखते हैं। इसके अलावा स्तंभों पर महाभारत कालीन कहानियों की कलाकृति भी मौजूद हैं। इसके अलावा मंदिर की बाहरी दीवारों पर कुल 364 हाथी और 1 शेर की आकृति बनी है जो कि एक कैलेंडर ईयर की गिनती बताती है। गर्भगृह की 10 दिशाएँ और 108 हाथियों की कलाकृति मंदिर का सबसे पिछला हिस्सा इसका गर्भगृह है। इसमें कुल 10 दिशाएँ हैं। गर्भगृह के चारों ओर 108 हाथियों की कलाकृतियाँ हैं। 10 दिशाओं में 10 दिगपालों की कलाकृतियां हैं। सनातन धर्म की मान्यताओं के अनुसार ईशान कोण में भगवान शिव की प्रतिमा लगी है। इसके बाद उत्तर दिशा में भगवान कुबेर की प्रतिमा है, वायव्य कोण में भगवान वायु की प्रतिमा लगी है। गर्भगृह के पश्चिम दिशा में वरुण देवता यानि जल के देवता की मूर्ति बनी हुई है। गर्भगृह की दक्षिण पश्चिम दिशा में भगवान नैरत्य की प्रतिमा है और इस दिशा को नैरत्य दिशा भी कहते हैं। भगवान नैरत्य को शिव का ही अवतार माना जाता है। इसी दिशा में भगवान विश्वकर्मा की ही मूर्ति लगी है। दक्षिण दिशा में मृत्यु के देवता यम की प्रतिमा लगी है। मंदिर की साउथ ईस्ट दिशा को आग्नेय कोण का रूप दिया गया है, जहाँ भगवान अग्नि की प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के सबसे ऊपरी हिस्से में माँ सरस्वती की प्रतिमा है, जो ये बताती है कि सनातन संस्कृति में ज्ञान सबसे अधिक बड़ा स्थान रखता था। यूँ तो देश में सूर्य मंदिरों की परंपरा हज़ारों वर्षों से भी पुरानी है, लेकिन गुजरात का ये सूर्य मंदिर अपनी स्थापत्य कला के कारण सभी में बेहद ख़ास है। मोढेरा का ये सूर्य मंदिर करीब एक हज़ार दो सौ वर्ष पुराना है, लेकिन इसका निर्माण जिन वैज्ञानिक पद्धतियों और सनातनी मूल्यों के आधार पर हुआ है, वो ये बताता है कि हमारी प्राचीन सभ्यता कितनी उन्नत थी। अलाउद्दीन खिलजी के काल में कई अन्य भारतीय मंदिरों की तरह इस मंदिर को भी तोड़ दिया गया था।



विक्रम पंचांग



लिंगराज मंदिर
भुवनेश्वर, ओडिशा

ग्रीष्म ऋतु
आषाढ़ शुक्ल पक्ष
19 जून से 03 जुलाई 2023

सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०
'नल' नाम संवत्सर
• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४
राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

वर्षा ऋतु
श्रावण कृष्ण पक्ष
04 जुलाई से 17 जुलाई 2023

	पू.फा. १०/१२ **25 जून** सप्तमी — माँ ताप्ती जयंती	ज्येष्ठा १३/१७ **02 जुलाई** पूर्णिमा — श्री सत्यनारायण पूर्णिमा	**रविवार**		उ.भा. १९/२९ **09 जुलाई** सप्तमी	आर्द्रा २६/४० **16 जुलाई** चतुर्दशी — मास शिवरात्री व्रत, कार्गिल विजय दिवस
आर्द्रा २०/१२ **19 जून** प्रतिपदा — नवीन चन्द्रदर्शन, गुप्त नवरात्रारम्भ प्रारंभ	उ.फा. १२/४५ **26 जून** अष्टमी — दुर्गाष्टमी	मूल ११/०१ **03 जुलाई** पूर्णिमा — गुरू पूर्णिमा, व्यास पूजा, आषाढ़ी सोमवती पूर्णिमा व्रत	**सोमवार**		रेवती १८/५८ **10 जुलाई** अष्टमी — कालाष्टमी	पुनर्वसु २९/१० **17 जुलाई** अमावस्या — स्नानदान श्राद्ध की हरियाली अमावस्या, विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस
पुनर्वसु २२/३७ **20 जून** द्वितीया — श्री जगदीश रथ यात्रा (पुरी)	हस्त १४/४३ **27 जून** नवमी — भड्डली नवमी, गुप्त नवरात्र विधान पूर्ण		**मंगलवार**	पू.षा. ०८/२६, उ.षा. २९/३८ **04 जुलाई** प्रतिपदा — श्रावण में हरी सब्जी (शाक) का त्याग	अश्वि १९/०४ **11 जुलाई** नवमी	
पुष्य २५/२२ **21 जून** तृतीया — अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	चित्रा १६/०० **28 जून** दशमी		**बुधवार**	श्रवण २६/५६ **05 जुलाई** द्वितीया	भरणी १९/४३ **12 जुलाई** दशमी	
श्लेषा २८/१९ **22 जून** चतुर्थी — श्री विनायक चतुर्थी व्रत	स्वाती १६/२९ **29 जून** एकादशी — देवशयनी एकादशी (दाख), चातुर्मास व्रतारंभ		**गुरुवार**	धनिष्ठा २४/२४ **06 जुलाई** तृतीया, चतुर्थी — श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत, अङ्गारकी चन्द्रोदय ०९/००, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जयंती	कृतिका २०/४२ **13 जुलाई** एकादशी	
मघा दिन/रात **23 जून** पंचमी	विशाखा १६/०९ **30 जून** द्वादशी — सौम्य प्रदोषव्रत, जया पार्वती व्रत प्रारंभ		**शुक्रवार**	शत २२/१५ **07 जुलाई** पंचमी	रोहिणी २२/२८ **14 जुलाई** द्वादशी — कामदा भागवत एकादशी (गोदुग्ध)	
मघा ०७/१७ **24 जून** षष्ठी — रानी दुर्गावती बलिदान दिवस, कुमार स्कन्द षष्ठी	अनुराधा १५/०४ **01 जुलाई** त्रयोदशी, चतुर्दशी		**शनिवार**	पू.भा. २०/३६ **08 जुलाई** षष्ठी — श्री महाकालेश्वर सवारी	मृगशिर २४/२२ **15 जुलाई** त्रयोदशी — सोमप्रदोष व्रत, श्री महाकालेश्वर सवारी	

लिंगराज मंदिर भुवनेश्वर (ओडिशा)

त्रिभुवनेश्वर (शिव) को समर्पित इस मंदिर का निर्माण सोमवंशी राजा ययाति केशरी ने 11 वीं शताब्दी में करवाया था। उसने तभी अपनी राजधानी को जाजपुर से भुवनेश्वर में स्थानांतरिक किया था। इस स्थान को ब्रह्म पुराण में एकाम्र क्षेत्र बताया गया है। कहा जाता है कि केसरी राजाओं ने इस क्षेत्र में लगभग सात मंदिर बनवाये थे इन मंदिरों में मुख्य मंदिर लिंगराज का माना जाता है। भुवनेश्वर केसरी राजाओं की राजधानी रहा है। इन राजाओं ने यहां चौथी शताब्दी के उत्तर भाग से लेकर 11 वीं शताब्दी के पूर्व भाग तक 670 वर्ष उत्कल प्रदेश पर राज्य किया था। इस मंदिर का वर्णन छठी शताब्दी के लेखों में भी आता है। भुवनेश्वर के 'लिंगराज' के विशाल मन्दिर में उड़ीसा के मन्दिरों की पूर्णता व्याप्त है तथा उड़ीसा शैली का सर्वोत्कृष्ट जीवित उदाहरण है। इस प्रतिष्ठित मन्दिर के आसपास विस्तृत परकोटे से घिरा है। एक बड़े आँगन में इस घेरे के मध्य में मन्दिर स्थित है। पूर्व की दीवार पर विशाल प्रवेश द्वार है और इसके चारों ओर पैसठ छोटे-छोटे मन्दिर बने हुए हैं, जो कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है। किन्तु लिंगराज का विशाल मन्दिर बेजोड़ है। इसके विमान(शिखर) की ऊँचाई 180 फीट है और इसके गर्भगृह में एक विशाल शिवलिंग स्थापित है। हर संस्कृति की अपनी भौतिक संरचना भी होती है, जब पूजागृह के निर्माण का बिंदु हो, तो संस्कृति उसके कुछ विधान भी सुनिश्चित करती है, जो उसके वास्तु-शिल्प में परिलक्षित होती है। इस वास्तु-शिल्प में कुछ शास्त्रीय विधान होते हैं,जो कुछ दार्शनिक व्याख्या लिए हो सकते हैं, तो कुछ लोकसंस्कृति के रंग भी, जो वहाँ की परंपरा से प्राप्त हुए हों। यह जगत प्रसिद्ध मन्दिर उत्तरी भारत के मन्दिरों में रचना सौंदर्य तथा शोभा और अलंकरण की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। लिंगराज का विशाल मन्दिर अपनी अनुपम स्थापत्यकला के लिए भी प्रसिद्ध है। मन्दिर में प्रत्येक शिला पर कारीगरी और मूर्तिकला का चमत्कार है। इस मन्दिर का शिखर भारतीय मन्दिरों के शिखरों के विकास क्रम में प्रारम्भिक अवस्था का शिखर माना जाता है। यह नीचे तो प्रायः सीधा तथा समकोण है किन्तु ऊपर पहुँचकर धीरे-धीरे वक्र होता चला गया है और शीर्ष पर प्रायः वर्तुल दिखाई देता है। इसका शीर्ष चालुक्य मन्दिरों के शिखरों पर बने छोटे गुम्बदों की भाँति नहीं है। मन्दिर की पार्श्व-भित्तियों पर अत्यधिक सुन्दर नक़्क़ाशी की हुई है। यहाँ तक कि मन्दिर के प्रत्येक पाषाण पर कोई न कोई अलंकरण उत्कीर्ण है। जगह-जगह मानवाकृतियों तथा पशु-पक्षियों से सम्बद्ध सुन्दर मूर्तिकारी भी प्रदर्शित है। सर्वांग रूप से देखने पर मन्दिर चारों ओर से स्थूल व लम्बी पुष्पमालाएँ या फूलों के मोटे गजरे पहने हुए जान पड़ता है। लिंगराज मन्दिर शैव-वैष्णव मतों में मेल का प्रमाण उपस्थित करता है। इसमें हरिहर की प्रतिमा है तथा पूजा विधि में वैष्णव प्रणाली का समावेश किया गया है। नंदी के साथ गरुड़ की आकृति भी योग मंडप के सामने दृष्टिगत होती है। इसी से शैव-वैष्णव मतानुयायियों में पारस्परिक मित्रता का अनुमान लगाया जाता है।

कई विद्वान शिव और विष्णु को अलग मानते हैं। ढाई हज़ार साल पहले शिव को मानने वालों ने अपना अलग पंथ 'शैव' बना लिया था, तो विष्णु में आस्था रखने वालों ने 'वैष्णव' पंथ। किंतु शिव और विष्णु अलग होकर भी एक ही हैं। विष्णुपुराण में विष्णु को ही शिव कहा गया है, तो शिवपुराण के अनुसार शिव के ही हज़ार नामों में से एक है विष्णु। शिव विष्णु की लीलाओं से मुग्ध रहते हैं और हनुमान के रूप में उनकी आराधना करते हैं। विष्णु अपने रूपों से शिवलिंग की स्थापनाएं और पूजा करते हैं। दोनों में परस्पर मैत्री और आस्था भाव है। मन्दिर को चार भागों में बाँटा गया है, इसमें पूर्व-पश्चिम सीधी रेखा में या पंक्ति में देवल या श्रीमन्दिर या विमान यानी 'गर्भगृह', स्तम्भयुक्त मंडप अथवा जगमोहन, नाट्य मंडप यानी नृत्य का स्थान,भोग मंडप भोग मंडप और नाट्य मंडप का निर्माण कालान्तर में हुआ (यानी एक शताब्दी पश्चात् जोड़े गये) और इस कारण जगमोहन की पूर्व दिशा में प्रवेश द्वार बना था। गर्भगृह के ऊपर लम्बा-सीधा गोल रेखाओं वाला शिखर है, जो अपनी ऊँचाई और आकार की दृष्टि से भव्य है। शेष तीनों मंडपों की छतें कोणाकार ढलुआँ हैं। गर्भगृह के बाद के निचले उभार के रथों ने पूर्व की ओर छोड़कर छत वाले आयत के ऊपर छोटे मन्दिरों का रूप धारण कर लिया है, जिस पर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं। गर्भगृह के अलावा जगमोहन तथा भोगमण्डप में सुन्दर सिंहमूर्तियों के साथ देवी-देवताओं की कलात्मक प्रतिमाएँ हैं। इन लघु गर्भगृहों में शिव से सम्बद्ध देवता, यथा-पार्वती, कार्त्तिकेय और गणेश की मूर्तियाँ हैं, जो उड़ीसा के तत्कालीन मूर्तिकारों की कला का चरमोत्कर्ष व्यक्त करती हैं। सबसे प्रभावोत्पादक श्रीमन्दिर का शिखर है, जो पूरे नगर में दृष्टिगत होता है। शिखर का आधार एक किनारे पर 56 फीट लम्बा है। इसके बाद शिखर की परिरेखा है, जो लम्बवत् थी। शिखर के मध्य भाग में ऐसी कटान है, जो गहरी दीवार में ताख बना देती है। उस कोटरिका में सुन्दर आकृतियाँ बनी हैं। चारों दिशाओं में सबसे ऊपरी प्रक्षेपण पर गजसिंह की आकृति है। लिंगराज मन्दिर में विमान समकालिक जगमोहन की भव्यता भी कम नहीं है। मन्दिर की भाँति ही वह भी धरातल योजना में पंचरथ है। चौकोर छत के ऊपर गोल शीर्ष है, जिसमें पहले घंटाकार कंठ है। उसके ऊपर आमलक शिला और फिर कलश है। उसका विशाल आकार और अलंकरण योजना गर्भगृह के अनुरूप ही है। नाट्यमंडप और भोगमंडप यद्यपि बहुत बाद के बने हुए हैं, फिर भी जगमोहन की तरह हैं और समूची वास्तु योजना में अच्छी तरह खप जाते हैं। यहाँ की पूजा पद्धति के अनुसार सर्वप्रथम बिन्दुसरोवर में स्नान किया जाता है, फिर क्षेत्रपति अनंत वासुदेव के दर्शन किए जाते हैं, जिनका निर्माणकाल नवीं से दसवीं सदी का रहा है।। गणेश पूजा के बाद गोपालनीदेवी, फिर शिवजी के वाहन नंदी की पूजा के बाद लिंगराज के दर्शन के लिए मुख्य स्थान में प्रवेश किया जाता है। धार्मिक कथा है कि 'लिट्टी' तथा 'वसा' नाम के दो भयंकर राक्षसों का वध देवी पार्वती ने यहीं पर किया था। संग्राम के बाद उन्हें प्यास लगी, तो शिवजी ने कूप बनाकर सभी पवित्र नदियों को योगदान के लिए बुलाया। यहीं पर बिन्दुसागर सरोवर है तथा उसके निकट ही लिंगराज का विशालकाय मन्दिर है। सैकड़ों वर्षों से भुवनेश्वर यहीं पूर्वोत्तर भारत में शैवसम्प्रदाय का मुख्य केन्द्र रहा है। भारत में हिंदू मंदिरों के स्थापत्य सिद्धांतों का वर्णन शिल्प शास्त्रों और वास्तु शास्त्रों में किया गया है। हिंदू संस्कृति ने अपने मंदिर निर्माताओं को सौंदर्य स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया है और इसके वास्तुकारों ने कभी-कभी हिंदू जीवन शैली को व्यक्त करने के लिए मंदिर निर्माण में अन्य परिपूर्ण ज्यामिति और गणितीय सिद्धांतों को अपनाकर रचनात्मक अभिव्यक्ति में काफी लचीलेपन का प्रयोग किया है। झकलिंग वास्तुकला में तीन प्रकार के देउला पाए जाते हैं। स्थानीय भाषा में देउला का अर्थ "मन्दिर" होता है। इस शैली में तीन अलग-अलग प्रकार के मन्दिर शामिल हैं, जैसे रेखा देउला,पिधा देउला और खाखरा देउला । पहले दो विष्णु ,सूर्य और शिव मंदिर से जुड़े हैं जबकि तीसरा मुख्य रूप से चामुंडा और दुर्गा मन्दिरों से जुड़ा है। रेखा देउला और खाखरा देउला में गर्भगृह है, जबकि पिधा देउला बाहरी नृत्य स्थल का निर्माण करता है। रेखा देउला के प्रमुख उदाहरण हैं लिंगराज मन्दिर है।

उड़ीसा के मन्दिरों की वास्तुकला अतुल्य है और एक लंबी अवधि में विकसित हुई। उड़ीसा की मंदिर वास्तुकला अपने अद्वितीय प्रतिनिधित्व के कारण पूरी तरह से एक अलग श्रेणी से मेल खाती है जिसे मंदिर वास्तुकला की कलिंग शैली कहा जाता है। मोटे तौर पर यह शैली नागर शैली के अंतर्गत आती है। इस शैली का प्रसार हिमालय से लेकर विंध्य पर्वत माला तक देखा जा सकता है। नागर शैली का उत्कृष्टतम उदाहरण हमें उड़ीसा के मंदिरों में देखने को मिलता है। उड़ीसा के मंदिर शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सातवीं से तेरहवीं शताब्दी के बीच बनाये गये। वास्तुशास्त्र के अनुसार नागर शैली के मंदिरों की पहचान आधार से लेकर सर्वोच्च अंश तक इसका चतुष्कोण होना है। विकसित नागर मंदिर में गर्भगृह, उसके समक्ष क्रमशः अन्तराल, मण्डप तथा अर्द्धमण्डप प्राप्त होते हैं। एक ही अक्ष पर एक दूसरे से संलग्न इन भागों का निर्माण किया जाता है। यह मन्दिर स्थिरता के कुछ मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित हैं, जिनसे मानव शरीर से अपना संकेत लेते हैं। यही कारण है कि कलात्मक सुधार के लिए पर्याप्त प्रावधान के साथ निर्धारित वास्तुशिल्प सिद्धांतों ने प्रगतिशील पीढ़ियों को सक्षम बनाया। कलिंग वास्तुकला में बना यह मन्दिर उत्तरी भारतीय राज्यों के मन्दिरों में सौंदर्य रचना तथा अलंकरण की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। शैव और वैष्णव परंपरा के अद्भुत संगम वाले मंदिर को भारतीय स्थापित परंपरा में एक विशेष स्थान प्राप्त है। इस मंदिर में स्थापित मूर्तियाँ चारकोलिथ पत्थर की बनी हुयी हैं, जिनकी चमक आज भी फीकी नहीं पड़ी हैं। मंदिर की दीवारों पर खजुराहों के मन्दिरों जैसी मूर्तियाँ उकेरी गयी हैं। कहा जाता है कि वर्तमान मंदिर के आकार का निर्माण प्राचीन समय में किया गया था। मन्दिर के कुछ भाग का निर्माण छठी शताब्दी में किया गया था, क्योंकि इनका वर्णन हमें सातवीं सदी के संस्कृत लेखों में दिखाई देता है। केवल भुवनेश्वर में ही सौ से अधिक मन्दिर बनाये गये। इनमें से लिंगराज मंदिर सर्वोत्तम कृति है। भारतीय जनमानस की आस्थाओं में लिंगराज मन्दिर विशेष महत्व रखता है।







विक्रम पंचांग

बृहदेश्वर मंदिर
तंजौर (तमिलनाडु)



(अधिकमास) श्रावण शुक्ल पक्ष

18 जुलाई से 01 अगस्त 2023 तक

वर्षा ऋतु



सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०

'नल' नाम संवत्सर

• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४

राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

(अधिकमास) श्रावण कृष्ण पक्ष

02 अगस्त से 16 अगस्त 2023 तक

वर्षा ऋतु

	उ.फा. १९/४६ **23 जुलाई** पंचमी चंद्रशेखर आजाद जयंती	मूल २१/३३ **30 जुलाई** द्वादशी भौमप्रदोषव्रत विश्व आदिवासी दिवस	**रविवार**		रेवती २५/४५ **06 अगस्त** पंचमी षष्ठी	आर्द्रा ०८/२७ **13 अगस्त** द्वादशी वीर दुर्गादास जयंती प्रदोष व्रत गोवत्स द्वादशी
	हस्त २२/११ **24 जुलाई** षष्ठी स्कन्द षष्ठी, कुसुम्बा षष्ठी	पू.षा. १८/५७ **31 जुलाई** त्रयोदशी चतुर्दशी मुंशी प्रेमचंद जयंती उधमसिंह शहीदी दिवस श्रावणी उपाकर्म श्री गायत्री जयंती, संस्कृत दिवस	**सोमवार**		अश्वि २५/१६ **07 अगस्त** सप्तमी	पुनर्वसु ११/०७ **14 अगस्त** त्रयोदशी मास शिवरात्री व्रत
पुष्य दिन/रात **18 जुलाई** प्रतिपदा	चित्रा २४/०३ **25 जुलाई** सप्तमी शीतला सप्तमी गोस्वामी तुलसीदास जयंती	उ.षा. १६/०२ **01 अगस्त** पूर्णिमा विश्व युवा दिवस हयग्रीव जयंती लवकुश जयंती स्नान,दान, जप की पूर्णिमा लोकमान्य तिलक पुण्यतिथि	**मंगलवार**		भरणी २५/३१ **08 अगस्त** अष्टमी	पुष्य १४/०० **15 अगस्त** चतुर्दशी स्वतंत्रता दिवस महर्षि अरविंद जयंती
पुष्य ०७/५९ **19 जुलाई** द्वितीया नवीन चन्द्रदर्शन	स्वाती २५/११ **26 जुलाई** अष्टमी दुर्गाष्टमी		**बुधवार**	श्रवण १२/५८ **02 अगस्त** प्रतिपदा	कृतिका २६/२८ **09 अगस्त** नवमी विश्व आदिवासी दिवस	श्लेषा १६/५६ **16 अगस्त** अमावस्या कुशग्रहणी अमावस्या शनिश्चरी अमावस्या पारसी नववर्ष पं. अटल बिहारी वाजपेयी पु.ति. रानी अवंतीबाई लोधी जयंती
श्लेषा १०/५६ **20 जुलाई** तृतीया हरियाली तीज	विशाखा २५/२९ **27 जुलाई** नवमी प्रो. ए.पी.जे. कलाम पु.ति.		**गुरुवार**	धनिष्ठा ०९/५७ **03 अगस्त** द्वितीया कज्जली तीज, सतुआ तीज	रोहिणी २८/०२ **10 अगस्त** दशमी गोगा नवमी	
मघा १३/५९ **21 जुलाई** तृतीया श्री विनायक चतुर्थी व्रत श्री महाकालेश्वर सवारी	अनुराधा २४/५६ **28 जुलाई** दशमी		**शुक्रवार**	शत ०७/०७ पू.भा. २८/४४ **04 अगस्त** तृतीया श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत–चन्द्रोदय ०९/१०	मृगशिर ३०/०१ **11 अगस्त** एकादशी	
पू.फा. १६/५८ **22 जुलाई** चतुर्थी	ज्येष्ठा २३/३६ **29 जुलाई** एकादशी श्री महाकालेश्वर सवारी पवित्रा एकादशी व्रत (सिंघाड़ा)		**शनिवार**	उ.भा. २६/५५ **05 अगस्त** चतुर्थी	आर्द्रा दिन/रात **12 अगस्त** एकादशी अजा एकादशी व्रत(खारक)	

बृहदेश्वर मंदिर तंजौर (तमिलनाडु)

भारत में हज़ारों मंदिर हैं। उनमें से कुछ इतने प्राचीन और प्रतिष्ठित हैं कि वे तीर्थ स्थल बन गये हैं। उनकी प्राचीनता तथा कलात्मक उत्तकृष्टता के अलावा, एक रोचक तथा महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ये मंदिर दीर्घकालीन विकास प्रक्रिया से गुजरे हैं और दक्षिण भारत की तत्कालीन संस्कृति के साक्षी के रूप में विद्यमान हैं। बृहदेश्वर मन्दिर तमिलनाडु के तंजौर ज़िले में स्थित प्रसिद्ध हिंदू मन्दिर है। तमिल भाषा में इसे बृहदीश्वर के नाम से संबोधित किया जाता है। ग्यारहवीं सदी के आरम्भ में बनाया गया था। यह मन्दिर चोल शासकों की महान् कला केन्द्र रहा है। यह भव्य मन्दिर विश्व धरोहर के रूप में जाना जाता है। भगवान शिव को समर्पित बृहदेश्वर मन्दिर शैव धर्म के अनुयायियों के लिए पवित्र स्थल रहा है। बृहदेश्वर मन्दिर चोल वास्तुकला का शानदार उदाहरण है, जिनका निर्माण चोल शासक महाराजा राजराज प्रथम के राज्य के दौरान केवल पांच वर्ष की अवधि में (१००४ ई. और १००९ ई. के दौरान) निर्मित किया गया था। उनके नाम पर ही इसे राजराजेश्वर मन्दिर नाम भी दिया गया है। राजराज प्रथम भगवान शिव के परम भक्त थे जिस कारण उन्होंने अनेक शिव मन्दिरों का निर्माण करवाया था जिनमें से एक बृहदेश्वर मंदिर भी है। यह विशाल मन्दिर अपने समय की विशालतम संरचनाओं में गिना जाता था। मंदिर की वास्तुकला स्थानिक रूप में केवल इस बात को अभिव्यक्त करती थी कि उस समय निर्माताओं की "जीवन की मोक्ष" के प्रति कितनी प्रबल इच्छा थी । जिस देवता के नाम-पर वह समर्पित होता था वह "विश्व नियंता के सर्वोच्च सिद्धान्त" का प्रतीक होता था और आत्मिक प्रवृत्ति को दिशा प्रदान करता था । बृहदेश्वर मंदिर भगवान शिव को समर्पित एक भवन है और यहां इन्होंने भगवान का नाम अपने बाद राज राजेश्वरम उडयार रखा है। इस मंदिर में प्रवेश करते ही एक तेरह फीट ऊंचे शिवलिंग के दर्शन होते है। शिवलिंग के साथ एक विशाल पंच मुखी सर्प विराजमान है जो फनों से शिवलिंग को छाया प्रदान कर रहा है। इसके दोनों तरफ दो मोटी दीवारें हैं, जिनमें लगभग छह फीट की दूरी है यह मंदिर ग्रेनाइट से निर्मित है और अधिकांशत: पत्थर के बड़े खण्ड इसमें इस्तेमाल किए गए हैं, ये शिलाखण्ड आस पास उपलब्ध नहीं है इसलिए इन्हें किसी दूर के स्थान से लाया गया था। यह मंदिर एक फैले हुए अंदरुनी प्रकार में बनाया गया है जो २४०.९० मीटर लम्बा (पूर्व - पश्चिम) और १२२ मीटर चौड़ा (उत्तर - दक्षिण) है और इसमें पूर्व दिशा में गोपुरम के साथ अन्य तीन साधारण तोरण प्रवेश द्वार प्रत्येक पार्श्व पर और तीसरा पिछले सिरे पर है। प्रकार के चारों ओर परिवारालय के साथ दो मंजिला मालिका है।

एक विशाल गुम्बद के आकार का शिखर अष्टभुजा वाला है और यह ग्रेनाइट के एक शिला खण्ड पर रखा हुआ है तथा इसका घेरा ७.८ मीटर और वज़न ८० टन है। उप पित और अदिष्ठानम अक्षीय रूप से रखी गयी सभी इकाइयों के लिए सामान्य है जैसे कि अर्धमाह और मुख मंडपम तथा ये मुख्य गर्भ गृह से जुड़े हैं किन्तु यहां पहुंचने के रास्ता उत्तर - दक्षिण दिशा से अर्ध मंडपम से होकर निकलता है, जिसमें विशाल सोपान हैं। ढलाई वाला प्लिंथ विस्तृत रूप से निर्माता शासक के शिलालेखों से भरपूर है जो उनकी अनेक उपलब्धियों का वर्णन करता है, पवित्र कार्यों और मंदिर से जुड़ी संगठनात्मक घटनों का वर्णन करता है। गर्भ गृह के अंदर बृहत लिंग ८.७ मीटर ऊंचा है। दीवारों पर विशाल आकार में इनका चित्रात्मक प्रस्तुतिकरण है और अंदर के मार्ग में दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती और भिक्षाटन, वीरभद्र कालांतक, नटेश, अर्धनारीश्वर और अलिंगाना रूप में शिव को दर्शाया गया है। अंदर की ओर दीवार के निचले हिस्से में भित्ति चित्र चोल तथा उनके बाद की अवधि के उत्कृष्ट उदाहरण है। उत्कृष्ट कलाओं को मंदिरों की सेवा में प्रोत्साहन दिया जाता था, शिल्पकला और चित्रकला को गर्भ गृह के आस पास के रास्ते में और यहाँ तक कि महान् चोल ग्रंथ और तमिल पत्र में दिये गये शिला लेख इस बात को दर्शाते हैं कि राजाराज के शासनकाल में इन महान् कलाओं ने कैसे प्रगति की। तंजौर चित्रकला के जाने माने समूह नायकन को चोल भित्ति चित्रों में प्रदर्शित किया गया है।

बृहदीश्वर मंदिर तंजौर के किसी भी कोने से देखा जा सकता है। इसका विशाल परिसर मुख्य केन्द्र है। मंदिर के तेरह मंज़िले भवन सभी को अचंभित करते हैं क्योंकि हिंदू अधि-स्थापनाओं में मंज़िलों की संख्या सम होती है परंतु यहाँ ऐसा नहीं है। भगवान शिव की आराधना को समर्पित इस मंदिर में भगवान के गण सवारी नंदी की एक बहुत बड़ी मूर्ति भी स्थापित है। राजराज प्रथम ने शैव मत के अनुयायी थे उन्हें शिवपादशेखर की उपाधि भी प्राप्त थी। अपनी धार्मिक सहिष्णुता के अनुरूप उन्होंने तंजौर के राजराजेश्वर मंदिर या बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया व उन पर अनेक बौद्ध प्रतिमाओं का निर्माण भी कराया था। चोल शासकों ने इस मंदिर को राजराजेश्वर नाम दिया था परंतु तंजौर पर हमला करने वाले मराठा शासकों ने इस मंदिर को बृहदेश्वर नाम दे दिया था। बृहदेश्वर मंदिर वास्तुकला, पाषाण व ताम्र में शिल्पांकन, चित्रांकन, नृत्य, संगीत, आभूषण एवं उत्कीर्णकला का बेजोड़ नमूना है। इसके शिलालेखों में अंकित संस्कृत व तमिल लेख सुलेखों का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इस मंदिर के चारों ओर सुंदर अक्षरों में नक्काशी द्वारा लिखे गये शिला लेखों की एक लंबी श्रृंखला शासक के व्यक्तित्व की अपार महानता को दर्शाते हैं। इस मंदिर की निर्माण कला की प्रमुख विशेषता यह पायी गयी है कि इसके गुंबद की परछाई पृथ्वी पर नहीं पड़ती। जो सभी को चकित करती है इसके शिखर पर स्वर्णकलश स्थित है। मंदिर में स्थापित भव्य शिवलिंग देखने पर बृहदेश्वर नाम को सार्थक करती प्रतीत होती है। मंदिर में प्रवेश करने पर गोपुरम यानी द्वार के भीतर एक चौकोर मंडप है तथा चबूतरे पर नंदी जी की विशाल मूर्ति स्थापित है। नंदी की यह प्रतिमा भारतवर्ष में एक ही पत्थर से निर्मित नंदी की दूसरी सर्वाधिक विशाल प्रतिमा है। इस मंदिर के शिलालेखों को देखना भी अद्भुत है। शिलालेखों में अंकित संस्कृत व तमिल लेख सुलेखों का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इस मंदिर के चारों ओर सुंदर अक्षरों में नक्काशी द्वारा लिखे गये शिलालेखों की एक लंबी श्रृंखला देखी जा सकती है। इनमें से प्रत्येक गहने का विस्तार से उल्लेख किया गया है। इन शिलालेखों में कुल तेईस विभिन्न प्रकार के मोती, हीरे और माणिक की ग्यारह किस्में बतायी गयी हैं। इस मंदिर को गौर से देखने पर लगता है कि यह पिरामिड जैसी दिखने वाली महाकाय संरचना है जिसमें एक प्रकार की लय और समरूपता है जो आपकी भावनाओं के साथ प्रतिध्वनित होती है। कहते हैं कि इस मंदिर को बनाने के विचार चोल राजा को अपनी लंका यात्रा के दौरान तब सपने में आया था। दक्षिण भारत के ये विशिष्ट मंदिर जो कि स्थापत्य कला की दृष्टि से पूर्ण दिखाई देते हैं शताब्दियों के विकास तथा क्रम-विकास की देन हैं । यह इमारतों का एक मिश्रित समूह होता था जिनमें से कुछ ही वृत्तिमूलक उपयोगिता थी जबकि कुछ दूसरों का स्थापत्य तथा अलंकारिक महत्व तो था परन्तु उससे अधिक उनकी और कोई उपयोगिता नहीं थी । मंदिर की विभिन्न इमारतों को क्रम से मुख्य पूजागृह के साथ जोड़ दिया जाता था । ये इमारतें प्राय: अव्यवस्थित रूप में होती थीं और स्थापत्य कला की दृष्टि से उनका अधिक महत्व नहीं होता था । परन्तु वे परिष्कृत व विस्तृत धार्मिक अनुष्ठान की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोगी होती थीं और उत्सव के अवसर पर तो उनकी आवश्यकता और भी अधिक हो जाती थी। भक्तों के लिए स्वयं मंदिर ही "देवताओं" के आवास स्थान-"देव-स्थानम्" होने के नाते उपासना व आराधना की वस्तु थे।

इन महान मंदिरों की विशालता तथा शिल्प की उत्कृष्टता को देखकर व्यक्ति अत्यन्त प्रभावित होता है। उस अलौकिक धैर्य को, जो शिल्पकारों की अनेक पीढ़ियों की इन रचनाओं में परिलिक्षित होता है और उस राजसी उदारता को, जिसने इसे संभव बनाया, देखकर हम दाँतो तले उँगली दबा लेते हैं। वास्तुकला की इन उपलब्धियों में हिन्दुओं की जीवन को धर्म प्रधान बनाने की कामना तथा उसमें समस्त मानवीय आदर्शों और लक्ष्यों को खोजने की भावना छिपी हुई है । मंदिर वास्तव में ईश्वरवादी धर्म का सौन्दर्य सूत्र बन गया था । मंदिर के माध्यम से लोगों ने अपने विश्वासों और आस्था के प्रतीक इंद्रिय बोध को सुगम बनाने का प्रयास किया। दक्षिण के इन मन्दिरों ने किसी अन्य संस्था की अपेक्षा अधिक सक्रिय भूमिका अदा की । मंदिर राजा, कुलीनों तथा जनसाधारण आदि सभी वर्गों के लोगों के लिए धर्म का प्रतीक हो गया था । मन्दिर के निर्माण तथा अनुरक्षण की व्यवस्था करना जीवन का एक पुण्य कर्म हो गया था। मन्दिरों के महान निर्माताओं तथा शिल्पकारों ने अभिव्यक्ति की मौलिकता की अपेक्षा परंपरा की अनुरूपता के माध्यम से आत्मभिव्यक्ति को रूप प्रदान किया।



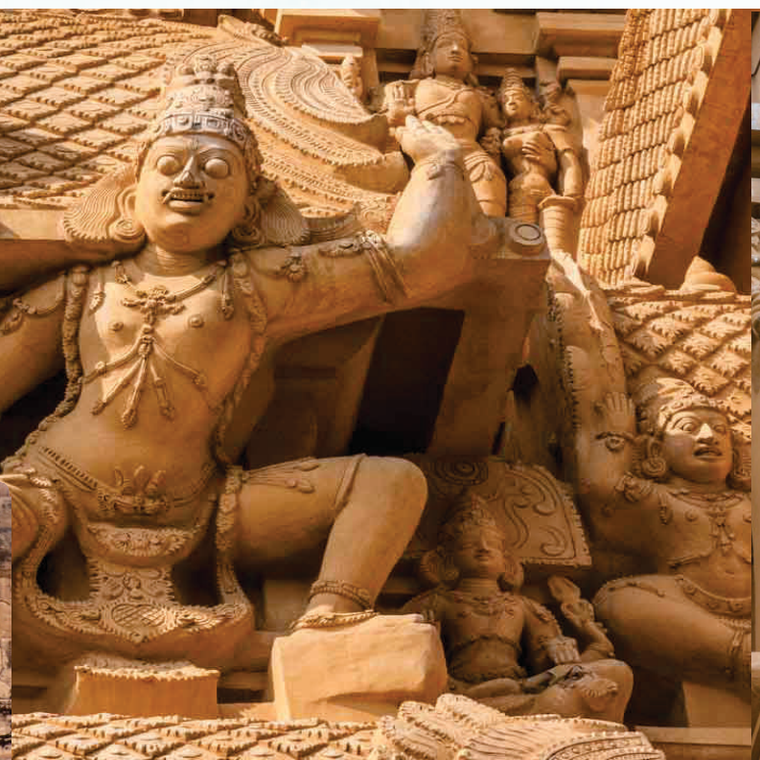





मार्तण्ड सूर्य मंदिर
अनंतनाग (कश्मीर)

विक्रम पंचांग



सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०
'नल' नाम संवत्सर
• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४
राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

वर्षा ऋतु
श्रावण शुक्ल पक्ष
17 अगस्त से 31 अगस्त 2023 तक

वर्षा ऋतु
भाद्रपद कृष्ण पक्ष
01 सितम्बर से 15 सितम्बर 2023 तक

	हस्त २८/२३ **20 अगस्त** चतुर्थी श्री विनायक चतुर्थी व्रत सद्भावना दिवस राजीव गांधी जयंती	मूल ०७/१७ पू.षा. २९/१५ **27 अगस्त** एकादशी श्री महाकालेश्वर सवारी पवित्रा एकादशी व्रत (सिंघाड़ा)	**रविवार**		रेवती १०/३७ **03 सितम्बर** चतुर्थी श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत–चन्द्रोदय ०९/१०	पुनर्वसु १७/०६ **10 सितम्बर** एकादशी
	चित्रा दिन/रात **21 अगस्त** पंचमी नाग पंचमी नागचंद्रेश्वर दर्शन (उज्जैन) सुभद्रा कुमारी चौहान जयंती	उ.षा. २६/४२ **28 अगस्त** द्वादशी भौमप्रदोषव्रत	**सोमवार**		अश्वि ०९/२७ **04 सितम्बर** पंचमी	पुष्य २०/०० **11 सितम्बर** द्वादशी
	चित्रा ०६/३३ **22 अगस्त** षष्ठी स्कन्द षष्ठी, कुसुम्बा षष्ठी	श्रवण २३/४० **29 अगस्त** त्रयोदशी	**मंगलवार**		भरणी ०९/०१ **05 सितम्बर** षष्ठी डा. राधाकृष्ण जयंती शिक्षक दिवस	श्लेषा २३/०० **12 सितम्बर** त्रयोदशी प्रदोष व्रत
	स्वाती ०८/०७ **23 अगस्त** सप्तमी शीतला सप्तमी गोस्वामी तुलसीदास जयंती	धनि २०/४६ **30 अगस्त** चतुर्दशी रक्षाबंधन, श्रावणी उपाकर्म	**बुधवार**		कृतिका ०९/२० **06 सितम्बर** सप्तमी हलषष्ठी	मघा २६/०१ **13 सितम्बर** चतुर्दशी देवी अहिल्या पु.ति. मास शिवरात्री व्रत
मघा १९/५८ **17 अगस्त** प्रतिपदा	विशाखा ०९/०४ **24 अगस्त** अष्टमी दुर्गाष्टमी	शत १७/४४ **31 अगस्त** पूर्णिमा स्नान,दान, जप की पूर्णिमा	**गुरुवार**		रोहिणी १०/२६ **07 सितम्बर** अष्टमी श्रीकृष्ण प्राकट्योत्सव	पूफा २८/५५ **14 सितम्बर** अमावस्या राष्ट्रीय हिन्दी दिवस
पू.फा. २०/५८ **18 अगस्त** द्वितीया नवीन चन्द्रदर्शन पेशवा बाजीराव जयंती	अनुराधा ०९/१५ **25 अगस्त** नवमी		**शुक्रवार**	पू.भा. १४/५५ **01 सितम्बर** द्वितीया गुरुग्रंथ साहिब प्रकाश दिवस	मृगशिर १२/१० **08 सितम्बर** नवमी	उफा दिन/रात **15 सितम्बर** अमावस्या कुशग्रहणी अमावस्या अभियंता दिवस
उ.फा. २५/४८ **19 अगस्त** तृतीया हरियाली तीज विश्व छायांकन दिवस	ज्येष्ठा ०८/३९ **26 अगस्त** दशमी		**शनिवार**	उ.भा. १२/३० **02 सितम्बर** तृतीया कज्जली तीज, सतुआ तीज	आर्द्रा १४/२५ **09 सितम्बर** दशमी	

मार्तण्ड सूर्य मंदिर अनंतनाग (कश्मीर)

कश्मीर में एक बहुत ही पराक्रमी राजा हुआ थे जिनका नाम "ललितादित्य मुक्तापीड" था। उन्होंने इस मार्तण्ड सूर्य मंदिर का निर्माण आठवीं सदी ईस्वी में करवाया था। सबसे पुरानी मंदिरों में से एक है। श्रीनगर से साठ किलोमीटर दूर दक्षिणी कश्मीर के अनंतनाग में स्थित यह मंदिर कश्मीर के लोगों को अपने प्रिय राजा की याद दिलाता है। सन् 761 में राजा ललितादित्य के निधन के बाद इस्लामी आक्रांताओं ने इसको ध्वस्त किया। ऐसा कहा जाता है कि राजा ललितादित्य सूर्य की पहली किरण निकलने पर सूर्य मंदिर में पूजा कर चारों दिशाओं में देवताओं का आह्वान कर ही अपनी दिनचर्या की शुरुआत करते थे। सूर्य को ऊर्जा एवं शक्ति का स्रोत माना गया है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, सूर्य देव प्रत्यक्ष रूप से दर्शन देने वाले देवता हैं। पौराणिक वेदों में सूर्य का उल्लेख विश्व की आत्मा और ईश्वर के नेत्र के तौर पर किया गया है। वैदिक काल से ही भारत में सूर्योपासना का प्रचलन रहा है। पहले यह सूर्योपासना मंत्रों से होती थी। प्राचीन पुरातात्विक अवशेषों एवं अभिलेखों से ज्ञात होता है कि धरती की सभी सभ्यताओं में सूर्य की उपासना प्रमुखता से होती थी। यूनान, मिश्र की सभ्यताओं से लेकर सिंधु घाटी की सभ्यता तक सूर्य प्रथम पूज्य हैं। राजाओं ने अपने कुल को अमरता प्रदान करने के लिए सूर्य के साथ जोड़ा और सूर्यवंशी कहलाये तथा विश्व की अनेक सभ्यताओं में भिन्न-भिन्न नामों से जाने वाले सूर्य की प्रतिमाओं का निर्माण हुआ। सूर्य आराधना न सिर्फ अपने देश में नहीं, बल्कि दुनिया के कई मुल्कों में अलग-अलग नाम, मान्यता और अपनी-अपनी परंपराओं के अनुसार होती है। प्राचीन इतिहास को खंगालें, तो हिंदू बौद्ध धर्म के अलावा यूनान, मिस्र, एजटेक (सेंट्रल मैक्सिको), चीन, तुर्की और इंका (दक्षिण अमेरिका) सभ्यता में भी सूर्य की पूजा होती थी। भारत के अलावा जापान, रुस, कोरिया, इंग्लैंड मैक्सिको में भी सूर्य मंदिर हैं। वर्तमान में पेरू, उरुग्वे, अर्जेंटीना, जापान आदि देश सूर्य को अपना राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में उपयोग करते हैं। वेद की ऋचाओं में ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योति: सूर्य: स्वाहा कह कर सूर्य की आराधना की गई है। मित्र, मिहिर, सविता आदि शब्द सूर्य के पर्याय हैं। भविष्य पुराण में ब्रह्मा विष्णु के मध्य एक संवाद में सूर्य पूजा एवं मन्दिर निर्माण का महत्व समझाया गया है। पौराणिक साक्ष्यों व प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि कश्यप ऋषि के मर्ग अर्थात घर के होने के कारण प्राचीन काल में कश्मीर को कश्यप मर्ग कहा जाता था । जो कालांतर में कश्मीर के रूप में रूढ़ हो गया। वैदिक संस्कृति और सभ्यता के निर्माण में कश्मीर का विशेष और महत्वपूर्ण स्थान है। सृष्टि के प्रारंभिक काल से ही भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपरा को और भी अधिक मुखरित करने में कश्मीर का बहुत भारी योगदान रहा है । अनेक ऋषियों ने यहाँ से वेदों की ऋचाओं के माध्यम से संसार को सुख – शांति और समृद्धि का मार्ग बताने का उत्कृष्ट और अनुकरणीय कार्य किया। हिन्दू देवमंडल में सूर्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान था, जिनकी कल्पना जगत के प्रकाश के स्वामी के रूप में की गयी है। कुछ विद्वान सूर्य-पूजा की प्राचीनता प्रागैतिहासिक काल तक ले जाते हैं। ऐसा लगता है, कि सूर्य प्रकृति की उन शक्तियों में विशिष्ट था, जिसे सर्वप्रथम देवत्व प्रदान किया गया। भारत के अतिरिक्त विश्व की कुछ अन्य प्राचीन सभ्यताओं में भी सूर्य-पूजा का प्रचलन दिखायी देता है। कश्मीर के इस मार्तण्ड सूर्य मंदिर की भव्यता की तुलना विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी से होती रही है। उस समय भारत, ईरान और मध्य एशिया के कई क्षेत्रों में करकोटा वंश के राजा ललितादित्य मुक्तापाद का शासन फैला हुआ था। भले ही इस मंदिर का भव्य निर्माण उन्होंने कराया हो पर इससे जुड़ी कथा महाभारत में पांडवों तक जाती है। मार्तण्ड सूर्य मंदिर के आसपास कुल चौरासी अन्य छोटे-छोटे मंदिर हुआ करते थे, जिनके आज सिर्फ अवशेष ही बचे हैं। मार्तंड मंदिर एक पठार के ऊपर बनाया गया था जहाँ से पूरी कश्मीर घाटी को देखा जा सकता है। खंडहरों और संबंधित पुरातात्विक निष्कर्षों से, यह कहा जा सकता है कि यह कश्मीरी वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना था, जिसने गंधार, गुप्त और चीनी वास्तुकला के रूपों को मिश्रित किया था। इस मंदिर के निर्माण की गणना ललितादित्य के प्रमुख कार्यों में की जाती है। इस मंदिर में चौरासी स्तंभ थे। इन स्तंभों को नियमित अंतराल पर रखा गया था। मंदिर की राजसी वास्तुकला बेहद खूबसूत है जो इसे अलग बनाती है। मुख्य मंदिर का शिखर पिरामिडीय है तथा इस पर भगवान विष्णु, देवी गंगा और यमुना तथा भगवान सूर्य जैसे देवताओं की नक्काशी की गयी है। कश्मीर में मंदिर वास्तुकला- कश्मीर की मंदिर वास्तुकला की अनूठी विशेषताएँ स्थानीय भूगोल के अनुकूल हैं। यह वास्तुकला पत्थर पर अपनी अनोखी नक्काशी के लिये प्रसिद्ध है। व्यापारिक मार्गों पर स्थित होने के कारण यह मंदिर वास्तुकला अनेक विदेशी स्रोतों से प्रेरित है। कश्मीर के कार्केट राजवंश एवं उत्पल राजवंश के संरक्षण में इन मंदिरों की वास्तुकला अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची। मंदिर में एक उपनिवेशित प्रांगण है, जिसका प्राथमिक मंदिर इसके केंद्र में है और यह 84 छोटे मंदिरों से घिरा हुआ है, जो 220 फीट लंबा और कुल 142 फीट चौड़ा है और इसमें एक छोटा मंदिर शामिल है जो पहले बनाया गया था। मंदिर कश्मीर में एक पेरिस्टाइल का सबसे बड़ा उदाहरण बन गया है, और इसके विभिन्न कक्षों के कारण जटिल है जो आकार में आनुपातिक हैं और मंदिर की समग्र परिधि के साथ संरेखित हैं। हिंदू मन्दिर वास्तुकला के अनुसार, मन्दिर का प्राथमिक प्रवेश द्वार चतुर्भुज के पश्चिमी भाग में स्थित है और मन्दिर के समान ही चौड़ाई है, जो भव्यता पैदा करता है।

कश्मीर की मंदिर वास्तुकला की अनूठी विशेषताएँ स्थानीय भूगोल के अनुकूल हैं। यह वास्तुकला पत्थर पर अपनी अनोखी नक्काशी के लिये प्रसिद्ध है। व्यापारिक मार्गों पर स्थित होने के कारण यह मन्दिर वास्तुकला अनेक विदेशी स्रोतों से प्रेरित है। कश्मीर के कार्केट राजवंश एवं उत्पल राजवंश के संरक्षण में इन मन्दिरों की वास्तुकला अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची।

उस समय इस मन्दिर की कलात्मकता को देख कर लोग अचंभे से भर जाते थे। इतिहासकारों के अनुसार बारह सौ वर्ष पूर्व निर्मित हुए कश्मीर के इस भव्य सूर्य मंदिर में कई सौ किलो सोने की भव्य मूर्तियाँथी। 15 वीं शताब्दी की शुरुआत में इस्लामी आक्रांताओं ने इसे जड़ से मिटाने की ठान ली और इसे अवशेषों में बदल दिया। इसकी मजबूती का अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि एक पूरी की पूरी फ़ौज को इस मंदिर को तोड़ने में वर्षों लग गये। यहाँका प्राचीन विस्तृत लिखित इतिहास है राजतरंगिणी, जो कल्हण द्वारा 12 वीं शताब्दी ई. में लिखा गया था। तब तक यहाँ पूर्ण हिन्दू राज्य रहा था। यह अशोक के साम्राज्य का हिस्सा भी रहा। लगभग तीसरी शताब्दी में अशोक का शासन रहा था। उज्जैन के महाराज विक्रमादित्य के अधीन छठी शताब्दी में एक बार फिर से हिन्दू धर्म की वापसी हुई। उनके बाद नागवंशी क्षत्रिय सम्राट ललितादित्या शासन रहा। साहस और पराक्रम की प्रतिमूर्ति राजा ललितादित्य मुक्तापीड का नाम कश्मीर के इतिहास में सर्वोच्च स्थान पर है। उसका सैंतीस वर्ष का राज्य उसके सफल सैनिक अभियानों, उसके अद्भुत कला-कौशल-प्रेम और विश्व विजेता बनने की उसकी चाह से पहचाना जाता है। कश्मीर पर शासन करने वाले राज्यों के विषय में सबसे उपयुक्त जानकारी कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी से प्राप्त होती है । राजतरंगिणी कश्मीर के इतिहास में विशेष महत्व रखती है । राजतरंगिणी में आदिकाल से लेकर बारहवीं सदी के आरंभ तक कश्मीर के प्रत्येक शासक के काल की घटनाओं का वर्णन क्रमानुसार किया गया है। कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी में आठ तरंग तथा लगभग आठ हजार श्लोक हैं। राज तरंगिणी के पहले तीन तरंगों में कश्मीर के प्राचीन इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। तो वही राज तरंगिणी के चौथे से लेकर छठे तरंग तक कार्कोट वंश और उत्पल वंश का उल्लेख मिलता है। ललितादित्य का शासन काल कश्मीर के सुख और समृद्धि का काल था। उसके शासन काल में मंदिरों आदि का निर्माण बड़े पैमाने पर हुआ। कश्मीर में छठी शताब्दी में अपने तरह का शैव दर्शन विकसित हुआ। वर्तमान में अनंतनाग का यह मार्तंड सूर्य मंदिर खंडहर होने के बावजूद राष्ट्रीय स्मारक है और इसे सरकार द्वारा संरक्षित किया गया है।





विष्णु मन्दिर
अंकोरवाट (कम्बोडिया)

विक्रम पंचांग

वर्षा ऋतु
भाद्रपद शुक्ल पक्ष
16 सितम्बर से 29 सितम्बर 2023 तक

सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०
'नल' नाम संवत्सर
• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४
राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

शरद ऋतु
आश्विन कृष्ण पक्ष
30 सितम्बर से 14 अक्टूबर 2023 तक

	हस्त १०/०३ **17** सितम्बर **द्वितीया** विश्वकर्मा पूजा	पू.षा. १३/४२ **24** सितम्बर **नवमी** श्री चन्द्रनवमी, तेजादशमी	**रविवार**	अश्वि १९/२८ **01** अक्टूबर **द्वितीया** तृतीया का श्राद्ध	पुष्य २६/४५ **08** अक्टूबर **नवमी** दशमी का श्राद्ध वायुसेना दिवस
	चित्रा १२/०९ **18** सितम्बर **तृतीया** हरितालिका तीजव्रत राजाशंकर शाह रघुनाथ शाह बलिदान दिवस	उ.षा. ११/५५ **25** सितम्बर **दशमी एकादशी** पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती डोल ग्यारस जलझूलनी एकादशी व्रत (कमल ककड़ी)	**सोमवार**	भरणी १८/२५ **02** अक्टूबर **तृतीया** चतुर्थी का श्राद्ध श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०/२१ महात्मा गांधी जयंती लाल बहादुर शास्त्री जयंती	श्लेषा २९/४३ **09** अक्टूबर **दशमी** एकादशी का श्राद्ध(कलाकन्द) गुरुनानक देव पु.ति.
	स्वाती १३/४८ **19** सितम्बर **चतुर्थी** श्री गणेश चतुर्थी व्रत	श्रवण ०९/४३ **26** सितम्बर **द्वादशी** जलझूलनी एकादशी व्रत	**मंगलवार**	कृतिका १८/०५ **03** अक्टूबर **चतुर्थी** चतुर्थी का श्राद्ध पंचमी का श्राद्ध कुमार पंचमी	मघा दिन/रात **10** अक्टूबर **एकादशी** इन्दिरा एकादशी व्रत (कलाकंद-मिठाई) एकादशी का एकोद्दिष श्राद्ध
	विशाखा १५/०० **20** सितम्बर **पंचमी** ऋषि पंचमी	धनिष्ठा ०७/११ शत २८/३० **27** सितम्बर **त्रयोदशी** प्रदोष व्रत विश्व पर्यटन दिवस	**बुधवार**	रोहिणी १८/३० **04** अक्टूबर **पंचमी** चन्द्रषष्ठी का श्राद्ध	मघा ०८/४६ **11** अक्टूबर **द्वादशी** प्रदोष व्रत द्वादशी एवं सन्यासियों का श्राद्ध
	अनुराधा १५/३६ **21** सितम्बर **षष्ठी** सूर्य षष्ठी	पूभा २५/४७ **28** सितम्बर **चतुर्दशी** अनंतचतुर्दशी व्रत पार्थिव गणेश विसर्जन शहीद भगत सिंह जयंती लता मंगेशकर जयंती	**गुरुवार**	मृगशिर १९/४१ **05** अक्टूबर **षष्ठी** चन्द्रषष्ठी का श्राद्ध रानी दुर्गावती जयंती	पूफा ११/३५ **12** अक्टूबर **त्रयोदशी** त्रयोदशी का श्राद्ध मास शिवरात्री व्रत
	ज्येष्ठा १५/३६ **22** सितम्बर **सप्तमी** संतान सप्तमी ललीता सप्तमी श्री महालक्ष्मी व्रतारम्भ नवाखाई	ज्येष्ठा २३/१७ **29** सितम्बर **पूर्णिमा** प्रौष्ठपदी पूर्णिमा व्रत पूर्णिमा श्राद्ध	**शुक्रवार**	आर्द्रा २१/३२ **06** अक्टूबर **सप्तमी** अष्टमी का श्राद्ध कालाष्ठमी, काला जयंती	उफा १४/११ **13** अक्टूबर **चतुर्दशी** चतुर्दशी का श्राद्ध
उ.फा. ०७/३७ **16** सितम्बर **प्रतिपदा** नवीन चन्द्रदर्शन	मूल १४/५७ **23** सितम्बर **अष्टमी** दधीची दिवस श्री दुर्गाष्टमी, श्री राधाष्टमी		**शनिवार**	रेवती २१/०७ **30** सितम्बर **प्रतिपदा** प्रतिपदा का श्राद्ध अश्विन में दूध का त्याग द्वितीया का श्राद्ध	पुनर्वसु २३/४५ **07** अक्टूबर **अष्टमी** नवमी एवं सौभाग्यवती का श्राद्ध	हस्त १६/२५ **14** अक्टूबर **अमावस्या** स्नान दान व श्राद्ध की सर्व पितृ अमावस्या श्री शनैश्चरी अमावस्या

विष्णु मन्दिर अंकोरवाट (कम्बोडिया)

अंकोरवाट कम्बोडिया, जिसे पुराने लेखों में कम्बुज भी कहा गया है। यहाँ भारत के प्राचीन और शानदार स्मारक हैं। यहाँ संसार-प्रसिद्ध विशाल विष्णुमंदिर है। अंकोरवाट मन्दिर अंकोरयोम नामक नगर में स्थित है, जिसे प्राचीन काल में यशोधरपुर कहा जाता था। अंकोरवाट जयवर्मा द्वितीय के शासनकाल (1181-1205 ई.) में कम्बोडिया की राजधानी था। यह अपने समय में संसार के महान् नगरों में गिना जाता था और इसका विशाल भव्य मन्दिर अंकोरवाट के नाम से आज भी विख्यात है। कम्बोडिया के इतिहास की जड़ें भारतीय सभ्यता से जुड़ी हुई हैं। वर्तमान समय में कम्बोडिया के अधीन जो भूभाग है, उस भूभाग के राजनीतिक संरचना सम्बन्धी दस्तावेज़ फुनान नामक चीनी इतिवृत्त में मिलता है। इसमें इन्डोचीन पेनिन्सुला के सबसे दक्षिणी भाग का पहली शताब्दी से छठी शताब्दी तक का इतिहास है। फुनान सबसे प्राचीन स्थानीय हिन्दू संस्कृति थी। इससे पता चलता है कि भारतीय प्रभाव वाले क्षेत्रों के साथ इसका बहुत दिनों से सामुद्री व्यापार और सामाजिक-आर्थिक सम्बन्ध था। अंकोरवाट का निर्माण कम्बुज के राजा सूर्यवर्मन द्वितीय (1049-66 ई.) ने कराया था और यह मन्दिर विष्णु को समर्पित है। वास्तुकला के आश्चर्य, इस देवालय के चारों ओर एक गहरी खाई है जिसकी लंबाई ढाई मील और चौड़ाई 650 फुट है। मंदिर के मध्यवर्ती शिखर की ऊँचाई भूमितल से 210 फुट से भी अधिक है। अंकोरवाट की भव्यता तो उल्लेखनीय है ही, इसके शिल्प की सूक्ष्म विदग्धता, नक्शे की सममिति, यथार्थ अनुपात तथा सुंदर अलंकृत मूर्तिकारी भी उत्कृष्ट कला की दृष्टि से कम प्रशंसनीय नहीं है। यह मन्दिर एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है। इसमें तीन खण्ड हैं, जिसमें प्रत्येक में सुन्दर मूर्तियाँ हैं और प्रत्येक खण्ड से ऊपर के खण्ड तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ हैं। प्रत्येक खण्ड में आठ गुम्बज हैं। यह पूरे क्षेत्र को गरिमा मंडित किये हुए है। मन्दिर के चारों ओर पत्थर की दीवार का घेरा है जो पूर्व से पश्चिम की ओर दो-तिहाई मील और उत्तर से दक्षिण की ओर आधे मील लम्बा है। इस प्रकार की भव्य इमारत संसार के किसी अन्य स्थान पर नहीं मिलती है। भारत से सम्पर्क के बाद दक्षिण-पूर्वी एशिया में कला, वास्तुकला तथा स्थापत्यकला का जो विकास हुआ, उसका यह मन्दिर चरमोत्कृष्ट उदाहरण है। अनुश्रुति के अनुसार इस राज्य का संस्थापक कौंडिन्य ब्राह्मण था जिसका नाम वहाँ के एक संस्कृत अभिलेख में मिला है। नवीं शताब्दी ईसवी में जयवर्मन तृतीय कम्बुज का राजा हुआ और उसी ने लगभग 860 ईसवी में अंग्कोरथोम (थोम का अर्थ 'राजधानी' है) नामक अपनी राजधानी की नींव डाली। राजधानी प्राय: चालीस वर्षों तक बनती रही और 900 ई. के लगभग तैयार हुई। उसके निर्माण के सम्बन्ध में कम्बुज के साहित्य में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित है। अंकोरवाट सुदूर पूर्व के हिन्दचीन में प्राचीन भारतीय संस्कृति के अवशेष हैं। कई सदियों पहले सुदूर पूर्व के देशों में प्रवासी भारतीयों ने अनेक उपनिवेश स्थापित किये थे। हिंदचीन, सुवर्ण द्वीप, वनद्वीप, मलाया आदि में भारतीयों ने कालान्तर में अनेक राज्यों की स्थापना की। खमेर शास्त्रीय शैली से प्रभावित स्थापत्य वाले इस मन्दिर के गलियारों में तत्कालीन सम्राट, बलि-वामन, स्वर्ग-नरक, समुद्र मन्थन, देव-दानव युद्ध, महाभारत, हरिवंश पुराण तथा रामायण से संबद्ध अनेक शिलाचित्र हैं। यहाँ के शिलाचित्रों में रूपायित राम कथा बहुत संक्षिप्त है। इन शिलाचित्रों की श्रृंखला रावण वध हेतु देवताओं द्वारा की गयी आराधना से आरम्भ होती है। उसके बाद सीता स्वयंवर का दृश्य है। बालकांड की इन दो प्रमुख घटनाओं की प्रस्तुति के बाद विराध एवं कबन्ध वध का चित्रण हुआ है। अगले शिलाचित्र में राम धनुष-बाण लिए स्वर्ण मृग के पीछे दौड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं। इसके उपरान्त सुग्रीव से राम की मैत्री का दृश्य है। फिर, बाली और सुग्रीव के द्वन्द्व युद्ध का चित्रण हुआ है। परवर्ती शिलाचित्रों में अशोक वाटिका में हनुमान की उपस्थिति, राम-रावण युद्ध, सीता की अग्नि परीक्षा और राम की अयोध्या वापसी के दृश्य हैं। अंकोरवाट के शिलाचित्रों में रूपायित राम कथा यद्यपि अत्यधिक विरल और संक्षिप्त है, तथापि यह महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसकी प्रस्तुति आदिकाव्य की कथा के अनुरूप हुई है।

इस मन्दिर को देखने से ज्ञात होता है कि विदेशों में जाकर भी प्रवासी कलाकारों ने भारतीय कला को जीवित रखा था। इनसे प्रकट है कि अंग्कोरथोम जिस कम्बुज देश की राजधानी था उसमें विष्णु, शिव, शक्ति, गणेश आदि देवताओं की पूजा प्रचलित थी। इन मन्दिरों के निर्माण में जिस कला का अनुकरण हुआ है वह भारतीय गुप्त कला से प्रभावित जान पड़ती है। अंग्कोरवात के मन्दिरों, तोरणद्वारों और शिखरों के अलंकरण में गुप्त कला प्रतिबिम्बित है। इनमें भारतीय सांस्कतिक परम्परा जीवित गयी थी। एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि यशोधरपुर (अंग्कोरथोम का पूर्वनाम) का संस्थापक नरेश यशोवर्मा 'अर्जुन और भीम जैसा वीर, सुश्रुत जैसा विद्वान् तथा शिल्प, भाषा, लिपि एवं नृत्य कला में पारंगत था'। उसने अंग्कोरथोम और अंग्कोरवात के अतिरिक्त कम्बुज के अनेक राज्य स्थानों में भी आश्रम स्थापित किए जहाँ रामायण, महाभारत, पुराण तथा अन्य भारतीय ग्रन्थों का अध्ययन अध्यापन होता था। राजा सूर्यवर्मन बहुत ही धार्मिक विचारों वाले राजा थे और उनकी आस्था भगवान विष्णु में थी। इसलिए उन्होंने इस मंदिर का निर्माण भगवान विष्णु को समर्पित करने के उदेश्य से करवाया था। कहा जाता है कि राजा सूर्यवर्मन हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करके अमर बनना चाहता था। इसलिए उसने अपने लिए इस मंदिर के रूप में पूजा स्थल बनवाया जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, तीनों की ही पूजा होती थी। मगर इसके बारे में कई अलग-अलग कहानियाँ भी प्रचिलित हैं, जैसे मान्यता है कि देवराज इन्द्र ने अपने बेटे के लिए महल के तौर पर इस मंदिर का निर्माण करवाया था। वहीं तेरहवीं शताब्दी में एक चीनी यात्री का कहना था कि इस मंदिर का निर्माण महज एक ही रात में किसी अलौकिक सत्ता के हाथ से हुआ था। अंगकोर वाट के आसपास कई प्राचीन मंदिर और उनके भग्नावशेष मौजूद हैं। इस क्षेत्र को अंगकोर क्षेत्र कहा जाता है। सियाम रीप क्षेत्र अपने आगोश में सवा तीन सौ से ज्यादा मंदिर समेटे हुए है। इन मंदिरों के निर्माण में जिस कला का अनुकरण हुआ है वह भारतीय गुप्त कला से प्रभावित जान पड़ती है! इनमें भारतीय सांस्कृतिक परंपरा जीवित गयी थी! एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि यशोधरपुर (पूर्वनाम) का संस्थापक नरेश यशोवर्मन 'अर्जुन और भीम जैसा वीर, सुश्रुत जैसा विद्वान् तथा शिल्प, भाषा, लिपि एवं नृत्य कला में पारंगत था! उसने अंग्कोरथोम और अंग्कोरवाट के अतिरिक्त कंबुज के अनेक राज्य स्थानों में भी आश्रम स्थापित किये जहाँ रामायण, महाभारत, पुराण तथा अन्य भारतीय ग्रंथों का अध्ययन अध्यापन होता था! अंग्कोरवाट के हिंदू मंदिरों पर बाद में बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा और कालांतर में उनमें बौद्ध भिक्षुओं ने निवास भी किया! अंगकोरथोम और अंग्कोरवाट में 20 वीं सदी के आरंभ में जो पुरातात्विक उत्खनन हुए हैं उनसे खमेरों के धार्मिक विश्वासों, कलाकृतियों और भारतीय परंपराओं की प्रवासगत परिस्थितियों पर बहुत प्रकाश पड़ा है। एशिया के दक्षिण-पूर्वी भाग में चम्पा, मलय, अनाम, बोर्नियो, कम्बोडिया, जावा, बाली, बर्मा आदि देशों में अभिलेख पर्याप्त संख्या में मिले हैं। अभिलेखों के अध्ययन से उन देशों के राजनीतिक इतिहास का ही ज्ञान नहीं होता बल्कि उनके समाज, साहित्य तथा अन्य विचार धाराओं की जानकारी भी होती है। उन देशों के इतिहास, उपनिवेश का प्रारम्भ, भारतीय संस्कृति के विभिन्न अंगों का प्रसार आदि बातों को जानकारी हमें लेखों से हो जाती है। उपनिवेश स्थापित हो जाने पर वहाँ भारतीय सामाजिक रीतिरिवाज का प्रसार हुआ, स्वभावतः उन द्वीपसमूहों में हिन्दू धर्म एवं साहित्य की ओर लोगों का ध्यान गया क्योंकि हम यह जानते हैं कि धर्म ही सामाजिक जीवन के कार्यों और व्यक्ति के उद्देश्यों का निर्धारण करता है और उसके लिए एक मापदण्ड भी स्थिर करता है। वहाँ से सामाजिक, धार्मिक तथा बात को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है कि भारतीय संस्कृति का विस्तार किस रूप में हुआ था। वहाँ के खण्डहर तथा भग्नावशेष ऐसे अकाट्य प्रमाण हैं जिनके आधार पर भारतीय संस्कृति के स्वरूप तथा उसके विस्तार का परिज्ञान हो जाता है।

कंबुज देश के साथ हमारे संबंधों का इतिहास दूसरी शताब्दी में आरंभ हो जाता है। 11वीं तथा 12वीं शताब्दी के आते आते कंबुज देश भारतमय हो गया था। जब वहाँ भारतीय लोग गये तो सबसे पहले उन्होंने भारतीय लिपि के आधार पर कंबुज लिपि का निर्माण किया। एक नयी लिपि का निर्माण होते ही एक नवीन पथ उद्घाटित हुआ। कम्बुज लोगों ने लिखना और पढ़ना आरम्भ किया। इसका प्रमाण हमें स्थान स्थान से उपलब्ध हुए बारह हजार से अधिक संस्कृत के शिलालेखों से मिलता है। यहाँ के राजाओं ने अपनी राज्य व्यवस्था को भारतीय शासकों पर आधारित धर्म (नियमों) से सुदृढ़ किया। अपने महान् कार्यों को शिलालेखों पर उत्कीर्ण किया। एक ओर वे अपनी विजय यात्राओं की रामायण और महाभारत से तुलना कर उन्हें मंदिरों की भित्तियों पर उत्कीर्ण कर शाश्वत करते रहे तो दूसरी ओर अपने स्वर्णिम इतिहास को संस्कृत भाषा में लिखते रहे। भव्य मंदिरों का निर्माण कर स्वयं को धन्य मानते रहे। जब किसी राजा का राज्याभिषेक होता था तो राज्याभिषेक के लिए एक भव्य मंदिर का निर्माण किया जाता था। उसमें उस देवता की प्रतिमा की स्थापना होती थी जिसका वह राजा भक्त होता था और अंत में उसके मरणोपरांत उसी मंदिर में उस राजा की उसी देवता के रूप में मूर्ति स्थापित कर दी जाती थी। अंकोरवाट के महान् मंदिर हिंदू स्थापत्य की सनातन भारतीय की परंपरा के श्रेष्ठ उदाहरण है।





विक्रम पंचांग



पद्मनाभस्वामी मंदिर
तिरुअनन्तपुरम

शरद ऋतु
श्रवण २२/००
आश्विन शुक्ल पक्ष
15 अक्टूबर से 28 अक्टूबर 2023 तक



सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०
'नल' नाम संवत्सर
• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४
राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

शरद ऋतु
कार्तिक कृष्ण पक्ष
29 अक्टूबर से 13 नवम्बर 2023

चित्रा १८/११ **15 अक्टूबर** **प्रतिपदा** घटस्थापना शारदीय नवरात्र प्रा. नाना नानी का श्राद्ध	उषा १८/११ **22 अक्टूबर** **अष्टमी** सरस्वती पूजा दुर्गाष्टमी, महाष्टमी		**रविवार**	भरणी २८/४१ **29 अक्टूबर** **प्रतिपदा**	पुष्य १०/३० **05 नवम्बर** **अष्टमी** पुष्य नक्षत्र कालाष्ठमी अहोई अष्टमी, काली पूजा	स्वा. २६/५१ **12 नवम्बर** **चतुर्दशी** प्रदोषकाल दीपावली महापर्व महालक्ष्मी व कुबेर पूजन स्वामी दयानंद निर्वाणोत्सव
स्वाती १९/३४ **16 अक्टूबर** **द्वितीया** नवीन चन्द्रदर्शन	श्रव १९/३४ **23 अक्टूबर** **नवमी** महानवमी नवरात्र उत्थापन सरस्वती विसर्जन		**सोमवार**	कृतिका २८/०० **30 अक्टूबर** **द्वितीया** गुरु रामदास जयंती	श्लेषा १३/२४ **06 नवम्बर** **नवमी**	विशा २७/२४ **13 नवम्बर** **अमावस्या** सोमवती अमावस्या
विशाखा २०/३० **17 अक्टूबर** **तृतीया**	धनिष्ठा १८/४४ **24 अक्टूबर** **दशमी** विजिया दशमी दशहरा, शमी पूजा शस्त्र व शास्त्र पूजा		**मंगलवार**	रोहिणी २७/५७ **31 अक्टूबर** **तृतीया** श्रीमती इंदिरा गांधी पु.ति. सरदार पटेल जयंती	मघा १६/२५ **07 नवम्बर** **दशमी**	
अनुराधा २१/०० **18 अक्टूबर** **चतुर्थी** श्री गणेश चतुर्थी व्रत	शत १७/१५ **25 अक्टूबर** **एकादशी** पापांकुशा एकादशी व्रत (फूट काचरी)		**बुधवार**	मृगशिर २८/३६ **01 नवम्बर** **चतुर्थी** करवा चौथ श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०/३७	पू.फा. १९/१९ **08 नवम्बर** **दशमी**	
ज्येष्ठा २१/०३ **19 अक्टूबर** **पंचमी** उपाङ्ग ललिता व्रत ललिता पंचमी	पू.भा. १८/०३ **26 अक्टूबर** **द्वादशी** प्रदोष व्रत गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती		**गुरुवार**	आर्द्रा २९/५८ **02 नवम्बर** **पंचमी**	उ.फा. २१/५६ **09 नवम्बर** **एकादशी** गोवत्स द्वादशी रमा एकादशी व्रत (केला)	
मूल २०/४० **20 अक्टूबर** **षष्ठी** सरस्वती आवहान	उ.भा. २७/०१ **27 अक्टूबर** **त्रयोदशी चतुर्दशी**		**शुक्रवार**	पुनर्वसु दिन/रात **03 नवम्बर** **षष्ठी**	हस्त २४/०७ **10 नवम्बर** **द्वादशी** प्रदोषव्रत धन्वन्तरी जयंती, धनतेरस	
पू.षा. १९/४५ **21 अक्टूबर** **सप्तमी** सरस्वती पूजा	रेवती १६/५० अश्वि १७/०० **28 अक्टूबर** **पूर्णिमा** शरद पूर्णिमा कोजगीरी पूर्णिमा श्री सत्यनारायण व्रत महर्षि वाल्मीकि जयंती		**शनिवार**	पुनर्वसु ०७/५७ **04 नवम्बर** **सप्तमी**	चित्रा २५/४६ **11 नवम्बर** **त्रयोदशी** मासशिवरात्रि व्रत नरकहरा चतुर्दशी, रूपचोदस	

पद्मनाभस्वामी मंदिर तिरुअनन्तपुरम

पद्मनाभस्वामी मंदिर भारत के केरल राज्य के तिरुअनन्तपुरम में स्थित भगवान विष्णु का प्रसिद्ध हिन्दू मंदिर है। पद्मनाभ स्वामी मंदिर विष्णु-भक्तों की महत्वपूर्ण आराधना-स्थली है। मंदिर की संरचना में सुधार कार्य किए गए जाते रहे हैं। उदाहरणार्थ 1733 ई. में इस मंदिर का पुनर्निर्माण त्रावनकोर के महाराजा मार्तंड वर्मा ने करवाया था। पद्मनाभ स्वामी मंदिर के साथ एक पौराणिक कथा जुडी है। मान्यता है कि सबसे पहले इस स्थान से विष्णु भगवान की प्रतिमा प्राप्त हुई थी जिसके बाद उसी स्थान पर इस मंदिर का निर्माण किया गया है। तिरुअनंतपुरम का पद्मनाभ स्वामी मंदिर केरल के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। केरल संस्कृति एवं साहित्य का अनूठा संगम है। इसके एक तरफ तो खूबसूरत समुद्र तट है और दूसरी ओर पश्चिमी घाट में पहाड़ियों का अद्भुत नैसर्गिक सौंदर्य, इन सभी अमूल्य प्राकृतिक निधियों के मध्य स्थित- है पद्मनाभ स्वामी मंदिर। इसका स्थापत्य देखते ही बनता है मंदिर के निर्माण में महीन कारीगरी का भी कमाल देखने योग्य है। मंदिर का महत्व यहाँ के पवित्र परिवेश से और बढ जाता है। मंदिर में धूप-दीप का प्रयोग एवं शंखनाद होता रहता है। मंदिर का वातावरण मनमोहक एवं सुगंधित रहता है। मंदिर में एक स्वर्णस्तंभ भी बना हुआ है जो मंदिर के सौदर्य में इज़ाफा करता है। मंदिर के गलियारे में अनेक स्तंभ बनाये गये हैं जिन पर सुंदर नक़्क़ाशी की गई है जो इसकी भव्यता में चार चाँद लगा देती है। मंदिर में प्रवेश के लिए पुरुषों को धोती तथा स्त्रियों को साड़ी पहनना अनिवार्य है। इस मन्दिर में हिन्दुओं को ही प्रवेश मिलता है। मंदिर में हर वर्ष ही दो महत्वपूर्ण उत्सवों का आयोजन किया जाता है जिनमें से एक मार्च एवं अप्रैल माह में और दूसरा अक्टूबर एवं नवंबर के महीने में मनाया जाता है। मंदिर के वार्षिकोत्सवों में लाखों की संख्या में श्रद्धालु भाग लेने के लिए आते हैं तथा प्रभु पद्मनाभस्वामी से सुख-शांति की कामना करते हैं। पद्मनाभ स्वामी मंदिर का निर्माण राजा मार्तण्ड द्वारा करवाया गया था। इस मंदिर के पुनर्निर्माण में अनेक महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है। सर्वप्रथम इसकी भव्यता को आधार बनाया गया मंदिर को विशाल रूप में निर्मित किया गया जिसमें उसका शिल्प सौंदर्य सभी को प्रभावित करता है। मंदिर के निर्माण में द्रविड़ एवं केरल शैली का मिला जुला प्रयोग देखा जा सकता है। मंदिर का गोपुरम द्रविड़ शैली में बना हुआ है। पद्मनाभ स्वामी मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला का अदभुत उदाहरण है। मंदिर का परिसर बहुत विशाल है जो कि सात मंज़िला ऊँचा है गोपुरम को कलाकृतियों से सुसज्जित किया गया है। मंदिर के पास ही सरोवर भी है जो 'पद्मतीर्थ कुलम' के नाम से जाना जाता है। पद्मनाभस्वामी मंदिर के प्रमुख देवता की प्रतिमा अपने निर्माण के लिए जानी जाती है जिसमें 12008 शालिग्राम हैं जिन्हें नेपाल की नदी गंधकी के किनारों से लाया गया था। श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर का गर्भगृह एक चट्टान पर स्थित है और मुख्य प्रतिमा को जो लगभग 18 फीट लंबी है, अलग-अलग दरवाज़ों से देखा जा सकता है। पहले दरवाजे से सिर और सीना देखा जा सकता है जबकि दूसरे दरवाजे से हाथ और तीसरे दरवाजे से पैर देखे जा सकते हैं। इस मंदिर का वास्तुशिल्प पत्थर और काँसे पर की गयी नक़्क़ाशी के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर के अंदरूनी हिस्सों में सुंदर चित्र और भीत्ति चित्र उकेरे गये हैं। इनमें से कुछ चित्र भगवान विष्णु की लेटी हुई मुद्रा, नरसिम्ह स्वामी (आधा सिंह, आधा नर जो भगवान विष्णु का रूप है), भगवान गणपति और गज लक्ष्मी की छवियाँ हैं।

यहाँ पर भगवान विष्णु की विश्राम अवस्था को 'पद्मनाभ' कहा जाता है। पद्मनाभ स्वामी मंदिर के साथ एक पौराणिक कथा जुड़ी है। मान्यता है कि सबसे पहले इस स्थान से विष्णु भगवान की प्रतिमा मिली थी जिसके बाद यहाँ पर मंदिर का निर्माण किया गया। भगवान विष्णु को समर्पित पद्मनाम मंदिर को त्रावणकोर के राजाओं ने बनाया था। इसका जिक्र 9 शताब्दी के ग्रंथों में भी आता है। लेकिन मंदिर के मौ़जूदा स्वरूप को 18वीं शताब्दी में बनवाया गया था। मध्यकालीन तमिल साहित्य और सिधान्तो तमिल अलवर संत (6 वी 9 वी सदी) ने कहा यह मंदिर प्रमुख 108 धार्मिक स्थलों में से एक है और इसके दिव्य प्रबंध की महिमा देखते ही बनती है। वर्ष 1750 में महाराज मार्तंड वर्मा ने खुद को पद्मनाभ दास बताया। इसके बाद शाही परिवार ने खुद को भगवान पद्मनाभ को समर्पित कर दिया तथा 1733 ई. में इस मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया। इस मंदिर के पुनर्निर्माण में अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है। सर्वप्रथम इसकी भव्यता को आधार बनाया गया मंदिर को विशाल रूप में निर्मित किया गया जिसमें उसका शिल्प सौंदर्य सभी को प्रभावित करता है। इस भव्य मंदिर का सप्त सोपान स्वरूप अपने शिल्प सौंदर्य से दूर से ही प्रभावित करता है। यह मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। पद्मनाभस्वामी मंदिर, तिरुअनंतपुरम इस मंदिर का वास्तुशिल्प द्रविड़ एवं केरल शैली का मिला-जुला रूप है। इस मंदिर का ध्वज स्तंभ लगभग 80 फीट ऊँचा है जिसे स्वर्ण लेपित ताँबे की चादरों से ढँका गया है। इस मंदिर में कुछ रोचक ढाँचे भी है जो बालि पीडा मंडपम और मुख मंडपम के रूप में हैं। यह बड़े हॉल हैं जिन्हें विभिन्न हिंदू देवताओं की सुंदर कलाकृतियों से सजाया गया है। एक और ढाँचा जो आपका ध्यान आकर्षित करेगा, वह नवग्रह मंडपा है जिसकी छत पर नवग्रह दिखाई देंगे। शहर तिरुवनंतपुरम का नाम पद्मनाभस्वामी मंदिर के प्रमुख देवता के नाम पर है जिन्हें अनंत (जो सर्प अनंत पर लेटे हैं) भी कहा जाता है। शब्द 'तिरुवनंतपुरम' का शाब्दिक अर्थ है– श्री अनंत पद्मनाभस्वामी की भूमि। माना जाता है कि श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर ऐसे स्थान पर स्थित है जो सात परशुराम क्षेत्रों में से एक है। स्कंद पुराण और पद्म पुराण में इस मंदिर का संदर्भ मिलता है। यह मंदिर पवित्र टंकी पद्म तीर्थम यानी 'कमल जल' के पास है। शिखर पर फहराते ध्वज पर गर्भगृह में विष्णु के वाहन गरुड़ की आकृति बनी है। मंदिर का महत्व यहाँ की पवित्रता से बढ़ जाता है मंदिर में धूप दिप एवं शंख नाद होता रहता है मंदिर का समस्त वातावरण मनमोहक एवं सुगंधित रहता है। इस मंदिर में एक 'स्वर्णस्तंभ' भी है। पौराणिक घटनाओं और चरित्रों के मोहक चित्रण मंदिर की दीवारों पर देखने को मिलते हैं, जो मंदिर को अलग ही भव्यता प्रदान करते हैं। मंदिर के चारों ओर आयताकार रूप में एक गलियारा है। गलियारे में 324 स्तंभ हैं जिन पर सुंदर नक़्क़ाशी की गई है। जो मंदिर की भव्यता में चार चाँद लगा देते हैं। ग्रेनाइट से बने मंदिर में नक़्क़ाशी के अनेक सुंदर उदाहरण देखने को मिलते हैं। दक्षिण भारत के मंदिरों का वर्गीकरण स्थापत्य कला की दृष्टि से मुख्य रूप से द्रविड़ तथा चालुक्य शैलियों में किया जा सकता है। द्रविड़ शैली के मंदिर मुख्यत: तमिल भाषी क्षेत्र में हैं और चालुक्य शैली के मंदिर कन्नड़ भाषा क्षेत्र में। दक्षिण पश्चिम तथा सुदूर दक्षिण केरल में चालुक्य और द्रविड़ शैली का प्रभाव रहा है।





प्रम्बानन, शिव मंदिर
(इंडोनेशिया)

विक्रम पंचांग

हेमंत ऋतु
कार्तिक शुक्ल पक्ष
14 नवम्बर से 27 नवम्बर 2023 तक



सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०
'नल' नाम संवत्सर
• कलि संवत ५११२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४
राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

हेमंत ऋतु
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
28 नवम्बर से 12 दिसम्बर 2023 तक

	श्रवण २६/५१ **19 नवम्बर** षष्ठी सप्तमी सहस्त्रार्जुन जयंती रानी लक्ष्मीबाई जयंती इंदिरा गांधी जयंती	भरणी २५/४२ **26 नवम्बर** चतुर्दशी सिद्धवट यात्रा	**रविवार**		श्लेषा २१/३५ **03 दिसम्बर** षष्ठी	स्वाति ११/४९ **10 दिसम्बर** द्वादशी प्रदोषव्रत
	धनिष्ठा २५/४१ **20 नवम्बर** अष्टमी गोपाष्टमी	कृतिका २७/११ **27 नवम्बर** पूर्णिमा कार्तिक स्ना. पूर्णिमा व्रत श्री निम्बार्क जयंती देव दिपावली गुरूनानक जयंती, अविच्य दि.	**सोमवार**		मघा २४/३४ **04 दिसम्बर** सप्तमी नौसेना दिवस	विशाखा १२/१३ **11 दिसम्बर** त्रयोदशी चतुर्दशी मास शिवरात्रि व्रत
अनुराधा १०/४२ **14 नवम्बर** प्रतिपदा अन्नकूट गोवर्धन पूजा भाईदूज, यम द्वितीया, गौ क्रीड़ा बलिपूजा बाल दिवस, पं. जवाहरलाल नेहरू जयंती	शत २४/४६ **21 नवम्बर** नवमी अक्षय आँवला नवमी		**मंगलवार**	रोहिणी १३/३२ **28 नवम्बर** प्रतिपदा	पू.फा. २७/३७ **05 दिसम्बर** अष्टमी काल भैरव यात्रा श्रीकाल भैरवाष्टमी भैरव	अनुराधा ११/५६ **12 दिसम्बर** अमावस्या भौमवती अमावस्या पुण्य
ज्येष्ठा ०९/०७ **15 नवम्बर** द्वितीया बिरसा मुंडा दिवस विश्वकर्मा पूजा, चित्रगुप्त पूजा	पू.भा. २४/११ **22 नवम्बर** दशमी		**बुधवार**	मृगशिर १४/०० **29 नवम्बर** द्वितीया	उ.फा. ३०/२७ **06 दिसम्बर** नवमी डा. अंबेडकर पु.ति.	
मूल ०७/२७ **16 नवम्बर** तृतीया	उ.भा. २३/५७ **23 नवम्बर** एकादशी संत नामदेव जयंती तुलसी विवाह देव प्रबोधिनी एकादशी(बिल्व पत्र)		**गुरुवार**	आर्द्रा १५/०२ **30 नवम्बर** तृतीया	हस्त दिन/रात **07 दिसम्बर** दशमी सशस्त्र सेना झंडा दिवस	
पू.षा. २९/४८ **17 नवम्बर** चतुर्थी सौभाग्य ज्ञान पांडव पंचमी	रेवती २४/०७ **24 नवम्बर** द्वादशी शनि प्रदोष व्रत		**शुक्रवार**	पुनर्वसु १३/४१ **01 दिसम्बर** चतुर्थी श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०/१५	हस्त ०८/५४ **08 दिसम्बर** एकादशी उत्पत्ति एकादशी (बादाम)	
उ.षा. २८/१५ **18 नवम्बर** पंचमी सूर्य षष्ठी डालाछठ	अश्वि २४/४१ **25 नवम्बर** त्रयोदशी वैकुण्ठ चतुर्दशी हरि हर मिलन		**शनिवार**	पुष्य १८/५४ **02 दिसम्बर** पंचमी	चित्रा १०/४३ **09 दिसम्बर** द्वादशी उत्पत्ति एकादशी (बादाम)	

प्रम्बानन, शिव मंदिर (इंडोनेशिया)

नौवीं शताब्दी में स्थापित इंडोनेशिया स्थित प्रम्बानन शिव, ब्रह्मा और विष्णु को समर्पित विशाल और भव्य मंदिरों के लिये जाना जाता है। "प्रम्बानन" त्रिदेव को समर्पित दक्षिण पूर्व एशिया में दूसरा सबसे बड़ा मंदिर है। आप जैसे ही प्रम्बानन में प्रवेश करते हैं, वहाँ तीन मंदिर के गगनचुंबी मीनारों को देखकर दंग रह जायेंगे ये मंदिर दूर से ही नज़र आ जाते हैं। तीनों में सबसे बड़ा मंदिर बीच वाला है जो क़रीब 150 फुट ऊँचा है और ये शिव को समर्पित है। इंडोनेशिया के सबसे अधिक जनसंख्या वाले द्वीप जावा के योग्यकार्ता में स्थित इस मंदिर को स्थानीय भाषा में रारा जोंग्गरंग के नाम से भी जाना जाता है। इतिहासकारों का कहना है कि प्रम्बानन में मुख्य मंदिरों की नींव मेदांग साम्राज्य के संजय राजवंश के राजा रकाई पिकातन ने रखी थी। इस मंदिर का निर्माण 850 ईसवीं में शुरू हुआ था जो 856 ईस्वी में पूरा हो गया था। इसके बाद संजय राजवंश के अन्य राजाओं ने इस मंदिर को विस्तार दिया जिनमे राजा लोकपाला व बलितुंग महाशंभु प्रमुख थे। प्राचीन जावा में 8वीं से 11वीं शताब्दी के दौरान ये साम्राज्य बहुत संपन्न था। रकाई पिकातन के बाद उनके उत्तराधिकारियों ने भी कई मंदिरों का निर्माण करवाया था। संजय राजवंश हिंदू धर्म को बहुत बढ़ावा देता था। हिंदू धर्म व्यापारियों, नाविकों, विद्वानों और पुरोहियों के ज़रिये पहली शताब्दी में इंडोनेशिया पहुँचा था। छठी शताब्दी से यहाँ जावा संस्कृति और हिंदू विचारों का विलय हुआ था जिससे यहाँ बौद्ध धर्म की अवधारणा बनी। इस तरह यहां इंडोनेशियई हिंदू धर्म ने जन्म लिया। स्थानीय लोग प्रम्बानन मंदिर के भवन निर्माण का श्रेय जावा की राजकुमारी को देते हैं। किवदन्तियों के मुताबिक़ लारा जोंग्गरंग नाम की एक राजकुमारी थी। माना जाता है कि ऐतिहासिक मेडंग राज्य के अर्ध-मिथकीय स्वरूप मेदांग कमुलन के राजा बक़ा की बेटी थी। बांडुंग बंदवासा नाम के राजकुमार ने जब राजा के सामने से लारा से विवाह करने का प्रस्ताव रखा तो राजा ने कहा कि अगर उसने युद्ध में उसे हरा दिया तो वह अपनी बेटी का हाथ उसे दे देगा। युद्ध में राजकुमार ने राजा को हरा दिया लेकिन राजकुमारी अपने पिता के हत्यारे से शादी नहीं करना चाहती थी लेकिन सीधे-सीधे मना करने से भी डर रही थी। ऐसे में राजकुमारी ने शर्त रखी कि वह उससे तभी शादी करेगी, जब वह एक ही रात में एक हज़ार मंदिर बना दे।

बांडुंग ने अपने पिता की मदद से मंदिर बनवाने के लिए आत्माओं की फ़ौज बुलवाई। अब राजकुमारी की समझ में नही आया कि वह क्या करे। उसकी एक दासी ने राजकुमारी को धान कूटने को कहा। जब राजकुमारी धान कूटने लगी, आसपास के मुर्ग़े जाग गये और बाँग देने लगे। आत्माओं को लगा कि सुबह हो गयी है और वे वापस लौट गयीं क्योंकि उन्हें सूरज की रौशनी से डर लगता था। मंदिरों का निर्माण अधूरा रह गया लेकिन जब राजकुमार को राजकुमारी की करतूत के बारे में पता चला कि तो उसने उसे पत्थर बनने का श्राप दे दिया। लेकिन भगवान शिव की कृपा से राजकुमारी एक मंदिर की सुंदर मूर्ति में परिवर्तित हो गयी। इस मंदिर का शुरूआती नाम शिवगृह था अर्थात भगवान शिव का घर। मंदिर के पास ओपक नदी बहती थी जिसकी दिशा को मंदिर निर्माण के लिए मोड़ दिया गया था ताकि मंदिर को और बड़ा स्थान मिल सके। इसके साथ ही बाद के राजाओं द्वारा इसे और विस्तार दिया गया व मुख्य मंदिर के आसपास अन्य छोटे मंदिर क्रमानुसार बनाये गये। लगभग एक सदी तक विभिन्न राजाओं के द्वारा इस मंदिर का निर्माण ज़ारी रखा गया और इसे विस्तार दिया गया। यह मंदिर इतना विशाल है कि आप इसका अनुमान बग़ैर देखे नहीं लगा सकते है। यहाँ कुल 240 छोटे व बड़े मंदिर थे। मंदिर का पूरा स्थल एक वर्ग के आकर में बनाया गया है जिसमे क्रमानुसार सभी मंदिरों को बनाया गया हैं। इसमें सबसे मुख्य और ऊँचा मंदिर भगवान शिव का है, इसलिए इसे शिव मंदिर या शिवगृह की संज्ञा दी गयी थी। इसमें सबसे पहले तीन मुख्य मंदिर है जो त्रिमूर्ति को समर्पित है। सबसे बड़ा मंदिर भगवान शिव को समर्पित है जो प्रम्बनन शिव मंदिर के एकदम केंद्र में स्थापित हैं। यह मंदिर सभी मंदिरों में सबसे ऊँचा व विशाल है। अन्य दो मुख्य मंदिर भगवान विष्णु व भगवान ब्रह्मा को समर्पित हैं। भगवान विष्णु का मंदिर शिवजी के उत्तर में व ब्रह्मा जी का मंदिर शिवजी के दक्षिण में स्थित है। इन तीनों मंदिर के मुख सूर्योदय की दिशा में अर्थात पूर्व दिशा में हैं। इसके बाद आते हैं तीन मंदिर जो इन तीन मंदिरों के ठीक सामने बने हैं। यह मंदिर भगवान ब्रह्मा, विष्णु व शिव के वाहनों को समर्पित हैं। भगवान शिव के सामने नंदी का, विष्णु के सामने गरुड़ का व ब्रह्मा के सामने हंस का मंदिर है। इन तीनों मंदिरों के मुख सूर्यास्त की दिशा में अर्थात पश्चिम दिशा में हैं। शिव मंदिर चौकोर क्षेत्र में फैला हुआ सबसे ऊँचा व विशाल मंदिर है। मंदिर धरातल पर ना होकर ऊँचाई पर स्थित हैं जिस पर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गयी हैं। सीढ़ियों से चढ़ने पर आप पाएंगे कि मंदिर को चारों ओर से एक मजबूत दीवार से घेरा गया हैं। मंदिर का मुख पूर्व दिशा की ओर हैं अर्थात इसमें पूर्वी दिशा से प्रवेश किया जा सकता है। मंदिर के बाहरी द्वार पर दोनों ओर दो कक्ष है जिनमे महाकाल व नन्दीश्वर की मूर्तियाँ स्थापित हैं। सीढ़ियाँ चढ़कर मंदिर में प्रवेश करने पर वहाँ पाँच कक्ष और मिलेंगे। इनमें से मुख्य कक्ष मंदिर के मध्य में स्थित है जो कि भगवान शिव को समर्पित है। मुख्य कक्ष के चारों और चारों दिशाओं में चार कक्ष हैं। मंदिर में प्रवेश करने पर हम पूर्वी कक्ष में प्रवेश करेंगे जो कि मुख्य कक्ष से जुड़ा हुआ है। मुख्य कक्ष में भगवान शिव को समर्पित तीन मीटर ऊँची मूर्ति हैं। इसमें शिव के मुकुट पर अर्द्धचंद्रमा, मस्तिष्क के मध्य में तीसरी आँख भी बनी हुई हैं। मूर्ति के चार हाथ हैं जिससे उन्होंने त्रिशूल, डमरू व जपमाला पकड़ी हुई हैं। पूर्वी दिशा के कक्ष में कोई मूर्ति नही हैं। उस कक्ष से केवल मुख्य कक्ष में प्रवेश किया जाता हैं। मुख्य मंदिर के अन्य तीन दिशाओं के कक्ष किसी ना किसी को समर्पित हैं। इसमें उत्तर दिशा के कक्ष में दुर्गा की महिषासुर मर्दिनी मूर्ति, दक्षिण में महर्षि अगस्त्य की मूर्ति व पश्चिम में भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित हैं। प्रकोष्ठों के बाहर मंदिर के चारों ओर एक परिक्रमा पथ है। परिक्रमा करते समय आपको मंदिर की बाहरी दीवारों पर नक़्क़ाशी तथा रामायण की कथा के पैनल दिखाई पड़ेंगे। इन पैनलों पर रामायण की घटनाओं के सुंदर चित्रण हैं। सन् 1584 में मध्य जावा में भीषण भूकंप आया था जिसमें मंदिर परिसर नष्ट हो गया। इसके बाद 19वीं शताब्दी में प्रम्बानन पर फिर ध्यान गया। बीसवीं शताब्दी के मध्य में प्रम्बानन में खुदाई हुई जिसमें मुख्य मंदिरों का पता चला। खुदाई के दौरान शिव मंदिर के बीच एक प्रीपिह (पत्थर का डिब्बा) मिला। ये डिब्बा कोयले, मिट्टी और जलाए गए पशु के अवशेषों के ढ़ेर के ऊपर रखा हुआ था। यहाँ सोने की पत्तियों के पत्तर भी मिले जिन पर वरुण (समुद्र के देवता) और पर्वत (पर्वत के देवता) का उत्कीर्णन था। अनेक जनश्रुतियों के अनुसार यहां क़रीब एक हज़ार मंदिर बनाये गये थे लेकिन पुरातत्विदों को सिर्फ़ क़रीब दो सौ चालीस मंदिरों की नींव ही मिली है। इन सैंकड़ों छोटे मंदिरों को कैंडी परवारा (संरक्षक या अनुपूरक मंदिर) कहते हैं। इंडोनेशिया के इस एक हज़ार साल पुराने प्रम्बानन मंदिर में बहुत बड़ी संख्या में लोग आते हैं जिसे भारत के बाहर हिंदू धर्म का प्रतीक माना जाता है। सन् 2019 में मंदिर परिसर को शुद्ध और पवित्र करने के लिए अभिषेक किया गया था। इसका उद्देश्य मंदिर को उसका प्राचीन सांस्कृतिक महत्व वापस दिलाना और हिन्दू धार्मिक स्थल के रूप में उसे फिर स्थापित करना था। प्रम्बानन के मंदिर दक्षिण पूर्वी एशिया में हजरों वर्ष पुरानी सनातन भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठतम उदाहरण है, जिनमें आस्था स्थापत्य के माध्यम से प्रकट होती है।



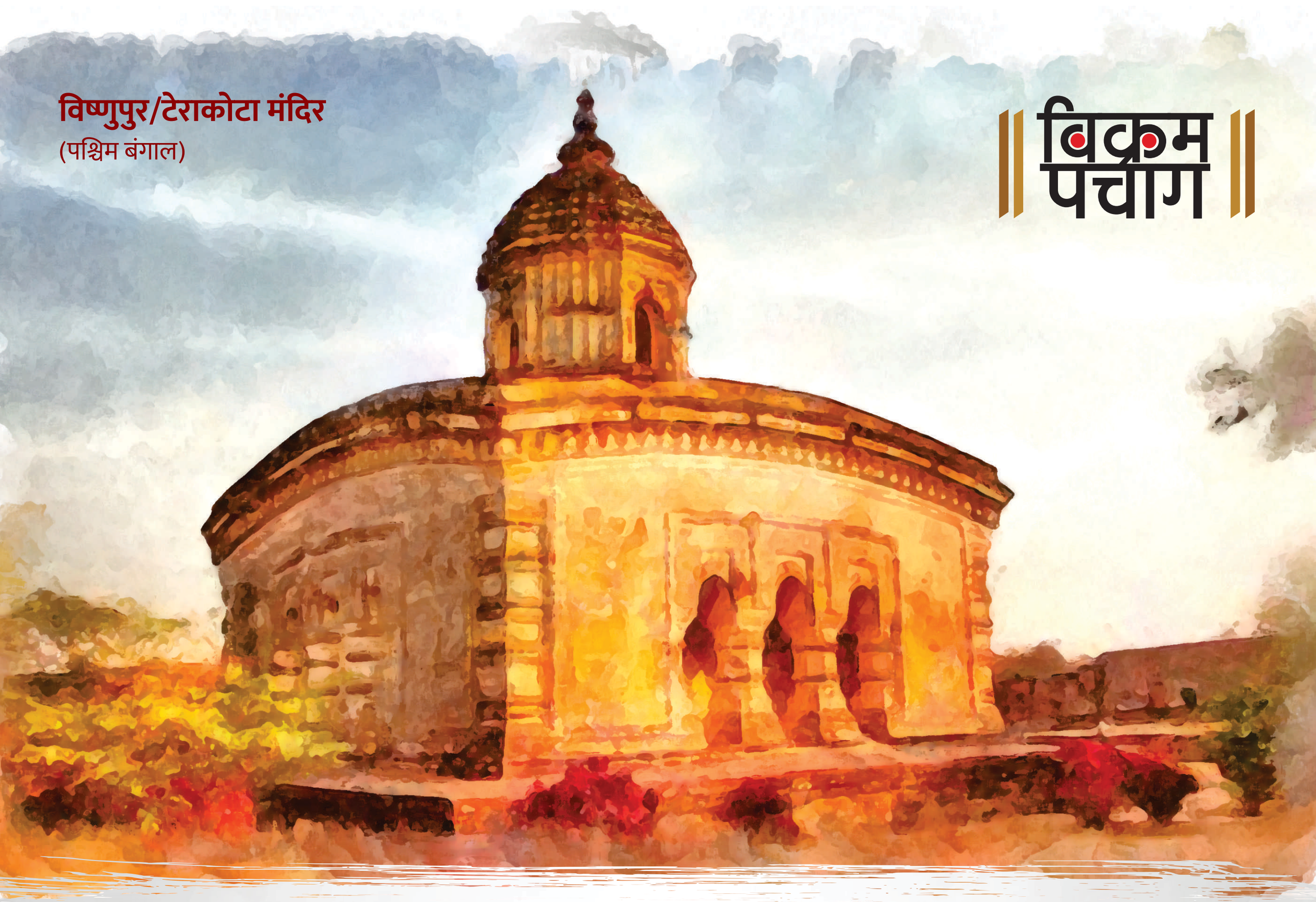

विष्णुपुर/टेराकोटा मंदिर
(पश्चिम बंगाल)

विक्रम पंचांग

हेमंत ऋतु
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष
13 दिसम्बर से 26 दिसम्बर 2023 तक



सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०
'नल' नाम संवत्सर
• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४
राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

हेमंत-शिशिर ऋतु
पौष कृष्ण पक्ष
27 दिसम्बर 2023 से 11 जनवरी 2024 तक

	धनिष्ठा ००/२१ **17** पंचमी **दिसम्बर** श्रीराम जानकी विवाहोत्सव	कृतिका १०/२८ **24** त्रयोदशी **दिसम्बर** प्रदोष व्रत	**रविवार**	मघा दिन/रात **31** चतुर्थी **दिसम्बर**	विशाखा ०८/३१ **07** एकादशी **जनवरी**
	शत ४७/४३ **18** षष्ठी **दिसम्बर** चम्पाषष्ठी, स्कन्दषष्ठी गुरु घासीदास जयंती	रोहि १४/५९ **25** चतुर्दशी **दिसम्बर** मदनमोहन मालवीय जयंती अटल बिहारी वाजपेयी जयंती	**सोमवार**	मघा २९/१७ **01** पंचमी **जनवरी** ऊर्जा बचत दिवस	अनुराधा ३०/३२ **08** द्वादशी **जनवरी**
	पू.भा. २९/४१ **19** सप्तमी **दिसम्बर** मित्र (भानु)सप्तमी संत तारण तरण जयंती	मृगशिर १४/५९ **26** पूर्णिमा **दिसम्बर** पूर्णिमा पुण्य श्री दत्तात्रेय जयंती श्री सत्यनारायण व्रत	**मंगलवार**	पू.फा. ०७/३६ **02** षष्ठी **जनवरी**	ज्येष्ठा २८/०३ **09** त्रयोदशी **जनवरी** भौमप्रदोष व्रत मास शिवरात्रि व्रत
ज्येष्ठा १७/२२ **13** प्रतिपदा **दिसम्बर**	उ.भा. २९/४३ **20** अष्टमी **दिसम्बर** श्री दुर्गाष्टमी		**बुधवार**	आर्द्रा १७/४० **27** प्रतिपदा **दिसम्बर**	उ.फा. ०९/१७ **03** सप्तमी **जनवरी**	मूल २५/१४ **10** चतुर्दशी **जनवरी**
मूल १५/०१ **14** द्वितीया **दिसम्बर** चन्द्रदर्शन	रेवती ३०/१६ **21** नवमी **दिसम्बर**		**गुरुवार**	पुनर्वसु २०/३३ **28** द्वितीया **दिसम्बर**	हस्त १०/१५ **04** अष्टमी **जनवरी** कालाष्टमी श्री हनुमान अष्टमी रूकमणी अष्टमी	पूषा २५/१४ **11** अमावस्या **जनवरी** पौषी अमावस्या
पू.षा. १२/४१ उ.षा. १०/३१ **15** तृतीया **दिसम्बर**	अश्वि ०७/१६ **22** दशमी **दिसम्बर** गणित दिवस मोक्षदा एकादशी व्रत (राजगरा)		**शुक्रवार**	पुष्य २३/३३ **29** द्वितीया **दिसम्बर**	चित्रा १०/२६ **05** नवमी **जनवरी**	
श्रवण ०८/०५ **16** चतुर्थी **दिसम्बर** श्री विनायक चतुर्थी व्रत	भरणी ०८/४१ **23** एकादशी द्वादशी **दिसम्बर** गीता जयंती मोक्षदा एकादशी व्रत (वैष्णव)		**शनिवार**	श्लेषा २६/३२ **30** तृतीया **दिसम्बर** श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०/५२	स्वाति ०९/५० **06** दशमी **जनवरी** सफला एकादशी (तील, शक्कर, गुड़)	

विष्णुपुर/टेराकोटा मंदिर (पश्चिम बंगाल)

कभी मल्ल राजाओं की राजधानी रहा विष्णुपुर बांकुड़ा (पश्चिम बंगाल) का शहर टेराकोटा,मृणमयी (आग में पकी मिट्टी) के मंदिरों के लिए विश्व विख्यात है। मल्ल राजाओं के नाम पर इसे 'मल्लभूमि' भी कहा जाता था। एक समय में विष्णुपुर बंगाल का सांस्कृतिक केंद्र भी होता था। कहते हैं कि ईसा पूर्व 994 में इसका नाम विष्णुपुर पड़ा। विष्णुपुर के रासमंच मंदिर, जोड़ बांग्ला मंदिर, मदन मोहन मंदिर, रघुनाथ जीऊ मंदिर, नूतन महल, विष्णुपुर हवा महल आदि को देखने पर साफ झलकता है कि अतीत में विष्णुपुर के मंदिर कितने खूबसूरत रहे होंगे। विष्णुपुर शान-शौकत और आध्यात्मिक शहर माना जाता था। समुद्र गुप्त जैसे नामी हिंदू राजाओं ने विष्णुपुर को आध्यात्मिक नगर बनाने में काफी योगदान दिया था। यहाँ लगभग एक हजार वर्षों तक इन राजाओं का शासन रहा। उनके शासनकाल में विष्णुपुर में टेराकोटा शिल्प व स्थापत्य कला को तो बढ़ावा मिला ही, साथ ही भारतीय शास्त्रीय संगीत का विष्णुपुर घराना भी बहुत फला-फूला। वैष्णव धर्म के अनुयायी इन मल्ल राजाओं ने 17वीं व 18वीं सदी में जो प्रसिद्ध टेराकोटा मंदिर बनवाए थे, वे आज भी शान से सिर उठाये खड़े हैं। यहाँ के मंदिर बंगाल की वास्तुकला की जीती-जागती मिसाल हैं। पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता से कोई दो सौ किमी दूर बसे इस शहर को मल्ल राजा वीर हंबीर और उनके उत्तराधिकारियों- राजा रघुनाथ सिंघा व वीर सिंघा ने विष्णुपुर को तत्कालीन बंगाल का प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र बनाने में अहम भूमिका निभाई थी। यहां स्थित रासमंच पिरामिड की शक्ल में ईंटों से बना सबसे पुराना मंदिर है। जिसका निर्माण राजा वीर हंबीरा ने इसका निर्माण कराया था। उस समय रास उत्सव के दौरान पूरे शहर की मूर्तियां इसी मंदिर में लाकर रख दी जाती थीं और दूर-दूर से लोग इनको देखने के लिए उमड़ पड़ते थे। इस मंदिर में टेराकोटा की सजावट की गयी है। इसकी दीवारों पर रामायण, महाभारत व पुराणों के श्लोक खुदाई के जरिए लिखे गए हैं। बंगाल में पत्थरों की आपूर्ति कम होने के कारण पकी मिट्टी की तैयार ईंटें एक विकल्प बनीं और इसके साथ ही एक अनूठे शिल्प 'टेराकोटा' का जन्म हुआ। 17वीं शताब्दी में कला अपने उत्थान के चरम पर पहुँची। राजा जगत मल्ल और उनके वंशजों ने टेराकोटा के भित्ति चित्रों और दीवारों पर उकेरी गयी नक्काशी के साथ कई मंदिरों का निर्माण कराया। बंगाल में उत्खनन में बांगड़,वीरभानपुर, चंद्रकेतुगढ़,तमलुक भरतपुर सहित ढीपी,राजबरीदंगा और मंगलकोट में टेराकोटा शिल्प मिले हैं। इस जगह का इतिहास बहुत ही प्राचीन है, क्योंकि यहाँ पर पूरा पाषण काल के कई अवशेष प्राप्त हुए है. यहाँ पर बसे पूर्व चौथी शताब्दी में रारह राजवंश का आधिपत्य रहा था, बाँकुरा में उड़ीसा की कलिंग वास्तुकला में निर्मित, रेखा देओल शैली के कुछ उत्कृष्ट उदाहरण हैं, (उदाहरण के लिए बहुलारा में)। लेकिन बंगाल शैली का वास्तुकला है जो इस जिले में उल्लेखनीय है। 1643 में रघुनाथ सिंह द्वारा निर्मित "श्यामराय मंदिर" बंगाल में संभवतः सबसे पुराना 'पंचरत्न' मंदिर है। झुका हुए घुमावदार छतों के साथ, इसमें केंद्र में एक, तथा प्रत्येक कोने में एक-एक 'पीढ़ा देउल' मौजूद है। यह मंदिर, बंगाल शैली की वास्तुकला का एक बढ़िया उदाहरण है। इस मंदिर की वास्तुकला यह दर्शाता है कि देवताओं को मनुष्य के करीबी के तौर पर देखा जाता था और ऐसे मंदिरों में रखा गया था जो सामान्य मानव निवास (कच्चे छतों वाली झोंपड़ियाँ) के समान थे। विष्णुपुर में चार अलग-अलग प्रकार के मंदिरों को अलग किया जा सकता है। पहले एक घुमावदार छत पर एक वर्ग है और मल्लेश्वर मंदिर द्वारा प्रतिनिधित्व किया है। दूसरी ओर एक घुमावदार छत पर एक टावर है इसके सर्वोत्तम उदाहरण ईद में मदन मोहन मंदिर हैं और लेटेला लालजी और राधा श्याम मंदिरों में हैं। 'पंचरत्न' मंदिर में घुमावदार छत पर पाँच टावर हैं सर्वश्रेष्ठ उदाहरण श्याम राय ईंट में मंदिर और लेटेराइट में मदन गोपाल मंदिर हैं। चौथा प्रकार जोर बंगाला प्रकार है, जिसकी आकार दो इमारतों की तरह होती है, जैसे कि एक ठेठ बंगाल झोपड़ी एक साथ एक छोटे से बुर्ज के साथ मिलकर आती है। वास्तुकला दृष्टिकोण से यह सबसे दिलचस्प है। श्याम राय मंदिर में नक़्क़ाशीदार टाइलों का बेहतरीन नमूना है। विष्णुपर के समाज और संस्कृति में इन मंदिरों की महत्व का अंदाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है, की इतने सुसम्पन्न और मनोहर मन्दिरों को बनवाने के बावजूद, विष्णुपर के शक्तिशाली राजकुटुंब एक सरल, विनयशील, एक मंज़िला महल में रहा करते थे, जोकि तत्कालीन बंगाल के समय छोटे-बड़े ज़मींदारों की हवेलियों के सामने भी कुछ नहीं था। यहाँ तक की विष्णुपर के सुरक्षा दुर्ग और किलों को भी विशेष कर, इन मंदिरों की सुरक्षा को ध्याम में रखते हुए बनाया गया था। भारतीय मूर्तिकला ने सिंधु घाटी सभ्यता (पत्थर और धातु की मूर्तिकला के साथ दुर्लभ होने के साथ) के रूप में टेराकोटा का भारी उपयोग किया था। गुप्तकाल में और इसके बाद की शताब्दियों में टेराकोटा मूर्तिकला की कई जोरदार स्थानीय लोकप्रिय परंपराएं आज भी सक्रिय हैं, जैसे बांकुरा विष्णुपुर का मन्दिर स्थापत्य। विष्णुपर में, पश्चिम बंगाल के किसी भी क्षेत्र या शहर से अधिक मंदिर हैं, जोकि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक लिहाज़ से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं तथा राढ़ क्षेत्र की विशिष्ठ ऐतिहासिक वास्तुकला के बेशकीमती मिसाल हैं। यहाँ के अधिकांश मंदिर वैष्णव पंथ से सम्बंधित हैं, जबकि हालाँकि कुछ पुराने मंदिर, मखरैली मिट्टी के बने हैं, परंतु विष्णुपर में अनेक ईंट-कृत मंदिर हैं, जिनमें टेराकोटा की उत्कृष्ट नक्काशियाँ की हुई हैं। विष्णुपुर को दुनिया में मृणमयी मन्दिरों का एक मूल्यवान व ऐतिहासिक स्थान माना जाता है। शैली और बनावट की दृष्टि से विष्णुपुर के मंदिरों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है- 'देउल', 'चाला' और 'रत्न शैली' के मन्दिर । इन मन्दिरों के अलावा शुरूआती दौर में निर्मित विष्णुपुर का एक पुराना स्मारक बीर हम्बीर का 'रासमंच' अपनी अद्भुत बनावट के कारण अद्वितीय है। 'देउल' प्रकार के मंदिरों में उत्तर भारत के नागर शैली की तरह ऊंचा शिखर होता है। इस तरह के मंदिर उड़ीसा, मध्यप्रदेश और उत्तर भारत के अनेक भागों में तो पाये गये हैं किन्तु बंगाल में इनकी संख्या कम है। बांकुरा जिले में इस तरह के सिर्फ दो मन्दिर हैं- एक बहुलरा में और दूसरा सोनातोपल में। दोनों ही भव्य एवं आकर्षक हैं। विष्णुपुर के मन्दिर देखने में बहुत सुन्दर हैं। खुले आसमान में ढलुऐ छतों से उभरता हुआ शिखर एक अलौकिक सौन्दर्य का सृजन करता है। वास्तुकला की दृष्टि से वहां के मन्दिर अद्वितीय तो हैं ही साथ ही इतने अलंकृत हैं कि मन्दिरों की शिल्प शोभा देखते ही बनती है। इसके विशाल स्तम्भों, खिलान और दीवारों के ऊपर व्यापक साज-सज्जा की गई है।

इस अलंकरण को दो भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम वर्ग में वे पैनल आते हैं जिनपर फूल पत्तियां, पशु पक्षी तथा ज्यामितीय अलंकरण है। यहाँ नन्हे-नन्हें मन्दिरों को भी डिजाइन के रूप में पैनल के अन्दर अलंकृत किया है। दूसरे तरह के अलंकरणों में रामायण और कृष्ण लीला जैसी पौराणिक कहानियों के दृश्य हैं। इन पैनलों के अतिरिक्त कुछ मानव मूर्तियाँ,तत्कालीन सामाजिक जीवन, दैनंदिन जीवनधारा पर आधारित दृश्य, शिकार के दृश्य, घुड़सवारी, बैलगाड़ी और पालकी के दृश्य भी अंकित हैं। रघुनाथ सिंह द्वारा निर्मित कृष्ण और राधा को समर्पित- श्यामराय मन्दिर पंचरत्न शैली का है। इस मन्दिर की दीवारों में अलंकृत मूर्तियाँ अदभुत हैं। आठचाला खरबांग्ला मंदिर की बाहरी दीवारें अलंकृत हैं जबकि मदन मोहन की भीतरी दीवारें। केवल श्याम राय मन्दिर ही ऐसा है जिसकी बाहरी दीवारें, भीतरी दीवारें, छत सभी पूर्णरूप से और बहुत ही कलात्मक ढंग से सज्जित हैं। बंगाल में एक स्वतन्त्र मन्दिर शैली विकसित हुई जिस पर कुछ हद तक उत्तर भारतीय प्रभाव था। विष्णुपुर के मन्दिर अधिकांशतः इसी बंगाल शैली में बनाये गये हैं। यहाँ कुछ 'देउल' प्रकार के मन्दिर भी हैं जिससे साबित होता है कि बंगाल के स्थापित विविध शैलियों के मन्दिर बनाने में दक्ष थे।





विक्रम पंचांग

महाबलिपुरम के तटीय मंदिर

शिशिर ऋतु

पौष शुक्ल पक्ष

12 जनवरी से 25 जनवरी 2024 तक



सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०

'नल' नाम संवत्सर

• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४

राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

शिशिर ऋतु

माघ कृष्ण पक्ष

26 जनवरी से 09 फरवरी 2024 तक

	श्रवण १६/४६ **14** जनवरी तृतीया चतुर्थी श्री विनायक चतुर्थीव्रत	भरणी १४/२७ **21** जनवरी एकादशी	**रविवार**		पू.फा. दिन/रात **28** जनवरी तृतीया	स्वाति १९/१७ **04** फरवरी नवमी
	धनिष्ठा १४/३१ **15** जनवरी पंचमी मकर संक्राती	कृतिका १६/२९ **22** जनवरी द्वादशी	**सोमवार**		श्लेषा ०८/५९ **29** जनवरी चतुर्थी श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २१/२०	विशाखा १८/४० **05** फरवरी दशमी संत रविदास जयंती
	शत १२/४९ **16** जनवरी षष्ठी	रोहिणी १८/५१ **23** जनवरी त्रयोदशी भौम प्रदोष व्रत नेताजी सुभाषचंद्र बोस जयंती	**मंगलवार**		मघा ११/४८ **30** जनवरी चतुर्थी महात्मा गांधी पुण्य तिथि	अनुराधा १७/१७ **06** फरवरी एकादशी कवि प्रदीप जयंती लता मंगेशकर जयंती षडतीला एकादशी (खोपरा)
	पू.भा. ११/४६ **17** जनवरी सप्तमी	मृगशिर २१/२७ **24** जनवरी चतुर्दशी	**बुधवार**		पू.फा. १४/२३ **31** जनवरी पंचमी	ज्येष्ठा १५/१४ **07** फरवरी द्वादशी प्रदोषव्रत
	उ.भा. ११/२६ **18** जनवरी अष्टमी श्री दुर्गाष्टमी	आर्द्रा २४/१४ **25** जनवरी पूर्णिमा पूर्णिमा व्रत श्री शांकम्भरी नवरात्र पूर्ण	**गुरुवार**		उ.फा. १६/३३ **01** फरवरी षष्ठी	मूल १५/१४ **08** फरवरी त्रयोदशी मास शिवरात्रि व्रत
पू.षा. २२/१८ **12** जनवरी प्रतिपदा स्वामी विवेकानंद जयंती	रेवती ११/४९ **19** जनवरी नवमी		**शुक्रवार**	पुनर्वसु २७/०६ **26** जनवरी प्रतिपदा गणतंत्र दिवस	हस्त १८/१० **02** फरवरी सप्तमी कालाष्टमी श्री रामानंदाचार्य जंयती	पू.षा. ०५/५१ उ.षा. ५७/५६ **09** फरवरी चतुर्दशी अमावस्या मौनी अमावस्या संत तुकाराम जयंती
उ.षा. १९/२५ **13** जनवरी द्वितीया चन्द्रदर्शन	अश्वि १२/५१ **20** जनवरी दशमी		**शनिवार**	पुष्य ३०/०३ **27** जनवरी द्वितीया	चित्रा १९/०६ **03** फरवरी अष्टमी	

महाबलिपुरम के तटीय मंदिर

महाबलीपुरम का नाम महान दानवीर असुर राजा महाबली के नाम पर रखा गया था। महाबली ने विष्णु के वामन अवतार को तीन पग भूमि दान में दी थी। पुराणों में वर्णित है कि राजा बलि का राज्य संपूर्ण दक्षिण भारत में था। उन्होंने महाबलीपुरम को अपनी राजधानी बनाया था। कालांतर में पल्लव राजा नरसिंह वर्मन, जिन्हें मामल्ला के नाम से जाना जाता था उन्होंने महाबलीपुरम का नाम मामल्लापुरम रख दिया था। राजा नरसिंह वर्मन के द्वारा महाबलीपुरम का नाम मामल्लापुरम रखने पर भी आज लोग इस स्थान को महाबलीपुरम के नाम से ही ज्यादा जानते हैं। 700-728 ई. में निर्मित यहाँ के तट मंदिरों को दक्षिण भारत के सबसे प्राचीन मंदिरों में माना जाता है जिसका संबंध आठवीं शताब्दी से है। तटीय मन्दिर को ये नाम इसलिये मिला क्योंकि ये बंगाल की खाड़ी के तट पर ही स्थित हैं। नरसिंहवर्मन को महाबलीपुरम में शोर मंदिर, ईश्वर और मुकुंद मंदिरों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है, दक्षिण आरकोट में पानमलाई मंदिर, साथ ही कैलासनाथर मंदिर। नरसिंहवर्मन का शासनकाल महान् साहित्यिक और स्थापत्य प्रगति का काल था। यहां के यह मन्दिर द्रविड वास्तुकला के श्रेष्ठ उदाहरण है।

महाबलीपुरम के समुद्र तट पर स्थित शोर मंदिर मंदिर प्राचीन वास्तु कला का उदहारण है। भगवान शिव और विष्णु को समर्पित शोर मंदिर का निर्माण लगभग इस स्टोन टेम्पल इसलिए कहते हैं क्योंकि मंदिर वाला भाग ग्रेनाइट पत्थर से बना हुआ है जो देखने में बहुत ही सुंदर दिखता है। शोर मंदिर एक खूबसूरत पाँच मंजिला रॉक-स्ट्रक्चरल संरचना हैं जिसमे तीन दर्शनीय मंदिर बने हुए हैं। यह मंदिर भगवान शिव और विष्णु को समर्पित हैं। शोर मंदिर की ऊंचाई साठ फिट हैं जोकि एक पिरामिडनुमा संरचना है। पचास फीट वर्गाकार क्षेत्र में बना यह दर्शनीय मंदिर द्रविड़ वास्तुशैली का अद्भुत उदहारण हैं और यह भारत के सबसे खूबसूरत पत्थर मंदिरों में से एक हैं। मंदिर के अन्दर स्थित गर्व गृह में शिवलिंग की पूजा अर्चना बड़ी धूमधाम से की जाती हैं। मंदिर के पीछे की ओर दो दर्शनीय तीर्थ स्थल हैं जोकि क्षत्रियसिम्रेश्वर और भगवान विष्णु को समर्पित है। भगवान श्री हरि विष्णु को शेषनाग पर झुकते हुए दिखाया गया हैं जोकि हिन्दू धर्म में चेतना के प्रतीक के रूप में जाना जाता हैं। शोर मंदिर की संरचना में मंदिर के अन्दर और बाहर दोनों तरफ खूबसूरत नक़्क़ाशीदार मूर्तियाँ चित्रित की गयी हैं। नंदी की खूबसूरत संरचना वाक़ई दर्शनीय हैं। शोर मंदिर के संरचना को ऐसे बनाया गया हैं जिससे सूर्य की पहली किरण मंदिर पर पड़े और सूर्यास्त के वक्त मंदिर की खूबसूरत छवि पानी में दिखाई दे। शोर मंदिर का सम्बन्ध पौराणिक कथाओं से भी जुड़ा हैं। माना जाता हैं कि राक्षस राज हिरण्यकश्यप और उनके पुत्र प्रहलाद का सम्बन्ध इस मंदिर हैं। कहते हैं कि भगवान श्री हरि विष्णु ने नरसिंह अवतार धारण करके इस स्थान पर हिरण्यकश्यप का बध किया था। हिरण्यकश्यप की मृत्यु के बाद प्रह्लाद राजा बना। एक कहानी प्रचलित हैं जिसके अनुसार राजा प्रह्लाद के पुत्र राजा बली ने महाबलीपुरम के इस दर्शनीय मंदिर की स्थापना की थी। शोर मंदिर को कई खंडो में विभाजित किया गया हैं और प्रत्येक खंड में एक अलग देवी-देवता का स्थान हैं। मंदिर की संरचना में सुन्दर चित्रकारी, आकर्षित मूर्ति और शेरो के चित्र देखने को मिलते हैं। मंदिर के प्रांगण में सात पगोडा की पत्थर की मूर्तियाँ हैं जिन्हें देखना अद्भुत है। इस मंदिर की अलग ही कथा है। महाबलीपुरम के समुद्री तट पर दूसरा मंदिर पंच रथ या पंच पाँडवों का रथ नामक मंदिर है। पंच रथ के पाँच स्मारकों को पूरी तरीके से रथ के समान बनाया गया है जो सभी ग्रेनाइट पत्थर को खोद-खोद कर बनाए गए हैं। इसमें महाभारत की कहानी को दर्शाते हुए कलाकृतियाँ देखने को मिलती हैं। यह सभी रात बड़े से छोटे आकार में इस प्रकार से हैं- धर्मराज रथ, भीम रथ, अर्जुन रथ, नकुल एवं सहदेव रथ और द्रौपदी रथ। भगवान शिव से पशुपति अस्त्र हासिल करने के लिए अर्जुन की तपस्या की तस्वीरें पत्थरों पर उकेरी गयी हैं। यहाँ जो रथों का निर्माण हुआ, उनकी रचना शैली से यह स्पष्टत: ज्ञात होता है कि इसका निर्माता मूलतः मूर्तिकलाकार रहा होगा। रथों में वास्तुकला एवं मूर्तिकला एक-दूसरे के पूरक हैं। रथों में आलों का आधिक्य है जो ब्राह्मण देव मूर्तियों से अलंकृत हैं। अन्त भाग में अनेक मूर्तिपट्ट हैं जो पौराणिक कथाओं का चित्रण करते हैं। इन मूर्तियों में जो गति, भाव, संकेत एवं लय है वह अमरावती कला से प्रभावित है। पल्लव मूर्तिकला के वर्ण्य विषय मुख्यतः ब्राह्मण देवता, पौराणिक कथाएँ, पाश्र्वदेवता, प्राकृतिक दृश्य, वन्य पशु तथा किंचित राजनीतिक व्यक्तित्व हैं। पल्लव शिल्पियों ने मन्दिरों में शासकों तथा उनकी महारानियों की मूर्तियों का भी निर्माण किया है जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। कलाकारों ने सर्वाधिक महत्व शिव को प्रदान किया है। पल्लव ने सिंहवाहिनी शक्ति को तो वंश शक्ति के रूप में चित्रित किया है। शिव-पार्वती की मूर्तियाँ विविध मुद्राओं में प्राप्त होती हैं। यहां चार भुजाओं वाली भगवान शिव की भी मूर्ति है, जिसमें शिवजी का निचला हाथ वरद-मुद्रा में दिखाया गया है, जिससे वह अर्जुन को वरदान दे रहे हैं। मछली के पीठ के आकार के विशाल शिलाखंड पर ईश्वर, मानव, पशुओं और पक्षियों की आकृतियाँ उकेरी गयी हैं। यह मंदिर महाबलिपुरम के प्रारंभिक पत्थरों को काटकर बनाये गये मंदिरों में एक है। मंदिर की दीवारों पर ग्रामीण जीवन की झलक देखी जा सकती है। एक चित्र में भगवान कृष्ण को गोवर्धन पर्वत को उँगली पर उठाए दिखाया गया है। गंगा अवतरण के स्मारक महाबलीपुरम के कोरोमोंडल तट पर काँचीपुरम जिले में स्थित हैं। एक बहुत विशाल स्मारक सुंदर कलाकारी को दर्शाता है। यह एक बड़ा पत्थर है जिस पर गंगा की उत्पत्ति का बहुत ही अद्भुत चित्रण किया गया है। मामल्लपुरम के तट पर बना जलशयन स्वामी का मंदिर तराशे हुए पत्थरों से बनाया गया है, जिसमें उत्कृष्ट शिल्प कौशल का प्रयोग है। उसी के शासनकाल में बना काँचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर भी बेजोड़ है। इस मंदिर में तीन अलग-अलग हिस्से हैं एक गर्भगृह है, जिसमें पिरामिड के आकार का स्तंभ है, एक मंडल है और एक आयताकार प्राँगण, जिसमें कई देवताओं के छोटे-छोटे मंदिर बने हुए हैं। इसे आरंभिक द्रविड़ शैली का एक उल्लेखनीय निर्माण माना जा सकता है। यह भी कहा जा सकता है कि आरंभिक पल्लव मंदिरों में द्रविड़ शैली को निश्चित स्वरूप और अनूठापन प्राप्त हुआ। इन मन्दिरों से टकराती सागर की लहरें एक अनोखा दृश्य उपस्थित करती हैं। पल्लव राजाओं के शासन काल के दौरान कई महान् कवि, नाटककार, कलाकार, कारीगर, विद्वान और संत हुए थे। कारीगरी के मामले में पल्ववों का साम्राज्य अग्रिण था। प्राचीन काल में दक्षिण भारत में मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं थे, बल्कि सामुदायिक जीवन का एक हिस्सा बन गये थे, यहां तक कि सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक महत्व के मामलों पर भी चर्चा की गयी थी। ये संरचनाएं नृत्य, संगीत और नाटक जैसी प्रदर्शनकारी कलाओं के विकास का केंद्र भी बनीं। ये मंदिर शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े थे और छात्रों को यहाँ धर्म और आध्यात्मिक जीवन में ज्ञान प्राप्त हुआ था।

पल्लव नरेशों का शासन-काल कला एवं स्थापत्य की उन्नति के लिए प्रसिद्ध है। वस्तुतः उनकी वास्तु एवं तक्षण कला दक्षिण भारतीय कला के इतिहास में सर्वाधिक गौरवशाली अध्याय है। पल्लव वास्तु कला ही दक्षिण की द्रविड़ कला शैली का आधार बनी। उसी से दक्षिण भारतीय स्थापत्य की तीन प्रमुख अंगों का जन्म हुआ मण्डप, रथ तथा विशाल मन्दिर। मामल्लपुरम की शिल्प विधि दो अवस्थाओं में प्राप्त होती है। सर्वप्रथम कलाकार अपनी छेनी से नियमित एवं आवश्यकतानुकूल ढाँचे में पूरी शिला को आकार मूलक संरचना में विन्यस्त करता था। पुनः संरचना को चौकोर फलक, या विविक्त स्थान में आकृतियों को चपटे तल पर इस प्रकारनियोजित करता था जैसे कि मूर्ति अनगढ़ चट्टान के अन्दर से निकल रही हो।

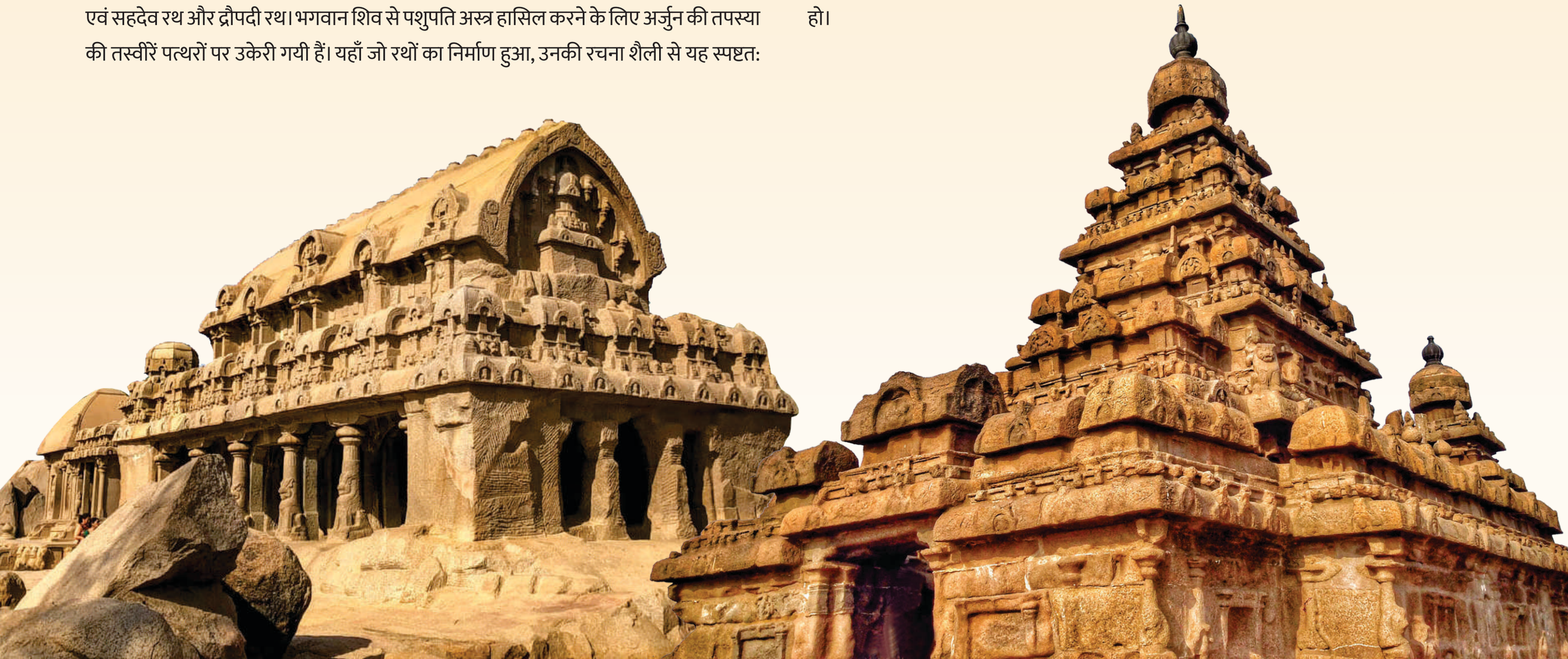



विक्रम पंचांग

शिशिर ऋतु
माघ शुक्ल पक्ष
10 फरवरी से 24 फरवरी 2024 तक



सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०
'नल' नाम संवत्सर
• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४
राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

शिशिर-बसंत ऋतु
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
25 फरवरी से 10 मार्च 2024 तक

	शत २२/०३ **11** फरवरी द्वितीया — चन्द्रदर्शन	रोहिणी २४/४१ **18** फरवरी नवमी — गुप्तनवरात्र पूर्ण	**रविवार**	पू.फा. २०/१२ **25** फरवरी प्रतिपदा	ज्येष्ठा २४/४४ **03** मार्च सप्तमी — कालाष्टमी	**10** मार्च अमावस्या — अमावस्या पुण्य
	पू.भा. २०/११ **12** फरवरी तृतीया — गौरी तृतीय वरदतिकुन्दचतुर्थी व्रत	मृगशिर २७/२४ **19** फरवरी दशमी — छत्रपति शिवाजी जयंती	**सोमवार**	उ.फा. २२/२४ **26** फरवरी द्वितीया	मूल २२/५० अनुराधा २६/०० **04** मार्च अष्टमी	
	उ.भा. १९/०३ **13** फरवरी चतुर्थी — श्री विनायक चतुर्थी व्रत	आर्द्रा ३०/१९ **20** फरवरी एकादशी — जया एकादशी (गन्ने का रस)	**मंगलवार**	हस्त २४/१५ **27** फरवरी तृतीया	पू.षा. २०/२६ **05** मार्च नवमी दशमी	
	रेवती १८/४३ **14** फरवरी पंचमी — श्री वसंत पंचमी श्री सरस्वती पूजन	पुनर्वसु ०९/१६ **21** फरवरी द्वादशी — भीष्म द्वादशी	**बुधवार**	हस्त २४/१५ **28** फरवरी चतुर्थी — श्री संकष्टी चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय २१/२७	उ.षा. १७/४० **06** मार्च एकादशी — विजया एकादशी (पेड़ा)	
	अश्वि १९/११ **15** फरवरी षष्ठी	पुष्य १२/२२ **22** फरवरी त्रयोदशी — प्रदोष व्रत	**गुरुवार**	चित्रा २६/२६ **29** फरवरी पंचमी — श्री महाकालेश्वर नवरात्र प्रा.	श्रवण १४/४४ **07** मार्च द्वादशी	
	भरणी २०/२५ **16** फरवरी सप्तमी	श्लेषा १५/०१ **23** फरवरी चतुर्दशी	**शुक्रवार**	स्वाति २६/२६ **01** मार्च षष्ठी	धनिष्ठा ११/४७ श्रवण २७/२२ **08** मार्च त्रयोदशी — प्रदोष व्रत महाशिवरात्रि व्रत	
धनिष्ठा २४/२९ **10** फरवरी प्रतिपदा — गुप्तनवरात्र विधान प्रा.	कृतिका २२/१८ **17** फरवरी अष्टमी — श्री दुर्गाष्टमी	मघा १७/४२ **24** फरवरी पूर्णिमा — गुरू रविदास जयंती दाण्डारोपिणी पूर्णिमा व्रत	**शनिवार**	विशाखा २६/३५ **02** मार्च षष्ठी	पू.भा. २०/११ **09** मार्च चतुर्दशी	

चौंसठ योगिनी मंदिर मितावली

मुरैना के समीप मितावली नामक स्थान पर स्थित चौंसठ योगिनी मंदिर प्राचीन और रहस्यमयी है। भारत के सभी चौंसठ योगिनी मंदिरों में यह इकलौता मंदिर है जो अपने अद्भुत स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर का निर्माण कच्छप राजा देवपाल ने 1323 ई (विक्रम संवत 1383) में करवाया था। इस मंदिर में सूर्य के गोचर के आधार पर ज्योतिष और गणित की शिक्षा दी जाती थी जिसका यह मुख्य केंद्र था। कहा जाता है कि यह भगवान शिव का मंदिर है जिसकी वजह से लोग तंत्र-मंत्र सीखने के लिए यहाँ आते थे। इस अद्भुत मंदिर का निर्माण क़रीब सौ फीट की ऊँचाई पर किया गया है और पहाड़ी पर स्थित यह गोलाकार मंदिर किसी उड़न तश्तरी की तरह नजर आता है। यह मंदिर एक वृत्ताकार आधार पर निर्मित है जिसमें चौंसठ कक्ष हैं। मध्य में एक खुला हुआ मण्डप है। यह इस मंदिर तक पहुँचने के लिए दो सौ सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। इस मंदिर के बीच में एक खुले मंडप का निर्माण किया गया है जिसमें एक विशाल शिवलिंग स्थापित है। बताया जाता है कि यह मंदिर सात सौ साल पुराना है। चौंसठ योगिनी मंदिर के हर कमरे में शिवलिंग और देवी योगिनी की मूर्ति स्थापित थी जिसकी वजह से इस मंदिर का नाम चौंसठ योगिनी रखा गया था। बताया जाता है कि अंग्रेज वास्तुविद एडविन लुटियंस ने मुरैना में स्थित चौंसठ योगिनी मंदिर के आधार पर ही भारतीय संसद को बनवाया था। भारतीय संसद न सिर्फ इस मंदिर से मिलती है बल्कि इसके अंदर लगे खंबे भी मंदिर के खंभों की तरह ही दिखते हैं। स्थानीय लोगों का मानना है कि आज भी यह मंदिर भगवान शिव की तंत्र साधना के कवच से ढँका है। इस मंदिर में किसी को भी रात में रुकने की अनुमति नहीं है। तंत्र साधना के लिए प्रसिद्ध चौंसठ योगिनी मंदिर में भगवान शिव की योगिनियों को जागृति करने का कार्य होता था। मान्यता है कि मां काली का चौंसठ योगिनी माता अवतार हैं। घोर नाम के राक्षस के साथ युद्ध लड़ते हुए माता आदिशक्ति काली ने इस रुप को धारण किया था। यह रहस्यमयी मंदिर इकंतेश्वर महादेव मंदिर के नाम से भी मशहूर है। चौंसठ योगिनी मंदिर की उत्पति के पीछे एक अनोखी कहानी जुड़ी हुई है एक प्रचलित किंवदंती के अनुसार कहा गया है कि देवी दुर्गा ने एक दानव को हराने के लिए चौंसठ देवी देवताओं का रूप धारण किया था। जिसके बाद से इन जोगिनियों या चौंसठ योगिनी मंदिर का निर्माण किया गया था। लेकिन यदि हम आधुनिक काल की बात करें तो योगिनियों का शैव संप्रदाय लगभग सातवीं से बारहवीं शताब्दी के बीच फला-फूला है जिसे ब्रह्मल्यात्रा शास्त्र में प्रलेखित भी किया गया है। और दसवीं से लेकर शायद तेरहवीं शताब्दी तक पूरे भारत में कई चौंसठ योगिनी मंदिर का निर्माण करवाया गया था। इस मन्दिर को हिंदू तंत्र में योग करने वाली महिलाओं के लिए देवी पार्वती के साथ समान रूप से पवित्र स्त्री शक्ति के अवतार के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। कुछ ग्रंथ देवी पार्वती के एक विशेष पहलू के अवतार के रूप में पवित्र स्त्री बल का उल्लेख करते हैं। योगिनियों के साथ स्कंद पुराण में वर्णित अन्य प्रतिरूप हैं शक्ति, भैरव, आदि। जबकि चंडी पुराण में, योगिनी शब्द का अर्थ देवी या देवी के रूप से है, और प्रत्येक योगिनी को देवी के शरीर के एक अलग हिस्से के रूप में देखा गया था। ये सभी आदिशक्ति माँ काली का अवतार है। घोर नामक दैत्य के साथ युद्ध करते हुए माता ने ये अवतार लिए थे। यह भी माना जाता है कि ये सभी माता पर्वती की सखियाँ हैं। इन चौंसठ देवियों में से दस महाविद्याएं और सिद्ध विद्याओं की भी गणना की जाती है। ये सभी आद्या शक्ति काली के ही भिन्न-भिन्न अवतारी अंश हैं। इस मंदिर की जैसे कि ऐसा भी माना जाता है कि यह एक विश्वविद्यालय के रूप में भी था और यहाँ गणित ज्योतिष और धर्मों की पढ़ाई लिखाई होती थी। इस मन्दिर की बाहरी दीवारों पर हिंदू देवी देवताओं की आकृतियां उत्किर्ण है। मंडप के भीतरी घेरे में सत्रह स्तंभ, बाहरी घेरे में चौंसठ स्तंभ हैं। मंदिर के आंतरिक भाग में कुल पाँच परिक्रमा पथ हैं। सबसे बाहरी पथ के साथ चौंसठ प्रकोष्ठ हैं। मितावली ग्राम की ऊँची पहाड़ियों पर निर्मित यह मंदिर स्थानीय लोगों के बीच इकोत्तरसा महादेव मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर की भू योजना विशिष्ट है तथा भारत वर्ष में प्राप्त चौंसठ योगिनी मंदिरों की भू योजना के समान है, जिसमें प्रायः मुख्य मंदिर के चारों ओर वृत्ताकार में देव प्रकोष्ठ होते हैं। मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व में है तथा इसके चारों ओर निर्मित प्रकोष्ठ जिनके सामने स्तंभों पर आधारित बरामदा है, बहुत छोटे-छोटे हैं। इन प्रकोष्ठों में से कुछ में शिवलिंग विद्यमान है। आमतौर पर हिन्दू मंदिर वर्गाकार होते हैं और इनका विन्यास रेखीय होता है। अधिकतर मन्दिरों में ईश्वर का मुख पूर्व दिशा की ओर होता है। दूसरी ओर गोलाकार योगिनी मन्दिरों में ईश्वर का मुँह हर दिशा की ओर होता है। हालाँकि, कुएँ जैसी इन संरचनाओं का प्रवेश द्वार पूर्व की ओर ही है। मंदिरों की आम पहचान गुम्बद या शिखर इनमें नहीं हैं।

माना जाता है कि आठ सौ वर्ष पूर्व के आसपास इस क्षेत्र में शासन कर रहे क्षत्रिय राजाओं को प्राचीन भारतीय गुप्त विद्याओं में विशेष रुचि थी। वहाँ के विद्वान इनसे संबंधित प्राचीन पुस्तकों एवं साधनाओं के माध्यम से निरन्तर शोध कार्यों में रत रहा करते थे। भारत की प्राचीन चामत्कारिक शक्तियों की खोज एवं उनके विकास के लिए उन्हें ऐसे शिक्षा केंद्र की आवश्यकता थी जहाँ पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को इन विद्याओं का ज्ञान दे सके। इसलिए उन्होंने ऐसी शक्तियों से जुड़ी हुई तमाम साधनाओं एवं विद्याओं के शिक्षण, प्रशिक्षण के लिए चौंसठ योगिनी मंदिर की स्थापना की।

गुर्जर-प्रतिहार विशेषकर शिल्पकला के लिए जाने जाते हैं। इनके शासन काल में उत्कीर्ण पटलों वाले और खुले द्वारांगन वाले मंदिरों का निर्माण हुआ। इस शैली का चरमोत्कर्ष हमें खजुराहो के मंदिरों में देखने को मिलता है। गुर्जर-प्रतिहार राजवंश भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन एवं मध्यकालीन दौर के संक्रमण काल में साम्राज्य स्थापित करने वाला एक राजवंश था जिसके शासकों ने मध्य-उत्तर भारत के बड़े हिस्से पर मध्य-आठवीं सदी से ग्यारहवीं सदी के बीच शासन किया। इस राजवंश का संस्थापक प्रथम नागभट्ट था, जिनके वंशजों ने पहले उज्जैन और बाद में कन्नौज को राजधानी बनाते हुए एक विस्तृत भूभाग पर शासन किया। गुर्जर-प्रतिहार कला के अवशेष हरियाणा और मध्यभारत के एक विशाल क्षेत्र में देखे जा सकते हैं। इस युग में गुर्जर प्रतिहारों द्वारा निर्मित मंदिर स्थापत्य और कला की सबसे बड़ी विशेषता इसकी अलंकरण शैली है। गुर्जर स्थापत्य शैली मे सज्जा और निर्माण शैली का पूर्ण समन्वय देखने को मिलता है। अपने पूर्ण विकसित रूप में गुर्जर प्रतिहार मन्दिरों में मुखमण्ड़प, अन्तराल, और गर्भग्रह के अतरिक्त अत्यधिक अलंकृत अधिष्ठान, जंघा और शिखर होते थे। चौसठ योगिनीओं को समर्पित मितावली का यह मंदिर गुर्जर -प्रतिहार शासकों की स्थापत्य कला का एक श्रेष्ठ उदाहरण जो उनकी धार्मिक आस्था को प्रकट करता है। भारतीय स्थापत्य इतिहास में गुर्जर प्रतिहार शैली का चौंसठ योगिनी यह मंदिर बहुत अलग लक्षित होता है।



नटराज मंदिर,
चिदंबरम



विक्रम पंचांग

बसंत ऋतु
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
11 मार्च से 25 मार्च 2024 तक

सम्राट विक्रमादित्य संवत् २०८०
'नल' नाम संवत्सर
• कलि संवत ५१२४ • सृष्टि आरम्भ १९५५८८५१२४
राजा- बुध • मंत्री- शुक्र

बसंत ऋतु
चैत्र कृष्ण पक्ष
26 मार्च से 08 अप्रैल 2024 तक

	रोहिणी दिन/रात **17 मार्च** अष्टमी चन्द्रशेखर आजाद शहीद दिवस	मघा २४/०३ **24 मार्च** चतुर्दशी होलिका दहन	**रविवार**		विशाखा ०८/२३ **31 मार्च** षष्ठी	शत १९/४१ **07 अप्रैल** त्रयोदशी चतुर्दशी मास शिवरात्रि व्रत
शत ०९/०१ पू.भा. ३०/३९ **11 मार्च** प्रतिपदा द्वितीया तिथि का क्षय पुत्र प्राप्ती प्रयोव्रत प्रा. 12 दिवसीय	रोहिणी ०७/१८ **18 मार्च** नवमी विज्ञान दिवस	पू.फा. २६/१९ **25 मार्च** पूर्णिमा पूर्णिमा व्रत, घुलेण्डी	**सोमवार**		अनुराधा ०८/१६ **01 अप्रैल** सप्तमी शीतला सप्तमी	पू.भा. १७/२९ **08 अप्रैल** अमावस्या भौमवती अमावस्या देवपितृकार्ये मौनी अमावस्या
उ.भा. २८/५२ **12 मार्च** द्वितीया तृतीया विनायक चौथ गौरी रा. सुरक्षा दिवस	मृगशिर ०९/५१ **19 मार्च** दशमी		**मंगलवार**	उ.फा. २८/१७ **26 मार्च** प्रतिपदा घुलेण्डी श्री चिन्तामण गणेश जात्रा	ज्येष्ठा ०७/३७ मूल ३०/२८ **02 अप्रैल** अष्टमी श्री चिन्तामण गणेश जात्रा	
रेवती २७/४७ **13 मार्च** चतुर्थी	आर्द्रा १२/४४ **20 मार्च** एकादशी आमलकी एकादशी (आँवला)		**बुधवार**	हस्त २९/५५ **27 मार्च** द्वितीया	पू.षा. २८/४९ **03 अप्रैल** नवमी	
अश्वि २७/३० **14 मार्च** पंचमी	पुनर्वसु २५/४४ **21 मार्च** द्वादशी		**गुरुवार**	चित्रा दिन/रात **28 मार्च** तृतीया	उ.षा. २६/४७ **04 अप्रैल** दशमी दशामाता व्रत	
भरणी २८/०० **15 मार्च** षष्ठी शिप्रा नर्मदा संगम दिवस	पुष्य १८/४२ **22 मार्च** त्रयोदशी शनि प्रदोष व्रत		**शुक्रवार**	चित्रा ०७/१० **29 मार्च** चतुर्थी श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २२/०७	श्रवण २४/२९ **05 अप्रैल** एकादशी पापमोचिनी एकादशी (चारोली)	
कृतिका २९/१८ **16 मार्च** सप्तमी होली अष्टह्निका विधान प्रा.	श्लेषा २१/३० **23 मार्च** त्रयोदशी		**शनिवार**	स्वाति ०८/०० **30 मार्च** पंचमी रंगपंचमी	धनिष्ठा २२/०४ **06 अप्रैल** द्वादशी प्रदोष व्रत	

नटराज मंदिर चिदंबरम

देवाधिदेव भगवान शिव को सर्वोच्च देवता के रूप में पूजने वाले उपासकों के लिए तमिलनाडु में चिदंबरम का नटराज मंदिर आस्था के प्रमुख केंद्रों में से एक है। मान्यता है कि कैलाशपति ने इस पवित्र स्थान को अपनी सभी शक्तियों से उपकृत किया है, जिनका सृजन भी उन्होंने यहीं किया। पुराणों के अनुसार भगवान यहाँ प्रणव मंत्र 'ॐ' के आकार में विराजमान हैं। यही वजह है कि आराधक इसे सबसे अहम् मानते हैं। चिदंबरम भगवान शिव के पाँच क्षेत्रों में से एक है। इसे शिव का आकाश क्षेत्र कहा जाता है। मंदिर के केंद्र और अम्बलम के सामने भगवान शिवकाम सुंदरी (पार्वती) के साथ स्थापित हैं। यह मंदिर चालीस एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। यह भगवान शिव नटराज और भगवन गोविन्दराज पेरुमल को समर्पित एक प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर है। चिदंबरम मंदिर तमिलनाडु के कुड्डालोर जिले में स्थित है। यह उन कुछ मंदिरों में से एक है जहाँ शैव व वैष्णव दोनों देवता एक ही स्थान पर प्रतिष्ठित हैं। शैव मत के अनुयायियों या शैव मतावलंबियों के लिए, कॉइल शब्द का अर्थ होता है चिदंबरम। इसी प्रकार, वैष्णव मत का पालन करने वालों के लिए इसका अर्थ होता है श्रीरंगम या थिरुवरंगम। चिदंबरम शब्द चित से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है "चेतना" और अम्बरम, का अर्थ होता है "आकाश" (आकासम या आक्यम से लिया गया); यह चिदाकासम की ओर संकेत करता है, चेतना का आकाश, वेदों और धर्म ग्रंथों के अनुसार इसे प्राप्त करना ही अंतिम उद्देश्य होना चाहिए। एक अन्य सिद्दांत यह है कि इसे चित + अम्बलम से लिया गया है। अम्बलम का अर्थ होता है, कला प्रदर्शन के लिए एक "मंच"। चिदाकासम परम आनंद या आनंद की एक अवस्था है और भगवान नटराजर इस परम आनंद या आनंद नतनम के प्रतीक माने जाते हैं। शैव मत वालों क यह विश्वास है कि चिदंबरम में एक बार दर्शन करने से वह मुक्त हो जायेंगे। एक अन्य सिद्धांत के अनुसार यह नाम चित्राम्बलम से लिया गया है, जिसमे चिथु का अर्थ है "भगवानों का नृत्य या क्रीड़ा" और अम्बलम का अर्थ है "मंच" मंदिर की संरचना अपने आप में आकर्षक और विशिष्ट है। चार सुंदर और विशाल गुंबदों ने संपूर्ण मंदिर को भव्य स्वरूप प्रदान किया है। मंदिर की आंतरिक साज-सज्जा, शिल्पकारी और इसका व्यापक क्षेत्रफल इसे अनन्य रूप देते हैं। मंदिर में कुल नौ द्वार हैं जिनमे से चार पर ऊँचे पगोडा या गोपुरम बने हुए हैं प्रत्येक गोपुरम में पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर सात स्तर हैं। पूर्वीय पगोडा में भारतीय नृत्य शैली -भरतनाट्यम की संपूर्ण एक सौ आठ मुद्राएँ अंकित हैं।

शिव के नटराज स्वरूप के नृत्य का स्वामी होने के कारण भरतनाट्यम के कलाकारों में भी इस जगह का खास स्थान है। इस मंदिर की एक अनूठी विशेषता आभूषणों से युक्त नटराज की छवि है। यह भगवान शिव को भरतनाट्यम नृत्य के देवता के रूप में प्रस्तुत करती है और यह उन कुछ मंदिरों में से एक है जहाँ शिव को प्राचीन लिंगम के स्थान पर मानवरूपी मूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। देवता नटराज का ब्रह्मांडीय नृत्य भगवन शिव द्वारा अनवरत ब्रह्मांड की गति का प्रतीक है। मंदिर में पाँच आँगन हैं। मंदिर की बनावट इस तरह है कि इसके हर पत्थर और खंभे पर भरतनाट्यम नृत्य की मुद्राएँ अंकित हैं। मंदिर में एक बहुत ही खूबसूरत तालाब और नृत्य परिसर भी है।

चिदंबरम मंदिर के भवन में भगवान गोविन्दराज पेरूमल और उनकी सहचरी पुन्दरीगावाल्ली थाय्यर का भी मंदिर है। यह दावा किया जाता है कि यह मंदिर थिलाई थिरुचित्रकूटम है और एक सौ आठ दिव्य आदेशों में से एक है - या भगवान विष्णु के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से है, जिसे भगवान विष्णु के प्रमुख भक्तों द्वारा गायी गयी स्तुति द्वारा पवित्र किया गया है। वैष्णव मतावलंबियों की ओर से ऐसा भी ऐतिहासिक दावा किया गाया है कि मूलरूप से यह मंदिर भगवान श्री गोविन्दराजास्वामी का निवास था और भगवान शिव अपनी सहचरी के साथ उनसे संपर्क करने आये थे जिससे कि वह युगल जोड़े के मध्य नृत्य प्रतिस्पर्धा के निर्णायक बन जायें। भगवान गोविन्दराजास्वामी इस बात पर सहमत हो गये और और शिव एवम पार्वती दोनों के मध्य बराबरी पर नृत्य प्रतिस्पर्धा चलती रही जिसके दौरान भगवान शिव विजयी होने की युक्ति जानने के लिए श्री गोविन्दराजास्वामी के पास गये और उन्होंने संकेत दिया कि वह अपना एक पैर उठायी हुई मुद्रा में नृत्य कर सकते हैं। महिलाओं के लिए, नाट्य शास्त्र के अनुसार यह मुद्रा वर्जित थी इसीलिए जब अंततः भगवान शिव इस मुद्रा में आ गये तो पार्वती ने पराजय स्वीकार कर ली और इसीलिए इस स्थान पर भगवान शिव की मूर्ति नृत्य मुद्रा में है। अनेक विद्वानों द्वारा शिव के नृत्य को ब्रह्मांडीय नृत्य कहा जाता है। चिदंबरम में इस नृत्य को 'आनंद तांडव' कहा जाता है।

चिदंबरम में भगवान शिव के निराकार स्वरूप की पूजा की जाती है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान परम आनंद "आनंद तांडव" की अवस्था में अपनी सहचरी शक्ति या ऊर्जा जिन्हें सिवगामी कहते हैं के साथ निरंतर नृत्य कर रहे हैं। इस मंदिर का पवित्र गर्भ गृह अट्ठाईस स्तंभों द्वारा खड़ा है, जो शिव की पूजा के लिए निर्धारित रीतियों के प्रतीक हैं। छत चौसठ धरनों के समूह पर आधारित है जो कला के चौसठ रूपों के प्रतीक हैं। इसमें अनेक आड़ी धरनें भी हैं जो असंख्य रुधिर कोशिकाओं की ओर संकेत करती हैं। छत का निर्माण इक्कीस हज़ार स्वर्ण पट्टिकाओं के द्वारा किया गया है जिनपर शब्द सिवायनाम लिखा है, यह श्वासों का प्रतीक है। यह स्वर्ण पट्टिकाएँ बहत्तर हज़ार स्वर्ण कीलों की सहायता से लगायी गयी हैं जो मनुष्य शरीर में उपस्थित नाड़ियों की संख्या का प्रतीक है। छत के ऊपर नौ पवित्र घड़े या कलश स्थापित किये गये हैं, जो ऊर्जा के नौ रूपों के प्रतीक हैं। मंदिर इस प्रकार निर्मित है कि यह अपनी समस्त जटिलताओं सहित मानव शरीर से मिलता है। जिस प्रकार हृदय शरीर की बायीं ओर होता है, ठीक उसी प्रकार चिदंबरम में गर्भगृह भी कुछ बायीं तरफ़ स्थित है। मंदिर की वास्तुकला दार्शनिक अर्थों से परिपूर्ण है। चिदंबरम मंदिर का रथ संभवतः संपूर्ण तमिलनाडु में किसी मंदिर के रथ का सबसे सुन्दर उदहारण है। यह रथ जिस पर भगवान नटराज वर्ष में दो बार बैठते हैं, त्योंहारों के दौरान असंख्य भक्तों द्वारा खींची जाती है। पुराणों में यह उल्लेख है कि संत पुलिकालमुनिवर ने राजा सिम्मवर्मन के माध्यम से मंदिर के अनेक कार्यों को निर्देशित किया। सिम्मवर्मन पल्लव राजवंश के राजकुमार थे जिन्होंने राजसी अधिकारों का त्याग कर दिया था और चिदंबरम में आकर रहने लगे थे। चूँकि पुलिकाल मुनिवर और सिम्मवर्मन समकालीन थे, इसलिए यह माना जाता है कि मंदिर इसी काल के दौरान निर्मित हुआ था। कुछ विद्वान मानते हैं कि इस मंदिर का निर्माण दसवीं शताब्दी के दौरान किया गया था जब चिदंबरम चोल वंश की राजधानी हुआ करते थे। चोलों ने भगवान शिव को नटराज के रूप में अपना कुलदेवता माना था। दूसरी सहस्राब्दी के दौरान नटराज मंदिर में क्षति, नवीनीकरण और विस्तार हुआ है। अरगालुर उदय इरर तेवन पोंपराप्पिननम ने 1213 ईस्वीं के आसपास इस मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया था। चिदंबरम मंदिर से सम्बन्धित कई शिलालेख आसपास के क्षेत्रों में और स्वयं मंदिर में भी उपलब्ध हैं।







मीनाक्षी मंदिर

विक्रम पंचांग

मीनाक्षी मन्दिर (मदुराई)

।। कांची तु कामाक्षी,मदुरै मिनाक्षी,दक्षिणे कन्याकुमारी ममःशक्ति रूपेण भगवती,नमो नमः नमो नमः।।

मदुराई का मीनाक्षी अम्मन मंदिर,जिसको मीनाक्षी-सुंदरेश्वर मंदिर व मीनाक्षी मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। भारत के सबसे पुराने और महत्वपूर्ण मन्दिरों में से एक है। इस मन्दिर का महान् पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व है। प्राचीन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध और वैगई नदी के किनारे स्थित मदुराई को कूडल मानगर, तुंगानगर (कभी ना सोने वाली नगरी), मल्लिगई मानगर (मोगरे की नगरी) आदि नामों से भी जाना जाता है। लगभग ढाई हजार वर्ष पुराना यह नगर दक्षिण भारत का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र है।

मीनाक्षी मन्दिर भगवान शिव और उनकी भार्या देवी पार्वती (मीनाक्षी या मछली के आकार की आंख वाली देवी के रूप में) दोनों को समर्पित है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान शिव अत्यन्त सुन्दर रूप में देवी मीनाक्षी से विवाह की इच्छा से पृथ्वीलोक पर आये थे। देवी मीनाक्षी पहले ही मदुराई के राजा मलयध्वज पांड्य की तपस्या से प्रसन्न हो मदुराई में अवतार ले चुकी थीं। भगवान शिव वहाँ प्रकट हुए और उन्होंने देवी मीनाक्षी से विवाह करने का प्रस्ताव रखा और उन्होंने स्वीकार किया। मछली पांड्य राजाओं का राजचिह्न था। यह मन्दिर तमिल भाषा के गृहस्थान तथा मदुरई नगर की जीवनरेखा है। इस मन्दिर का निर्माण सोलहवीं शताब्दी में द्रविड़ वास्तुकला में किया गया था। पैंसठ हज़ार वर्ग मीटर में फैले इस विशाल मंदिर को यहाँ शासन करने वाले विभिन्न वंशों ने विस्तार प्रदान किया। मीनाक्षी मन्दिर के विशाल अन्तर्गृह में अनेक देवी देवताओं की भव्य मूर्तियाँ स्थापित की गयी हैं। मीनाक्षी मन्दिर के केन्द्र में मीनाक्षी की मूर्ति है और उससे थोड़ी ही दूर भगवान गणेश जी की एक विशाल प्रतिमा स्थापित है जिसे एक ही पत्थर को काट कर बनाया गया है। द्रविड़ शैली में मंदिर का आधार भाग वर्गाकार होता है तथा गर्भगृह के ऊपर का शिखर भाग पिरामिडनुमा होता है, जिसमें क्षैतिज विभाजन लिए अनेक मंजिलें होती हैं। शिखर के शीर्ष भाग पर आमलक व कलश की जगह स्तूपिका होते हैं। इस शैली के मंदिरों की प्रमुख विशेषता यह है कि ये काफी ऊँचे तथा विशाल प्रांगण से घिरे होते हैं। प्रांगण में छोटे-बड़े अनेक मंदिर, कक्ष तथा जलकुण्ड होते हैं। परिसर में कल्याणी या पुष्करिणी के रूप में जलाशय होता है। प्रागंण का मुख्य प्रवेश द्वार गोपुरम कहलाता है। प्रायः मंदिर प्रांगण में विशाल दीप स्तंभ व ध्वज स्तंभ का भी विधान होता है। दक्षिण भारत के शासक मुख्य रूप से हिंदू मूल के थे, इसलिए दक्षिण भारत में हिंदू देवताओं के अधिक मंदिर पाए गए। दक्षिण भारत शेष भारत से अधिक सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है, और दक्षिण भारतीयों को अपनी संस्कृति से बहुत लगाव और प्रेम है, इसलिए वे इसका धार्मिक और दृढ़ता से पालन करते हैं। मंदिर उस समय धार्मिक सभाओं और शिक्षा के केंद्र भी थे, इसलिए मंदिरों के लिए भूमि आमतौर पर राज्य के शासकों द्वारा दान की जाती थी। द्रविड़ वास्तुकला की उप-शैलियों में, मदुरै का मीनाक्षी मंदिर नायक शैली का एक प्रसिद्ध उदाहरण है। इस मंदिर की सभी विशेषताएं द्रविड़ शैली के समान हैं, इसके अलावा एक अतिरिक्त विशेषता मंदिर की छत पर चलने वाले रास्तों के साथ विशाल गलियारे हैं जिन्हें प्राकर्म कहा जाता है।

मीनाक्षी मन्दिर का स्थापत्य एवं वास्तु आश्चर्यचकित कर देने वाला है। इस इमारत समूह में बारह भव्य गोपुरम हैं, जो विस्तृत रूप से शिल्पित हैं। गोपुरम या गोपुर (जिसे विमानम भी कहते हैं) एक स्मारकीय अट्टालिका होती है, प्रायः शिल्प से सज्जित, एवं अधिकतर दक्षिण भारत के मन्दिरों के द्वार पर स्थित होता है। यह हिन्दू मन्दिरों के स्थापत्य का प्रमुख अंग है। यह ऊपर किरीट कलश से शोभायमान होता है। यह मन्दिरों की चारदीवारी में बने द्वार का काम देते हैं। गोपुरम अधिकतर आयताकार होते हैं, जिनके भूमि तल पर विराट काष्ठ द्वार होते हैं, जो अंदर का मार्ग प्रशस्त करते हैं, एवं खूब अलंकृत होते हैं। ऊपर का गोपुरम कई तलों में बँटा होता है, एवं ऊपर जाते जाते तंग होता जाता है। इसके सबसे ऊपर प्रायः ढोलक आकार का शिखर होता है, एवं उसके ऊपर विषम संख्या में कलश शोभा पाते हैं। गोपुरमों को शिल्प एवं चित्रकारी से अत्यधिक सजाया जाता है। मुख्यतः वे, जो कि मन्दिर के प्रधान देवता से सम्बन्धित होते हैं। मीनाक्षी मन्दिर परिसर में एक तालाब भी है जिसका नाम “पत्थमारई कुलम 'है। ” पोटरमराई कुलम' शब्द सुनहरे कमल के साथ 'तालाब का शाब्दिक अनुवाद है।' तालाब के केंद्र में एक स्वर्ण कमल की संरचना रखी गयी है। तमिल लोककथाओं में, तालाब को किसी भी नये साहित्य के मूल्य की समीक्षा के लिए मूल्यांकनकर्ता माना जाता है। मंदिर परिसर में स्थित यह पवित्र सरोवर श्रद्धालुओं के लिए अति पवित्र स्थल है। भक्तगण मन्दिर में प्रवेश से पूर्व इसकी परिक्रमा करते हैं। इसका शाब्दिक अर्थ है "स्वर्ण कमल वाला सरोवर" और अक्षरशः इसमें होने वाले कमलों का वर्ण भी सुवर्ण ही है। एक पौराणिक कथानुसार, भगवान शिव ने एक सारस पक्षी को यह वरदान दिया था, कि इस सरोवर में कभी भी कोई मछली या अन्य जलचर पैदा होंगे और ऐसा ही है भी। मंदिर के चार मुख्य द्वार हैं (गोपुरम) जो एक दूसरे के समान दिखते हैं। चार गोपुरमों के अलावा, 'मंदिर में कई अन्य गोपुरम भी हैं, जो कई तीर्थस्थलों के लिए प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करते हैं। इस मन्दिर के प्रवेश द्वार के निकट तीन परिक्रमा स्थल हैं तीसरे परिक्रमा स्थल के पथ में मूर्ति के दर्शनों के लिए गर्भ गृह तक जाने का मार्ग है।

मंदिर में कुल चौदह विशाल द्वार हैं। उनमें से प्रत्येक एक बहु-मंजिला संरचना है और हजारों पौराणिक कहानियों और कई अन्य मूर्तियों को प्रदर्शित करता है। यह मन्दिर तमिल लोगों का एक अति महत्वपूर्ण द्योतक है, एवं इसका वर्णन तमिल साहित्य में पुरातन काल से ही होता रहा है। हालांकि वर्तमान निर्माण आरम्भिक सत्रहवीं शताब्दी का बताया जाता है। इस मन्दिर का गर्भगृह 3500 वर्ष पुराना है, इसकी बाहरी दीवारें और अन्य बाहरी निर्माण लगभग 1500-2000 वर्ष पुराने हैं। इस मन्दिर के वर्तमान स्वरूप के विषय में तमिल साहित्य में वर्णन है जो कुछ शताब्दियों पहले का बताया जाता है। तिरुज्ञानसंबन्दर, प्रसिद्ध हिन्दू शैव मतावलम्बी संत ने इस मन्दिर को आरम्भिक सातवीं शती का बताया है। 1310में मुस्लिम शासक मलिक कफूर ने लूटपाट करते हुए और इसके प्राचीन घटकों को नष्ट कर दिया। सन् 1559-1600 में मदुराई के नायक प्रधानमंत्री आर्यनाथ मुदलियार ने मंदिर के पुनर्निर्माण का बीड़ा उठाया। पश्चात महाराजा तिरुमलनायक तथा उनके उत्तराधिकारियों ने मन्दिर को पुन: अपनी श्रेष्ठता वापस दिलायी। शोधकर्ताओं के अनुसार, मंदिर का पुनर्निर्माण करते समय, नायक वंश के शासकों ने शिल्प शास्त्रों की स्थापत्य शैली का पालन किया।' दक्षिण भारत में हजारों मंदिर हैं। उनमें से मीनाक्षी जैसे मन्दिर इतने प्राचीन और प्रतिष्ठित हैं कि वे हिंदू आस्था के महान तीर्थ स्थल बन गये हैं। उनकी प्राचीनता तथा कलात्मक उत्कृष्टता के अलावा, एक रोचक तथा महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ये मंदिर दीर्घकालीन विकास प्रक्रिया से गुजरे हैं और दक्षिण भारत की तत्कालीन संस्कृति के साक्षी के रूप में विद्यमान हैं। इन मंदिरों की विशालता, मूर्तिकला, छत, मीनारें तथा चित्र वल्लरीयुक्त दीवारें और स्तम्भ शिल्प का उत्तकृष्ट नमूना हैं। इस मन्दिर समूह के मध्य में स्थित शिव (सुंदरेश्वर) मन्दिर में शिव की नटराज मुद्रा में प्रतिमा स्थापित है। शिव की यह मुद्रा सामान्यतः नृत्य करते हुए अपना बाँया पैर उठाए हुए होती है, परन्तु यहां उनका दाँया पैर उठा है। एक कथा अनुसार राजा राजशेखर पांड्य की प्रार्थना पर भगवान ने अपनी मुद्रा यहाँ बदल ली थी। यह इसलिए था, कि सदा एक ही पैर को उठाए रखने से, उस पर अत्यधिक भार पड़ेगा। यह निवेदन उनके व्यक्तिगत नृत्य अनुभव पर आधारित था यह भारी नटराज की मूर्ति, एक बड़ी चांदी की वेदी में बंद है, इसलिये इसे वेल्ली अम्बलम् (रजत आवासी) कहते हैं। इस गृह के बाहर बड़े शिल्प आकृतियाँ हैं, जो कि एक ही पत्थर से बनी हैं। इसके साथ ही यहाँ एक वृहत गणेश मन्दिर भी है, जिसे मुकुरुनय विनायगर् कहते हैं। इस मूर्ति को मन्दिर के सरोवर की खुदाई के समय निकाला गया था। मीनाक्षी देवी का गर्भ गृह शिव के बांये में स्थित है। मन्दिर का आयिराम काल मण्डप अत्योच्च शिल्प महत्त्व का है। इसमें लगभग हजार भव्य तराशे हुए स्तम्भ हैं। ऐसी धारणा है, कि इसका निर्माण आर्य नाथ मुदलियार ने कराया था। मुदलियार की अश्वारोही मूर्ति मण्डप को जाती सीढ़ियों के बगल में स्थित है। प्रत्येक स्तंभ पर शिल्पकारी की हुई है, जो द्रविड़ शिल्पकारी का बेहतरीन नमूना है। इस मण्डप में मन्दिर का कला संग्रहालय भी स्थित है। इसमें मूर्तियाँ, चित्र, छायाचित्र एवं चित्रकारी, इत्यादि के द्वारा इसका 1200 वर्ष का इतिहास देख सकते हैं। इस मण्डप के बाहर ही पश्चिम की ओर संगीतमय स्तंभ स्थित हैं।

ये सभी स्तंभ यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के लिए एक आकर्षण का केंद्र है इन सभी स्तंभों को स्तंभ मण्डप कहा जाता है प्रत्येक स्तंभ में हाथ थपथपाने पर एक भिन्न स्वर निकालता है यह स्वर अत्यंत मधुर होता है इस स्तंभ मण्डप के दक्षिण में कल्याण मण्डप स्थित है, जहां प्रतिवर्ष चैत्र मास में चितिरई उत्सव मनाया जाता है। इस मंदिर की विशेषताओं में एक विशेषता इस मंदिर में स्थित मूर्तियां हैं। कहा जाता है की मीनाक्षी मंदिर में कुल तैंतीस हजार मूर्तियाँ है जो इस मंदिर को दिव्य स्वरूप प्रदान करती है।







विरूपाक्ष मंदिर,
हम्पी, कर्नाटक

विक्रम पंचांग

विरूपाक्ष मंदिर हम्पी (कर्नाटक)

विरुपाक्ष मन्दिर कर्नाटक के हम्पी में स्थित एक शिव मंदिर है। पंद्रहवीं शताब्दी में निर्मित यह मन्दिर इस स्थान के सबसे प्राचीन स्मारकों में से एक है। विरुपाक्ष मंदिर को प्राचीन काल में लोकेश्वर के नाम से भी जाना जाता था। जिसे रानी लोक महादेवी के नाम पर रखा गया था। जिन्होंने अपने पति विक्रमादित्य 11 की काँचीपुरम के पल्लवों पर जीत के उपलक्ष्य में इस शानदार स्मारक का निर्माण किया था। यह मंदिर द्रविड़ स्थापत्य शैली में निर्मित है। 1509 ई. में अपने अभिषेक के समय कृष्णदेव राय ने यहाँ गोपुड़ा का निर्माण करवाया था। नौ स्तरों और लगभग पचास मीटर ऊँचा गोपुरम वाला यह मंदिर तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी किनारे पर हेमकूट पहाड़ी की तलहटी पर स्थित है। यह मंदिर भगवान विरुपाक्ष और उनकी पत्नी देवी पंपा को समर्पित है विरुपक्ष, भगवान शिव का ही एक रूप है। इस मंदिर के पास छोटे-छोटे और मंदिर जोकि अन्य देवी देवताओं को समर्पित है। विरुपाक्ष मन्दिर को 'पंपापती' नाम से भी जाना जाता है। मन्दिर का संबंध इतिहास प्रसिद्ध विजयनगर साम्राज्य से है। मूल रूप से नौवीं तथा दसवीं सदी में बने इस मंदिर का बाद में विजयनगर के शासकों ने और विस्तार किया। मंदिर के स्तंभों से भरे गलियारे बेहद प्रसिद्ध हैं जिन पर बहुत सुंदर नक्काशी तथा कलाकृतियाँ देखने को मिलती हैं। मन्दिर के पूर्व में पत्थर का एक विशाल नंदी है जबकि दक्षिण की ओर गणेश जी की विशाल प्रतिमा है। यहाँ नृसिंह की एक लगभग दस मीटर ऊँची प्रतिमा भी है। विरूपाक्ष मंदिर का प्रवेश गोपुरम हेमकुटा पहाड़ियों व आसपास की अन्य पहाडिय़ों पर रखी विशाल चट्टानों से घिरा है। इन चट्टानों का संतुलन हैरान कर देने वाला है। यह मंदिर दक्षिण भारतीय द्रविड़ स्थापत्य शैली को दर्शाता है और ईंट तथा चूने से बनाया गया है। मंदिर को पंपापति मंदिर के रुप में भी जाना जाता है। इस पवित्र स्थान में एक मुख मंडप (रंगा मंड़पम) है, जिसमें तीन कक्ष और स्तम्भों के साथ एक विशाल कक्ष है। प्रारंभ में, इस मंदिर में केवल कुछ ही मूर्तियाँ प्रतिष्ठापित की गयी थी, लेकिन समय के साथ-साथ यह मंदिर एक विशाल भवन में विकसित हो गया। रंगा मंडपम को कृष्णदेवराय द्वारा 1510 ई. में बनाया गया था जो विजयनगर की वास्तुकला शैली को दर्शाता है। खंभों को, मंदिर के रसोईघर को, दीपकों को, बुर्जों तथा अन्य मंदिरों को बाद में बनाया गया है। जानवरों के नक्काशीदार विचित्र चित्र और हिंदू मिथकों का चित्रण करते चित्र वीरूपाक्ष मंदिर के मुख्य आकर्षण हैं। यह प्राचीन मंदिर भगवान् शिव के रूपों में से एक 'विरुपाक्ष' (= विरूप + अक्ष = विपरीत अक्ष वाले) को समर्पित है जिसे “प्रसन्न विरुपाक्ष मंदिर” के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर में मुख्य देवता के साथ साथ कई देवी-देवताओं की सुन्दर मूर्तियाँ भी हैं जो कलाकृतियों के माध्यम से कई देवी-देवताओं की पौराणिक कहानियों को दर्शाती हैं। मंदिर विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी, तुंगभद्रा नदी के किनारे पर स्थित है। विम्पाक्ष मंदिर, हम्पी में तीर्थ यात्रा का मुख्य केंद्र है, और सदियों से सबसे पवित्र अभयारण्य माना जाता है। आसपास के खंडहरों में यह मंदिर अब भी बरकरार है और अभी भी मंदिर में भगवान शिव की पूजा कि जाती है। हम्पी मध्यकालीन हिंदू राज्य विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी। तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित यह नगर अब हम्पी (पम्पा से निकला हुआ) नाम से जाना जाता है और अब केवल खंडहरों के रूप में ही अवशेष है। इन्हें देखने से प्रतीत होता है कि किसी समय में यहाँ एक समृद्धशाली सभ्यता निवास करती होगी। यह माना जाता है कि एक समय में हम्पी रोम से भी समृद्ध नगर था। हम्पी का विशाल फैलाव गोल चट्टानों के टीलों में विस्तृत है। घाटियों और टीलों के बीच पाँच सौ से भी अधिक स्मारक चिह्न हैं। विजयनगर के शासकों ने मंत्रणागृहों, सार्वजनिक कार्यालयों, सिंचाई के साधनों, देवालयों तथा प्रासादों के निर्माण में बहुत उत्साह दिखाया। विदेशी यात्री नूनीज़ ने नगर के अन्दर मंदिर, महल, तहख़ाने, सिंचाई की अद्भुत व्यवस्था और विशाल जलाशयों का वर्णन किया है। किंवदंती है कि भगवान विष्णु ने इस जगह को अपने रहने के लिए कुछ अधिक ही बड़ा समझा और अपने घर वापस लौट गये। विरुपाक्ष मन्दिर में भूमिगत शिव मन्दिर भी है। मन्दिर का बड़ा हिस्सा पानी के अन्दर समाहित है, इसलिए वहाँ कोई नहीं जा सकता। बाहर के हिस्से के मुक़ाबले मन्दिर के इस हिस्से का तापमान बहुत कम रहता है। एक और पौराणिक कथा के अनुसार यह मंदिर भगवान शिव और रावण के प्रसंग से जुड़ा है। त्रेतायुग में रावण ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की। भगवान शिव रावण की तपस्या से बेहद प्रसन्न हुए और वर माँगने को कहा। रावण ने शिव को ही लंका चलने का न्यौता दिया, लेकिन शिव ने मना करते हुए रावण को एक शिवलिंग दिया। शंकर ने रावण को शिवलिंग देते हुए कहा कि इसे कहीं भी धरती पर मत रखना। यदि इसे कहीं रख दिया तो यह शिवलिंग वहीं स्थापित हो जायेगा। फिर इसे हटाया नहीं जा सकेगा। रावण शिवलिंग लेकर लंका की तरफ चल दिया। रास्ते में किसी वजह से रावण को रुकना पड़ गया। उसने एक बुजुर्ग को शिवलिंग पकड़ा कर कहा कि इसे जमीन पर मत रखना। लेकिन जब तक रावण आता वह बुजुर्ग उसे जमीन पर रख चुका था। रावण ने काफी प्रयास किया कि वह शिवलिंग को अपने साथ ले जा सके, लेकिन वह उसे हिला तक नहीं सका। आखिरकार रावण शिवलिंग छोड़कर लंका चला गया। तब से वह शिवलिंग यहीं है। इस मंदिर की मुख्य विशेषता यहाँ का शिवलिंग है जो दक्षिण की ओर झुका हुआ है। दक्षिण भारत में प्रचलित मंदिर निर्माण की अनेक शैलियाँ इस साम्राज्य ने संकलित की और विजयनगरीय स्थापत्य कला प्रदान की। दक्षिण भारत के विभिन्न सम्प्रदाय तथा भाषाओं के घुलने-मिलने के कारण इस नये प्रकार की मंदिर निर्माण की वास्तुकला को प्रेरणा मिली। स्थानीय कणाश्म पत्थर का प्रयोग करके पहले दक्कन तथा उसके पश्चात् द्रविड़ स्थापत्य शैली में मंदिरों का निर्माण हुआ। मन्दिरों का अस्तित्व और उनकी भव्यता विजयनगर साम्राज्य के समय से देखने को मिलती है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि इस समय हिन्दू मंदिरों का महत्त्व और उनके आकार में उल्लेखनीय विस्तार हुआ तथा उनकी बनावट पर स्थानीय वास्तुकला का विशेष प्रभाव पड़ा। दक्षिण भारत में ज्यादातर मंदिरों का अस्तित्व बरकरार है। यहाँ के मंदिरों की स्थापत्यकला और वास्तुशील्प अद्भुत है। विजयनगर की कला धार्मिक प्रवृत्तियों के कारण जटिल हो गयी। मन्दिरों के विशाल गोपुरम् तथा सुन्दर, खचित स्तम्भयुक्त मण्डप इस युग की विशेषता हैं। विजयनगर शैली की वास्तुकला के नमूने उसके मन्दिरों में आज भी शासकों की कीर्ति का गान कर रहे हैं।

इस मंदिर में ऐसे बहुत से तथ्य मौजूद हैं जो यह दर्शाते हैं कि चालुक्य संप्रभुता के बाद विरुपाक्ष मंदिर में बहुत परिवर्तन किये गये थे। राजवंश के शासनकाल के दौरान 14 वीं शताब्दी में देशी कला, शिल्प कला और संस्कृति का बहुत विकास हुआ था। कहते हैं कि विरुपाक्ष मंदिर में कुछ ऐसे स्तंभ या खंभे हैं जिनसे संगीत निकलता है। इसीलिए इन्हें 'म्यूजिकल पिलर्स' के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर का एक बड़ा हिस्सा पानी के अंदर डूबा हुआ है, इसलिए वहाँ कोई नहीं जाता है। बाहर के हिस्से के मुकाबले मंदिर के इस हिस्से का तापमान बहुत कम रहता है। वर्तमान समय में भी इस मंदिर मेँ पूजा पाठ की जाती है। यह परंपरा वर्षों से कायम है। 19 वीं शताब्दी की शुरुआत में इस मंदिर का व्यापक नवीनीकरण किया गया जिसमें इसकी छत के चित्रों को पुनः चित्रित किया गया है।

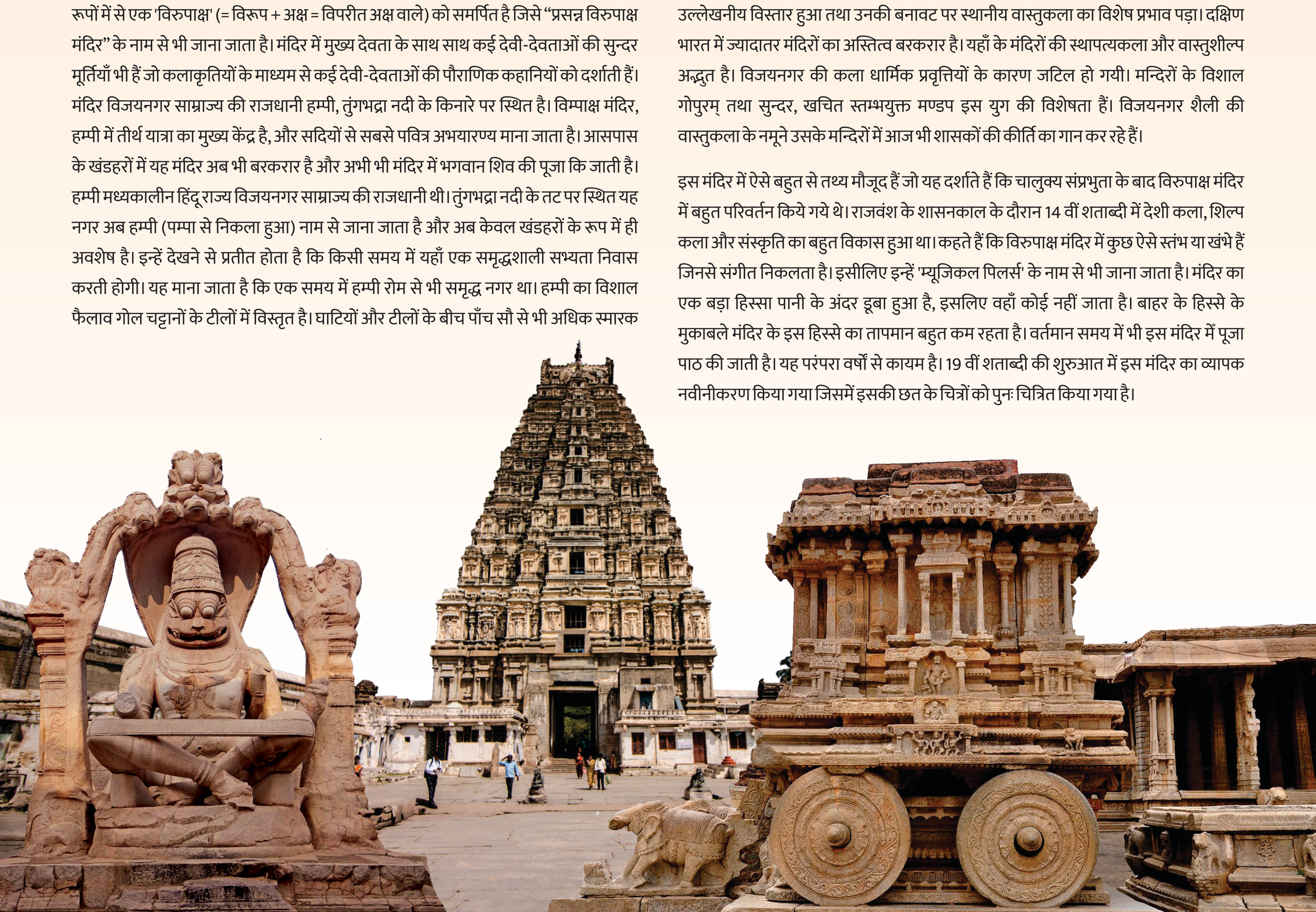

श्री विक्रम सं.२०८० चैत्र शुक्ल पक्ष

दिनांक: २२ मार्च से ०६ अप्रैल २०२३ तक

सौम्यायन — बसंत ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं.मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	बुध	२० २४	उ.भा.	१५ ३५	शुक्ल/ब्रह्म	३९ ३९	०६ ३१	१८ ३७	मीन	११.०६.५७.४७
०२	गुरु	१८ २४	रेवती	१४ ११	ऐन्द्र	२७ ४५	०६ ३०	१८ ३७	मेष १४।११	११.०७.५७.२२
०३	शुक्र	१७ ०३	अश्विनी	१३ २४	वैधृति	२५ ४५	०६ २९	१८ ३८	मेष	११.०८.५६.५५
०४	शनि	१६ २६	भरणी	१३ २१	विष्कुंभ	२४ २२	०६ २८	१८ ३८	वृष.१९।२८	११.०९.५६.२७
०५	रवि	१६ ३६	कृतिका	१४ ०४	प्रीति	२३ ३४	०६ २७	१८ ३८	वृषभ	११.१०.५५.४६
०६	सोम	१७ ३१	रोहिणी	१५ ३०	आयु	२३ २१	०६ २६	१८ ३९	मि.२८।२८	११.११.५५.१२
०७	मंगल	१९ ०६	मृगशिर	१७ ३५	सौभाग्य	२३ ३७	०६ २५	१८ ३९	मिथुन	११.१२.५४.३७
०८	बुध	२१ १०	आर्द्रा	२० ०९	शोभन	२४ १४	०६ २४	१८ ४०	मिथुन	११.१३.५३.५९
०९	गुरु	२३ ३३	पुनर्वसु	२३ ०२	अति	२५ ०५	०६ २३	१८ ४०	कर्क १६।१८	११.१४.५३.१९
१०	शुक्र	२६ ०२	पुष्य	२५ ००	सुकर्मा	२५ ५८	०६ २२	१८ ४०	कर्क	११.१५.५२.३६
११	शनि	२८ २३	श्लेषा	२८ ५१	धृति	२६ ४७	०६ २२	१८ ४१	सिंह २८।५१	११.१६.५१.५१
१२	रवि	दि रा	मघा	दि रा	शूल	२७ २३	०६ २०	१८ ४१	सिंह	११.१७.५१.०४
१२	सोम	०६ २७	मघा	०७ २६	गंड	२७ ४२	०६ १९	१८ ४१	सिंह	११.१८.५०.१५
१३	मंगल	०८ ०८	पू.फा	०९ ३९	वृद्धि	२७ ४१	०६ १८	१८ ४२	कन्या१६।०८	११.१९.४९.२४
१४	बुध	०९ २२	उ.फा	११ २६	ध्रुव	२७ १८	०६ १७	१८ ४२	कन्या	११.२०.४८.३०
१५	गुरु	१० ०७	हस्त	१२ ४४	व्याघा	२६ ३३	०६ १६	१८ ४३	तुला २५।१३	११.२१.४७.३४

दिनांक	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
मार्च/अप्रैल	
22	**नवीन चंद्रदर्शन,नव संवत्सर प्रा.,गुडी पाडवा,**ज्योतिष दिवस वासन्तिक **A**
23	सिंधारा दूज, पंचक १४/११तक, स.सि.६/२९से६/२८तक
24	**मत्स्यजयंती**(मीणा उत्पत्ति),गौरी मनोरथ तृतीया, गणगौर तीजे,**E**
25	भ.४/३५से१६/२३तक,**विनायक एवं दमनक चतुर्थी,** अङ्गारक चतुर्थी,
26	**श्रीराम राज्य महोत्सव कल्पादि,Aनवरात्र प्रा.,**घट स्थापना,चेतीचांद **B**
27	**स्कन्धषष्ठी,सूर्य-अशोका षष्ठी,** स.सि.६/२५से ६/२४तक
28	भ.१९/०२से, महासप्तमी,महानिशा पूजा बलीदान, **E** स.सि.६/२८से१३/२२तक
29	भ.०८/०१तक, दुर्गा अष्टमी, महाष्टमी वासंती दुर्गापूजन प्रा(बंगाल),भवान्युत्पत्ती,
30	**श्रीराम नवमी,**श्रीस्वामी नारायण जं०,**चैत्र नवरात्र पूर्ण,**अयोध्या परिक्रमा **F**
31	धर्मराज दशमी,दशहरा, **C** अशोकाष्टमी,अशोक कलिका प्राशन,
01	भ.१५/१०से, **कमदा एकादशी व्रत**(लोंग),श्रीवल्लभाचार्य बधाई,
02	भ.०४/१९तक,वामन द्वादशी,विष्णु दमनोत्सव, **F**स.सि.६/२२से६/२१तक
03	सोमप्रदोषव्रत,अनङ्ग त्रयोदशी, महावीर जयंती
04	श्रीनृसिंह दोलोत्सव,शिव दमनक चतुर्दशी, **D** स.सि.११/२३से६/१५तक
05	भ.०९/१९से०९/४५तक, स्नान,दान,व्रत की **चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती,D**
06	चित्रान्नदान बुध पश्चिमोदय ९/०० **B** निम्ब भक्षण, सूर्य को अर्घ्य प्रदान करे,

दि. ०६/०४/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
११	०६	०२	०२	११	००	१०	००
२१	१९	११	०९	२६	२९	०९	१०
४५	३०	३१	३१	०९	४४	०३	५९
५९	४८	१४	०६	५५	१९	३३	१८
५९	७६२	३०	८९	१४	७०	०५	०३
०३	०६	३५	५७	२८	३३	५८	१४
रेवती	हस्त	आर्द्रा	अश्वि	रेवती	कृति	शत	अश्वि
मा	मा	मा	मा	मा.अ	मा	मा	व

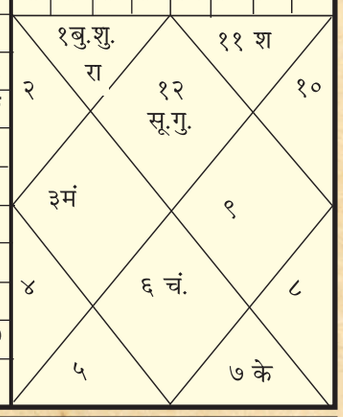

श्री विक्रम सं.२०८० वैशाख कृष्ण पक्ष

दिनांक: ०७ अप्रैल से २० अप्रैल २०२२ तक

सौम्यायन — बसंत ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	शुक्र	१० २४	चित्रा	१३ ३६	हर्षण	२५ २७	०६ १५	१८ ४३	तुला	११.२२.४६.३७
०२	शनि	१० १४	स्वाति	१४ ०२	वज्र	२४ ०१	०६ १४	१८ ४३	तुला	११.२३.४५.३७
०३	रवि	०९ ३९	विशाखा	१४ ०३	सिद्धि	२२ १६	०६ १३	१८ ४४	वृश्चि०८।०५	११.२४.४४.३५
०४	सोम	०८ ४१	अनुराधा	१३ ४२	व्यति	२० १३	०६ १२	१८ ४४	वृश्चिक	११.२५.४३.३१
०५	मंगल	०७ २१	ज्येष्ठा	१३ ०१	वरिय	१७ ५५	०६ ११	१८ ४४	धनु १३।०१	११.२६.४२.२६
०६	मंगल	२९ ४३	षष्ठी तिथि का क्षय							
०७	बुध	२७ ४७	मूल	१२ ०१	परिघ	१५ २२	०६ ११	१८ ४५	धनु	११.२७.४१.१९
०८	गुरु	२५ ३७	पू.षा.	१० ४६	शिव	१२ ३६	०६ १०	१८ ४५	मकर१६।२५	११.२८.४०.१०
०९	शुक्र	२६ १७	उ.षा.	०९ १७	सिद्ध	०९ ३९	०६ ०९	१८ ४६	मकर	११.२९.३९.००
१०	शनि	२० ४८	श्रव/धनि	०७ ३८ २९ ५४	साध्य/शु	०६ ३५ २७ २५	०६ ०८	१८ ४६	कुंभ १८।४७	००.००.३७.४८
११	रवि	१८ १८	शत्भिष	२८ ०९	शुक्ल	२४ १५	०६ ०७	१८ ४६	कुम्भ	००.०१.३६.३४
१२	सोम	१५ ५०	पू.भा.	२६ ३१	ब्रह्म	२१ ०९	०६ ०६	१८ ४७	मीन २०।५४	००.०२.३५.१८
१३	मंगल	१३ ३१	उ.भा.	२५ ०४	ऐंद्र	१८ ११	०६ ०५	१८ ४७	मीन	००.०३.३४.०१
१४	बुध	११ २७	रेवती	२३ ५६	वैधृति	१५ २८	०६ ०४	१८ ४८	मेष २३।५६	००.०४.३२.४२
३०	गुरु	०९ ४५	अश्विनी	२३ १३	विष्कुं	१३ ०३	०६ ०४	१८ ४८	मेष	००.०५.३१.२१

दिनांक	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
अप्रैल	
07	शिवलायों में गलन्तिका बांधे,पोशाला लगावें, वैशाख स्नान प्रां०,**A**
08	भ.२१/५६से, स.सि.६/१३से/१३/५९तक,
09	भ.०९/३५तक,**श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत ,** चन्द्रोदय २१/५५, सती अनुसूया जयंती
10	स.सि.६/११से१३/३९तक, **(अवन्तिका में प्रति मंगलवार मंगलनाथ दर्शन यात्रा)**
11	वैतालषष्ठी,**गुमानदेव हनुमान** से वैताल मंदिर ध्वज यात्रा
00	**B** स.सि.६/७से७/३६तक
12	भ.५/३९से१६/४३तक,
13	**कालाष्टमी,शीतलाष्टमी,**
14	**A** पीपल को नित्य जल चढ़ावें। कच्छपावतार जयंती
15	भ.९/५९से२०/४५तक, पंचकोषी यात्रा प्रांरभ(अवन्तिका) पंचक १८/४७से **B**
16	**वरुथीनी एकादशी व्रत(खरबूजा),**श्रीवल्लभाचार्य जं.,
17	प्रदोष व्रत,
18	भ.१३/३१से स.सि.६/४से२५/०१तक, **मास शिवरात्री,**
19	भ.१२/२७तक, पंचक २३/५६तक,
20	स्नान,दान व श्राद्ध की वैशाखी अमावस्या,स.सि.६/२से २३/११तक **पंचकोषी यात्रा पूर्ण,**

दि. २०/०४/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
००	००	०२	००	११	०१	११	००
०५	०३	१८	२१	२९	०६	१०	१०
२९	१४	०५	२१	३२	०१	२१	१४
४१	००	०६	३४	२१	००	२६	४८
५८	८२७	३२	०७	१४	६८	०५	०३
३८	५६	०३	४९	२६	५४	०८	१२
अश्वि	अश्वि	आर्द्रा	भर	रेव	रोहि	शत	अश्वि
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	वक्री

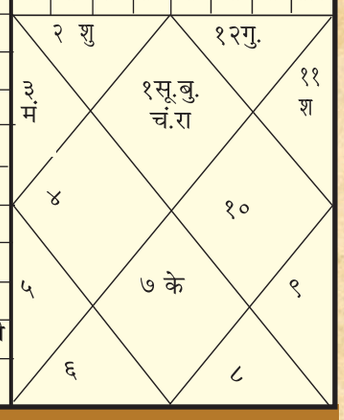

श्री विक्रम सं.२०८० वैशाख शुक्ल पक्ष

दिनांक: २१ अप्रैल से ०५ मई २०२३ तक

सौम्यायन — ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	शुक्र	०८ ३२	भरणी	२३ ०२	प्रीति	११ ०१	०६ ०३	१८ ४८	वृष.२९।०५	००.०६.२९.५८
०२	शनि	०७ ५२	कृतिका	२३ २७	आयु	०९ २७	०६ ०२	१८ ४९	वृषभ	००.०७.२८.३३
०३	रवि	०७ ५१	रोहिणी	२४ ३०	सौभाग्य	०८ २४	०६ ०१	१८ ४९	वृषभ	००.०८.२७.०२
०४	सोम	०८ २८	मृगशिर	२६ १०	शोभन	०७ ५१	०६ ००	१८ ५०	मि.१३।१५	००.०९.२५.३७
०५	मंगल	०९ ४३	आर्द्रा	२८ २३	अति	०७ ४७	०५ ००	१८ ५०	मिथुन	००.१०.२४.०६
०६	बुध	११ ३१	पुनर्वसु	दि रा	सुकर्मा	०८ ०८	०५ ५९	१८ ५१	कर्क २४।२१	००.११.२२.३३
०७	गुरु	१३ ४२	पुनर्वसु	०७ ०२	धृति	०८ ४९	०५ ५८	१८ ५१	कर्क	००.१२.२०.५८
०८	शुक्र	१६ ०४	पुष्य	०९ ५५	शूल	०९ ४१	०५ ५७	१८ ५१	कर्क	००.१३.१९.२१
०९	शनि	१८ २५	श्लेषा	१२ ५०	गंड	१० ३४	०५ ५७	१८ ५२	सिंह १२।५०	००.१४.१७.४१
१०	रवि	२० ३२	मघा	१५ ३३	वृद्धि	११ १८	०५ ५६	१८ ५२	सिंह	००.१५.१६.००
११	सोम	२२ १३	पू.फा	१७ ५४	ध्रुव	११ ४६	०५ ५५	१८ ५३	कन्या२४।२४	००.१६.१४.१६
१२	मंगल	२३ २१	उ.फा.	१९ ४४	व्याघा	११ ५१	०५ ५५	१८ ५३	कन्या	००.१७.१२.३१
१३	बुध	२३ ५३	हस्त	२० ५९	हर्षण	११ २९	०५ ५४	१८ ५४	कन्या	००.१८.१०.४४
१४	गुरु	२३ ४७	चित्रा	२१ ३८	वज्र	१० ३८	०५ ५३	१८ ५४	तुला ०९।२३	००.१९.०८.५४
१५	शुक्र	२३ ०७	स्वाती	२१ ४२	सिद्धि	०९ १९	०५ ५३	१८ ५५	तुला	००.२०.०७.०३

दिनांक	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
अप्रै/मई	
21	**नवीन चंद्रदर्शन,** शिवाजी जयंती, **A**स.सि.२३/२४ से ६/०तक
22	अक्षय तृतीया,परशुराम जं.,बद्रीकेदार यात्रा,त्रेतायुगादि, समुद्रस्नान, **A**
23	भ.२०/०१से, **विनायक चतुर्थी व्रत,**
24	भ.०८/२४तक, स.सि.५/५९से२६/७तक
25	चन्दन षष्ठी व्रत, **श्रीआद्यशंकराचार्य जयंती,**
26	गंगासप्तमी(महा.),**श्रीरामानुजाचार्य जयंती,** रविन्द्रनाथ टैगोर जं०
27	भ.१३/३८से, , **गंगोत्पत्ति,**गंगासप्तमी, स.सि.५/५७से ५/५६तक
28	भ.०२/४९तक,दुर्गाष्टमी,श्री बगलामुखी महाविद्या प्रागट्योत्सव श्रीहरि जयंती,
29	मिथिला दिवस, **सीता नवमी,** मात्र नवमी, **जानकी जयन्ती**
30	
01	भ.०९/२२से२२/०९तक, मोहिनी एकादशी व्रत(गौमुत्र),
02	भौमप्रदोषव्रत,रूख्मणी द्वादशी,परशुराम द्वादशी
03	आद्यशंकराचार्य कैलाश गमन, स.सि.५/५३से२०/५६तक
04	भ.२३/४४से, पूर्णिमा व्रत, **नृसिंह जयंती व छिन्नमस्तका जयन्ती B**
05	भ.११/२७तक,स्नान,दान की **वैशाखी पूर्णिमा,**कुर्मो उत्पत्ति, बुद्ध,

दि. ०५/०५/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
००	०६	०२	००	००	०२	१०	००
२०	११	२७	१५	०३	०५	११	०९
०५	००	०१	१३	०६	५७	३०	२७
१९	४४	२५	३३	४३	१३	२५	०६
५८	७९५	३३	३६	१४	६६	०४	०३
०८	२२	१४	५१	०७	२७	०२	१०
भर	स्वा	पुनर्व	भर	अश्वि	मृग	शत	अश्वि
मा	मा	मा	वक्री	मा	मा	मा	व

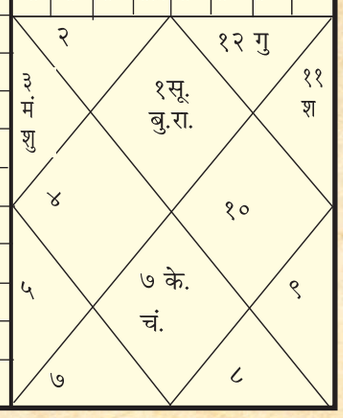

श्री विक्रम सं.२०८० ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

दिनांक: ०६ मई से १९ मई २०२३ तक

सौम्यायन — ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	शनि	२१ ५५	विशाखा	२१ १६	व्य/वरि	०७ ३३ २९ २३	०५ ५२	१८ ५५	वृश्चि.१५।२५	००.२१.०५.१०
०२	रवि	२० १९	अनुराधा	२० २४	परिघ	२६ ५५	०५ ५१	१८ ५५	वृश्चिक	००.२२.०३.१५
०३	सोम	१८ २२	ज्येष्ठा	१९ १३	शिव	२४ ११	०५ ५१	१८ ५६	धनु १९।१३	००.२३.०१.१९
०४	मंगल	१६ ११	मूल	१७ ४८	सिद्ध	२१ १८	०५ ५०	१८ ५६	धनु	००.२३.५९.२१
०५	बुध	१३ ५३	पू.षा.	१६ १५	साध्य	१८ १९	०५ ५०	१८ ५७	मकर२१।५१	००.२४.५७.२२
०६	गुरु	११ ३१	उ.षा.	१४ ४०	शुभ	१५ १९	०५ ४९	१८ ५७	मकर	००.२५.५५.२२
०७	शुक्र	०९ १०	श्रवण	१३ ०६	शुक्ल	१२ १९	०५ ४९	१८ ५८	कुंभ २४।२१	००.२६.५३.२०
०८	शनि	०६ ५४	धनिष्ठा	११ ३८	ब्रह्म	०९ २५	०५ ४८	१८ ५८	कुम्भ	००.२७.५१.१७
०९	शनि	२८ ४६	नवमी तिथि का क्षय							
१०	रवि	२६ ४९	शतभिष	१० १८	ऐंद्र/वैधृ	०६ ३७ २७ ५९	०५ ४८	१८ ५९	मीन २७।२७	००.२८.४९.१३
११	सोम	२५ ०६	पू.भा.	०९ ११	विष्कुंभ	२५ ३२	०५ ४७	१८ ५९	मीन	००.२९.४७.०७
१२	मंगल	२३ ३९	उ.भा.	०८ १८	प्रीति	२३ १८	०५ ४७	१८ ००	मीन	०१.००.४५.०१
१३	बुध	२२ ३२	रेवती	०७ ४१	आयु	२१ २०	०५ ४६	१९ ०१	मेष ०७।४१	०१.०१.४२.५३
१४	गुरु	२१ ४६	अश्विनी	०७ २५	सौभाग्य	१९ ३९	०५ ४६	१९ ०१	मेष	०१.०२.४०.४३
३०	गुरु	२१ २६	भरणी	०७ ३२	शोभन	१८ १८	०५ ४५	१९ ०१	वृभ.१३।३८	०१.०३.३८.३३

दिनांक	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
मई	
06	वृंदावन-विहार परिक्रमा, वन विहार,
07	**देवर्षिनारद जयंती, वीणादान,**
08	भ.७/१९से१८/१८तक,**श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत,**चन्द्रोदय २१/५५,
09	आखुरथ चतुर्थी
10	
11	भ.११/२७से२२/१६तक, **भुवनेश्वरी माता का पाटोत्सव, B**
12	**कालाष्टमी,त्रिलोकी नाथ अष्टमी,**पंचक प्रा.२४/२१से,स.सि.५/४७से १३तक
13	
00	**B** श्री त्रिलोकनाथाष्टमी,(बंगाल),
14	भ.१५/४३से,
15	भ.२६/४६तक, **A** से७/२२तक
16	अपरा एकादशी व्रत(ककड़ी),भद्रकाली एकादशी(बंगाल),स.सि.५/४५ **A**
17	भ.२२/२८से,प्रदोष व्रत,**मासशिवरात्री व्रत,** पंचक ०७/४१तक,
18	भ.१०/२तक, स.सि.५/४५से७/२२तक
19	स्नान,दान व पितृ अमावस्या, **भावुका दर्श अमावस्या शनेश्चर जयंती,** **स.सि.दिन-रात**

दि. १९/०५/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०१	००	०३	००	००	०२	१०	००
०३	२५	०४	१२	०६	१८	१२	०८
३६	३४	५३	१४	२१	०६	१८	४२
३७	१७	११	४४	००	५४	४५	३५
५७	७८९	३४	१७	१३	६३	०२	०३
४९	४७	०७	४९	३७	१८	५१	१०
कृति	कृति	पुष्य	आश्वि	आश्वि	आर्द्रा	शत	आश्वि
मा	मा	मा	वक्री	मा	मा	मा	व

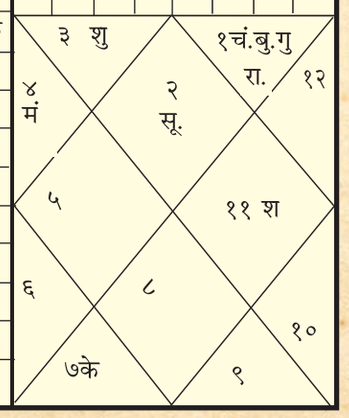

श्री विक्रम सं.२०८० ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

दिनांक: २० मई से ०४ जून २०२३ तक

सौम्यायन — ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ.मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घ.मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	शनि	२१ ३४	कृतिका	०८ ०५	अति	१७ २०	०५ ४५	१९ ०१	वृषभ	०१.०४.३६.२१
०२	रवि	२२ १३	रोहिणी	०९ ०७	सुकर्मा	१६ ४६	०५ ४५	१९ ०२	मिथु.२१।४९	०१.०५.३४.०७
०३	सोम	२३ २२	मृगशिर	१० ३९	धृति	१६ ३५	०५ ४४	१९ ०२	मिथुन	०१.०६.३१.५२
०४	मंगल	२५ ०१	आर्द्रा	१२ ४१	शूल	१६ ४९	०५ ४४	१९ ०३	मिथुन	०१.०७.२९.३६
०५	बुध	२७ ०४	पुनर्वसु	१५ ०९	गंड	१७ २२	०५ ४४	१९ ०३	कर्क ०८।३०	०१.०८.२७.१८
०६	गुरु	२९ २२	पुष्य	१७ ५६	वृद्धि	१८ १०	०५ ४३	१९ ०४	कर्क	०१.०९.२४.५९
०७	शुक्र	दि रा	श्लेषा	२० ५२	ध्रुव	१९ ०५	०५ ४३	१९ ०४	सिंह २०।५३	०१.१०.२२.३८
०७	शनि	०७ ४६	मघा	२३ ४६	व्याघा	१९ ५९	०५ ४३	१९ ०५	सिंह	०१.११.२०.१६
०८	रवि	१० ००	पू.फा	२६ २३	हर्षण	२० ४१	०५ ४३	१९ ०५	सिंह	०१.१२.१७.५२
०९	सोम	११ ५२	उ.फा.	२८ ३१	वज्र	२१ ०३	०५ ४३	१९ ०६	कन्या०८।५८	०१.१३.१५.२७
१०	मंगल	१३ ११	हस्त	दि रा	सिद्धि	२० ५७	०५ ४२	१९ ०६	कन्या	०१.१४.१३.०१
११	बुध	१३ ४९	हस्त	०६ ०३	व्यति	२० १७	०५ ४२	१९ ०६	तुला १८।३२	०१.१५.१०.३३
१२	गुरु	१३ ४२	चित्रा	०६ ५१	वरिया	१९ ०२	०५ ४२	१९ ०७	तुला	०१.१६.०८.०३
१३	शुक्र	१२ ५२	स्वाति	०६ ५५	परिघ	१७ १२	०५ ४२	१९ ०७	वृश्चि.२४।३१	०१.१७.०५.३३
१४	शनि	११ २०	विशा/अनु	०६ २९ / १९ ०६	शिव	१४ ५०	०५ ४२	१९ ०८	वृश्चिक	०१.१८.०३.०१
१५	रवि	०९ १४	ज्येष्ठा	२७ २६	सिद्ध	१२ ०१	०५ ४२	१९ ०८	धनु २७।२६	०१.१९.००.२८

मई / जून

यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

20	नवीन चन्द्रदर्शन,**दस दिवसीय गङ्गादशहरा प्रारम्भ,**स.सि.८/३से ५/४४तक
21	
22	रम्भाव्रत, **महाराणा प्रताप जयंती,** स.सि.५/४३से१०/३७तक
23	भ.१२/०४से, **श्रीविनायक चतुर्थीव्रत,**
24	भ.१२/५७तक, **संत टेऊराम पुण्य तिथि,**
25	अरण्य षष्ठी, आरोग्य षष्ठी, स.सि.५/४२से१७/५४तक
26	**A** स.सि.२६/२०से १७/५४तक
27	भ.०७/४२से ०८/५१तक,
28	दुर्गाष्टमी, **धूमावती जयंती,**
29	महेश नवमी, **दो दिवसीय शिप्रा यात्रा प्रा.**(अवन्तिका),
30	भ.२५/३२से,**गंगा दशहरा, श्रीबटुक भैरव जं०**दो दिवसीय शिप्रा यात्रा पूर्ण, **A**
31	भ.१३/४५तक,**निर्जला एकादशी व्रत(** आम),गायत्री जयंती,स.सि.५/४१से६तक
01	प्रदोषव्रत, **वट सावित्री व्रतारम्भत्रिदिवसीय,**
02	
03	भ.११/१६से२२/१७तक, पूर्णिमा व्रत,
04	स्नान,दान व **वटसावित्री पूर्णिमा व्रत,**मन्वादि,कबीर जयंती, महाराणा प्रताप जयंती

दि. ०४/०६/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०१	०७	०३	००	००	०३	१०	००
१८	१६	१४	२५	०९	४१	१२	०७
५८	५५	०५	११	०५	१८	५२	०५
३८	३०	५३	०५	५१	४८	२६	४३
५७	८५३	३४	७५	१३	५७	०१	०३
२७	१७	५६	२३	४३	४३	२२	१०
रोहि	ज्येष्ठा	पुष्य	भर	आश्वि	पुष्य	शत	आश्वि
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	वक्री

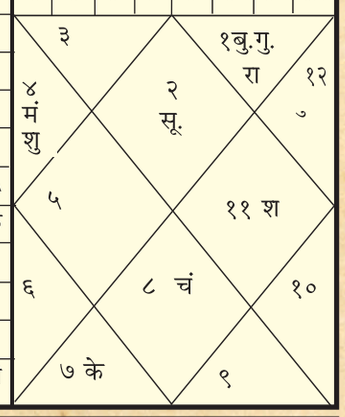

श्री विक्रम सं.२०८० आषाढ़ कृष्ण पक्ष

दिनांक: ०५ जून से १८ जून २०२३ तक

सौम्यायन — ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घ.मि.	सूर्योदय घ.मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	सोम	०६ ४२	मूल	२५ २६	साध्य/शुभ	२९ २७ / ५१ २७	०५ ४२	१९ ०९	धनु	०१.१९.५७.५४
०२	सोम	२७ ५२	द्वितीया तिथि का क्षय							
०३	मंगल	२४ ५३	पू.षा.	२३ १६	शुक्ल	२५ ५६	०५ ४२	१९ ०९	मकर२८।४३	०१.२०.५५.२०
०४	बुध	२१ ५४	उ.षा.	२१ ०५	ब्रह्म	२२ २६	०५ ४२	१९ ०९	मकर	०१.२१.५२.४४
०५	गुरु	१९ ०२	श्रवण	१९ ०१	ऐंद्र	१९ ०१	०५ ४२	१९ १०	मकर	०१.२२.५०.०८
०६	शुक्र	१६ २४	धनिष्ठा	१७ १२	वैधृति	१५ ४८	०५ ४२	१९ १०	कुंभ ०६।०५	०१.२३.४७.३१
०७	शनि	१४ ०५	शत्भिष	१५ ४२	विष्कुंभ	१२ ५१	०५ ४२	१९ १०	कुम्भ	०१.२४.४४.५४
०८	रवि	१२ ०९	पू.भा.	१४ ३४	प्रीति	१० १३	०५ ४२	१९ ११	मीन ०८।४९	०१.२५.४२.१६
०९	सोम	१० ३८	उ.भा.	१३ ५२	आयु	०७ ५५	०५ ४२	१९ ११	मीन	०१.२६.३९.३८
१०	मंगल	०९ ३२	रेवती	१३ ३५	सौभ/शोभ	०५ ५७ / २८ २०	०५ ४२	१९ ११	मेष १३।३५	०१.२७.३६.५९
११	बुध	०८ ५१	अश्विनी	१३ ४३	अति	२७ ०३	०५ ४२	१९ १२	मेष	०१.२८.३४.२०
१२	गुरु	०८ ३५	भरणी	१४ १४	सुकर्मा	२६ ०४	०५ ४२	१९ १२	वृष.२०।२६	०१.२९.३१.४०
१३	शुक्र	०८ ४३	कृतिका	१५ १०	धृति	२५ २५	०५ ४२	१९ १२	वृषभ	०२.००.२९.००
१४	शनि	०९ १५	रोहिणी	१६ २८	शूल	२५ ०४	०५ ४२	१९ १३	मिथुन २९।१६	०२.०१.२६.१९
३०	रवि	१० १०	मृगशिरा	१८ ०९	गंड	२५ ०१	०५ ४३	१९ १३	मिथुन	०२.०२.२३.३८

जून

यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

05	**वटसावित्री व्रत का पारण, अशुन्य व्रत, गुरु हरगोविंद जयंती, A**
00	**A** स.सि.३/२३से५/४०तक
06	भ.१४/२०से,
07	भ.१२/५०तक,**श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत,** चंद्रोदय २२/४३
08	कोकिला पंचमी(जैन),नागपंचमी(बंगाल)
09	भ.१६/२०से २७/०८तक, पंचक प्रा.०६/०५से,
10	**कालाष्टमी,**
11	**शीतलाष्टमी, भल-भलाष्टमी,**स.सि.१४/३२से५/४१तक
12	भ.२१/५८से,
13	भ.०९/२८तक, पंचक १३/३५ तक, स.सि.१३/३२से५/४१तक
14	**योगिनी एकादशी(मिश्री),**
15	भ.०८/३९से२०/५२तक,प्रदोषव्रत,
16	**मास शिवरात्री,**
17	श्राद्ध की अमावस्या, स.सि.५/४१से १६/२५तक
18	स्नान,दान की आषाढ़ी अमावस्या, वंशवर्धक अमावस्या,

दि. १८/०६/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०२	०२	०३	०१	००	०३	१०	००
०२	००	२२	१७	१२	१६	१३	०७
२१	०८	१९	१९	४२	५६	०१	०७
४७	४२	३३	५०	३६	५७	३६	१२
५७	७४६	३५	११३	११	४९	००	०३
१९	४७	३४	४८	३९	५५	०२	१०
मृग	मृग	आर्श्वे	रोहि	आश्वि	आर्श्वे	शत	आश्वि
मा	मा	मा	मा	मा	मा	वक्री	व



श्री विक्रम सं.२०८० आषाढ़ शुक्ल पक्ष

दिनांक: १९ जून से ०३ जुलाई २०२३ तक

सौम्यायन — ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ.मि.	योग	समाप्ति घ.मि.	सूर्योदय घ.मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	सोम	११ २९	आर्द्रा	२० १३	वृद्धि	२५ १७	०५ ४३	१९ १३	मिथुन	०२.०३.२०.५६
०२	मंगल	१३ १०	पुनर्वसु	२२ ३९	ध्रुव	२५ ५०	०५ ४३	१९ १३	कर्क १६।०१	०२.०४.१८.१४
०३	बुध	१५ १३	पुष्य	२५ २३	व्याघ	२६ ३७	०५ ४३	१९ १४	कर्क	०२.०५.१५.३१
०४	गुरु	१७ ३१	श्लेषा	२८ २०	हर्षण	२७ ३४	०५ ४३	१९ १४	सिंह २८।२०	०२.०६.१२.४७
०५	शुक्र	१९ ५७	मघा	दि रा	वज्र	२८ ३३	०५ ४३	१९ १३	सिंह	०२.०७.१०.०३
०६	शनि	२२ २०	मघा	०७ २१	सिध्दि	२९ २८	०५ ४४	१९ १३	सिंह	०२.०८.०७.१८
०७	रवि	२४ २८	पू.फा	१० १४	व्यति	दि रा	०५ ४४	१९ १३	कन्या१६।५४	०२.०९.०४.३२
०८	सोम	२६ ०८	उ.फा.	१२ ४६	व्यति	०६ ०९	०५ ४४	१९ १३	कन्या	०२.१०.०१.४६
०९	मंगल	२७ ०८	हस्त	१४ ४६	वरिय	०६ २५	०५ ४४	१९ १२	तुला २७।३०	०२.१०.५९.००
१०	बुध	२७ २२	चित्रा	१६ ०३	परि/शिव	२६ १० / १८	०५ ४५	१९ १२	तुला	०२.११.५६.१३
११	गुरु	२६ ४५	स्वाति	१६ ३३	सिद्ध	२७ ४६	०५ ४८	१९ १२	तुला	०२.१२.५३.२५
१२	शुक्र	२५ २०	विशाख	१६ १३	साध्य	२५ ३४	०५ ५०	१९ १२	वृश्चि.१०।२२	०२.१३.५०.३७
१३	शनि	२३ १०	अनुराध	१५ ०७	शुभ	२२ ४६	०५ ५०	१९ १२	वृश्चिक	०२.१४.४७.४८
१४	रवि	२० २४	ज्येष्ठा	१३ २१	शुक्ल	१९ २८	०५ ५०	१९ १२	धनु १३।२१	०२.१५.४४.५९
१५	सोम	१७ ११	मूल	११ ०४	ब्रह्म	१५ ४७	०५ ५०	१९ १२	धनु	०२.१६.४२.१०

जून / जुलाई

यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

19	**नवीन चंद्रदर्शन, गुप्त नवरात्र विधान प्रारंभ,**
20	मनोरथ द्वितीया,श्रीजगदीश रथ यात्रा(पुरी)
21	स.सि. दिन-रात,
22	भ.०४/१७से १७/२७तक, विनायक चतुर्थी, श्रीद्वारिकाधीश पाटोत्सव
23	**हेरा पंचमी,**
24	**स्कन्द षष्ठी, कुसुम्बा षष्ठी,** सन्त टेऊराम जयंती
25	विवस्वत सप्तमी, स.सि.१०/११से५/४३तक
26	भ.१२/२५से १३/१९तक, दुर्गाष्टमी,
27	**भड्डुली नवमी, गुप्त नवरात्र विधान पूर्ण**
28	आशा दशमी, मन्वादि,
29	भ.१५/०६से, देवशयनी एकादशी(दाख),चातुर्मास व्रतारंभ, षष्टपुर यात्रा
30	भ.०२/४२तक, जया पार्वती व्रत प्रारंभ,स.सि.१६/१०से ५/४४तक **A**
01	शनि प्रदोषव्रत,
02	भ.२०/२१से, चौमासी, चौदस वायु परीक्षा, स.सि.१३/१८से५/४५तक
03	भ.०६/४७तक,स्नान,दान,व्रत एवं आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा,
	संन्यासियो का चातुर्यमास प्रारंभ कोकिला व्रत, गोवर्धन परिक्रमा,

दि. ०३/०७/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०२	०८	०४	०२	००	०३	१०	००
१६	०९	११	१८	१५	२७	१२	०७
३९	५३	१७	५०	२६	४९	५०	१९
५४	१९	०३	३१	३५	२५	१४	२४
५७	८८८	३६	१२९	६०	३५	०१	०३
११	५५	११	४२	१२	३९	२९	१५
आर्द्रा	मूल	मघा	आर्द्रा	भरणी	आर्श्वे	शत	आश्वि
मा	मा	मा	मा	मा	मा	वक्री	व

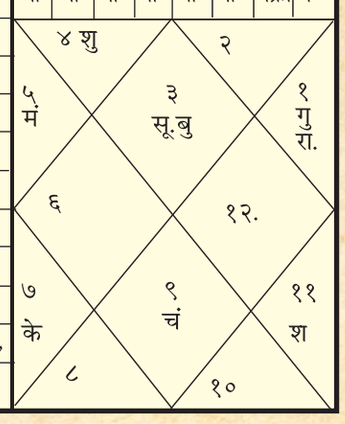

श्री विक्रम सं.२०८० श्रावण कृष्ण पक्ष

दिनांक: ०४ जुलाई से १७ जुलाई २०२३ तक

सौम्यायन — वर्षा ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ.मि.	योग	समाप्ति घ.मि.	सूर्योदय घ.मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	मंगल	१३ ४१	पू/उ.षा	३६ / ४६	ऐन्द्र	११ ५२	०५ ४७	१९ १३	मकर१३।४७	०२.१७.३९.२१
०२	बुध	१० ०५	श्रवण	२६ ५९	वैधृ/विष्कुं	०७ ५० / २७ ५१	०५ ४७	१९ १३	मकर	०२.१८.३६.३१
०३	गुरु	०६ ३२	धनिष्ठा	२४ २८	प्रीति	२४ ०२	०५ ४७	१९ १३	कुंभ १३।४१	०२.१९.३३.४२
०४	गुरु	२७ १६	चतुर्थी तिथि का क्षय							
०५	शुक्र	२४ २०	शतभिष	२२ १९	आयु	२० ३२	०५ ४८	१९ १२	कुम्भ	०२.२०.३०.५३
०६	शनि	२१ ५५	पू.भा.	२० ३८	सौभाग्य	१७ २५	०५ ४८	१९ १२	मीन १५।००	०२.२१.२८.०४
०७	रवि	२० ०३	उ.भा.	१९ ३२	शोभन	१४ ४६	०५ ४८	१९ १२	मीन	०२.२२.२५.१६
०८	सोम	१८ ४७	रेवती	१९ ०२	अति	१२ ३५	०५ ४९	१९ १२	मेष १९।०२	०२.२३.२२.२८
०९	मंगल	१८ ०८	अश्विनी	१९ ०७	सुकर्मा	१० ५५	०५ ४९	१९ ०९	मेष	०२.२४.१९.४१
१०	बुध	१८ ०३	भरणी	१९ ५६	धृति	०९ ४२	०५ ५०	१९ ०९	वृष.२६।०१	०२.२५.१६.५४
११	गुरु	१८ २८	कृतिका	२० ५५	शूल	०८ ५५	०५ ५०	१९ ०९	वृषभ	०२.२६.१४.०७
१२	शुक्र	१९ २०	रोहिणी	२२ २९	गंड	०८ ३०	०५ ५०	१९ ०९	वृषभ	०२.२७.११.२१
१३	शनि	२० ३६	मृगशिर	२४ २६	वृद्धि	०८ २४	०५ ५१	१९ ०८	मिथु.११।२५	०२.२८.०८.३५
१४	रवि	२२ ११	आर्द्रा	२६ ४२	ध्रुव	०९ ३५	०५ ५१	१९ ०८	मिथुन	०२.२९.०५.५०
३०	सोम	२४ ०५	पुनर्वसु	२९ १४	व्याघा	०९ ००	०५ ५२	१९ ०८	कर्क २२।३४	०३.००.०३.०५

जुलाई

यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

04	अशून्यशयन व्रत,नक्त व्रतारंभ संपूर्ण मास(दाम्पत्य सुख हेतु),हिंडोला प्रां **A**
05	भ.२०/१५से, **C** पंचक प्रा.१३/४१से
06	भ.०६/३०तक,श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत,अङ्गारकी चंद्रोदय २२/१०, **C**
00	**A** जया पार्वती व्रत का जागरण, शिवजी का विशेष पूजन व व्रत, **B**
07	मोना पंचमी,नागपंचमी(बंगाल)
08	भ.२१/५१से, **B श्रावण में शाक का परित्याग करें**
09	भ.०८/५०तक,कालाष्टमी, केर पूजा(त्रिपुरा), स.सि.५/४७से१५/२९तक
10	पंचक १९।०२ तक **श्रीमहाकालेश्वर सवारी,**
11	हरकाली पूजा(उत्तराखण्ड),स.सि.५/४८से१७/४तक
12	भ.०५/५७से१७/५९तक,स.सि.१९/४३से५/४९तक
13	कामदा भागवत एकादशी व्रत वैष्णव(गोदुग्ध),
14	
15	भ.२०/३२से,शनि प्रदोषव्रत,**मास शिवरात्री व्रत(** श्रवण मास में शिवरात्री महोत्सव)
16	भ.९/१७तक,
17	स्नान,दान,श्राद्ध की हरियाली व सोमवती अमावस्या, दर्श अमावस्या,
	चितलगी अमावस्या (उड़ीसा),**श्रीमहाकालेश्वर सवारी,सूर्य याम्यायन में**

दि.१७/०७/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०३	०२	०४	०३	००	०४	१०	००
००	२१	०९	१६	१७	०३	१२	०५
०१	२६	४८	४६	३७	४४	२०	३५
१५	०५	१७	१२	५९	३२	२३	००
५७	७२५	३६	१०७	०८	१३	०२	०३
१६	५६	४५	१०	३१	०६	४३	१५
पुनर्व	पुनर्वसु	मघा	आर्श्वे	भरणी	मघा	शत	आश्वि
मा	मा	मा	मा	मा	मा	वक्री	वक्री

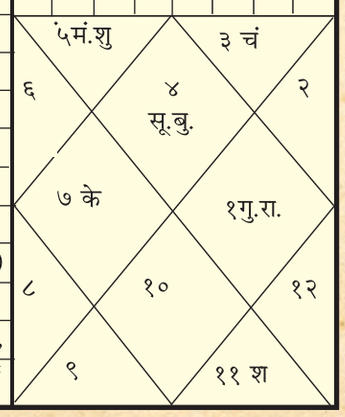

श्री विक्रम सं.२०८० (अधिक) श्रावण शुक्ल पक्ष

दिनांक: १८ जुलाई से ०१ अग.२०२३ तक

याम्यायन — वर्षा ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	सूर्योदय घ.मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	मंगल	२६ १३	पुष्य	दि रा	हर्षण	०९ ३८	०५ ५२	१९ १३	कर्क	०३.०१.००.२१
०२	बुध	२८ ३४	पुष्य	०८ ००	वज्र	१० २७	०५ ५३	१९ १३	कर्क	०३.०१.५७.३७
०३	गुरु	दि रा	श्लेषा	१० ५८	सिद्धि	११ २५	०५ ५३	१९ १२	सिंह १०।५८	०३.०२.५४.५३
०३	शुक्र	०७ ०१	मघा	१४ ००	व्यति	१२ २६	०५ ५३	१९ १२	सिंह	०३.०३.५२.१०
०४	शनि	०९ २९	पू.फा	१७ ०१	वरिय	१३ २६	०५ ५४	१९ १२	कन्या२३।४५	०३.०४.४९.२७
०५	रवि	११ ४८	उ.फा.	१९ ५०	परिघ	१४ १८	०५ ५४	१९ ११	कन्या	०३.०५.४६.४४
०६	सोम	१३ ४६	हस्त	२२ १५	शिव	१४ ५४	०५ ५५	१९ ११	कन्या	०३.०६.४४.०२
०७	मंगल	१५ १२	चित्रा	२४ ०६	सिद्ध	१५ ०४	०५ ५५	१९ ११	तुला ११।१५	०३.०७.४१.२०
०८	बुध	१५ ५६	स्वाति	२५ १३	साध्य	१४ ४१	०५ ५१	१९ १०	तुला	०३.०८.३८.३८
०९	गुरु	१५ ५१	विशाख	२५ ३१	शुभ	१३ ४१	०५ ५६	१९ १०	वृश्चि.१९।३१	०३.०९३५.५७
१०	शुक्र	१४ ५५	अनुराधा	२४ ५८	शुक्ल	११ ५९	०५ ५६	१९ ०९	वृश्चिक	०३.१०.३३.१६
११	शनि	१३ ०८	ज्येष्ठा	२३ ३७	ब्रह्म	०९ ३६	०५ ५७	१९ ०९	धनु २३।३७	०३.११.३०.३५
१२	रवि	१० ३७	मूल	२१ ३५	ऐंद/वैधृ	०६ २७ / ०६ ०४	०५ ५७	१९ ०८	धनु	०३.१२.२७.५५
१३	सोम	०७ ३०	पू.षा.	१९ ०१	विष्कुभ	२३ ०७	०५ ५८	१९ १०	मकर२४।१९	०३.१३.२५.१६
१४	सोम	२७ ५५	चतुर्दशी तिथि का क्षय							
१५	मंगल	२४ ०४	उ.षा.	१६ ०६	प्रीति	१८ ५५	०५ ५८	१९ ०७	मकर	०३.१४.२२.३७

दिनांक	जुलाई अगस्त	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
	18	अधिक मास स्नान,दान,नियमादि प्रां.,सप्त सागर,नवनारायण,८४ महादेव दर्शन यात्राA
	19	नवीन चन्द्रदर्शन, स.सि.५/५३से८/०तक
	20	A स.सि.५/११से५/४९तक
	21	भ.२०/१२से,विनायक चतुर्थी,
	22	भ.९/२६तक,
	23	
	24	**श्री महाकालेश्वर सवारी,**
	25	भ.१५/०८से २७/३६तक,
	26	दुर्गाष्टमी,
	27	
	28	भ.२६/०४ से
	29	भ.१३/०५ तक, **कमला एकादशी,** स.सि.दिन-रात,
	30	**प्रदोषव्रत,**
	31	**श्रीमहाकालेश्वर सवारी,**पंचक प्रा.१७/१०तक
	00	
	01	भ.२७/५१से१३/५७तक, स्नान,दान,जप,अधिक मास की पूर्णिमा

दि. ०१/०८/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०३	०९	०४	०४	००	०४	१०	००
१४	३१	१९	१०	१९	०२	११	०४
२०	१८	०३	०३	२९	५०	३१	४७
४७	०३	५५	०२	४०	३१	२२	१८
५७	९११	३७	७८	०६	२१	०३	०३
२२	५०	२०	३१	२०	०२	४५	१५
पुष्य	उ.षा	पूफा	मघा	भरणी	मघा	शत	अश्वि
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	वक्री

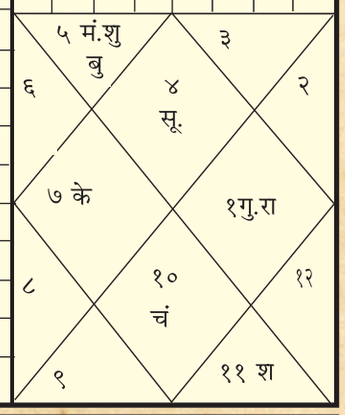

श्री विक्रम सं.२०८० (अधिक) श्रावण कृष्ण पक्ष

दिनांक: ०२ अगस्त से १६ अगस्त २०२३ तक

याम्यायन — वर्षा ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	बुध	२० ०१	श्रवण	१३ ०१	आयु	१४ ३६	०५ ५९	१९ ०७	कुंभ २३।२९	०३.१५.१९.५९
०२	गुरु	१६ ५९	धनिष्ठा	०९ ५९	सौभाग्य	१० २०	०५ ५९	१९ ०६	कुम्भ	०३.१६.१७.२२
०३	शुक्र	१२ ११	शत/पूभा	०७ ११ / २८ ४७	शोभ/अति	०६ १६ / २६ ३२	०५ ५९	१९ ०६	मीन २३।२०	०३.१७.१४.४६
०४	शनि	०९ ४७	उ.भा.	२६ ५७	सुकर्मा	२३ १४	०५ ००	१९ ०५	मीन	०३.१८.१२.११
०५	रवि	०७ ५७	रेवती	२५ ४६	धृति	२० २९	०६ ००	१९ ०४	मेष २५।४६	०३.१९.०९.३७
०६	रवि	२९ ४६	षष्ठी तिथि का क्षय							
०७	सोम	२८ १९	अश्विनी	२५ १९	शूल	१८ १९	०६ ०१	१९ ०४	मेष	०३.२०.०७.०५
०८	मंगल	२७ ३५	भरणी	२५ ३५	गंड	१६ ४३	०६ ०१	१९ ०३	मेष	०३.२१.०४.३३
०९	बुध	२८ ३१	कृतिका	२६ ३१	वृद्धि	१५ ४३	०६ ०२	१९ ०२	वृष.०७।४५	०३.२२.०२.०३
१०	गुरु	२९ ०४	रोहिणी	२८ ०४	ध्रुव	१५ १२	०६ ०२	१९ ०२	वृषभ	०३.२२.५९.३५
११	शुक्र	दि रा	मृगशिरा	दि रा	व्याघा	१५ ०८	०६ ०२	१९ ०१	मिथु.१७।०१	०३.२३.५७.०७
११	शनि	०६ ०५	मृगशिरा	०६ ०५	हर्षण	१५ २५	०६ ०३	१९ ००	मिथुन	०३.२४.५४.४१
१२	रवि	०८ २९	आर्द्रा	०८ २९	वज्र	१५ ५८	०६ ०३	१८ ५९	कर्क २८।२८	०३.२५.५२.१७
१३	सोम	१० ०९	पुनर्वसु	११ ०९	सिद्धि	१६ ४२	०६ ०३	१८ ५९	कर्क	०३.२६.४९.५४
१४	मंगल	१२ ०१	पुष्य	१४ ०१	व्यति	१७ ३५	०६ ०४	१८ ५८	कर्क	०३.२७.४७.३२
३०	बुध	१५ ११	श्लेषा	१६ ००	वरिया	१८ ३२	०६ ०४	१८ ५७	सिंह १६।००	०३.२८.४५.११

दिनांक	अगस्त	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
	02	पंचक २३/२९ से,
	03	
	04	भ.२६/२८से १२/४५तक, श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत, चंद्रोदय ०९/२३ A
	05	**श्रीमहाकालेश्वर सवारी,**
	06	पंचक २५/४६तक, स.सि.२५/४३से
	00	
	07	भ.०५/२०से१६/४१तक,**श्रीमहाकालेश्वर सवारी,** स.सि.६/४५तक
	08	
	09	स.सि.दिन-रात
	10	भ.१६/३४ से,लोकमान्य तिलक पु.ति.,
	11	भ.५/०६तक, **अजा एकादशी व्रत** (खारक)
	12	**कमला एकादशी व्रत** (वैष्णव),
	13	**प्रदोषव्रत, श्रीमहाकालेश्वर सवारी**
	14	भ.१०/२५से२३/३२तक, मास शिवरात्रीव्रत,स.सि.११/७से
	15	लोहार्गल स्नान,भारतीय स्वतन्त्रता दिवस, स.सि.६/५०तक
	16	स्नान,दान,श्राद्ध की अमावस्या, अधिक मास पूर्ण

दि. १६/०८/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०३	०३	०४	०४	००	०३	१०	००
२८	२४	२८	२५	२०	२४	१०	०३
४३	२०	२८	०५	४५	४३	२९	५९
२५	१०	३५	०९	४८	४३	३७	३७
५७	७११	३७	३७	३७	३६	०४	०३
४०	२७	५७	०४	०४	३४	२४	१५
आशे	आशे	उ.फा.	पू.फा	भरणी	आशे	शत	अश्वि
मा	मा	मा	मा	मा	व.अ	वक्री	वक्री

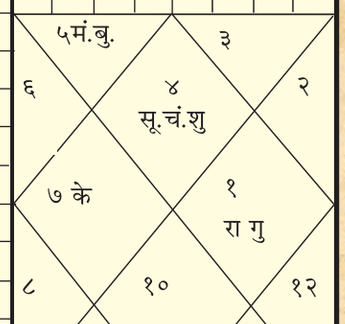

श्री विक्रम सं.२०८० श्रावण शुक्ल पक्ष

दिनांक: १७ अगस्त से ३१ अगस्त २०२३ तक

याम्यायन — वर्षा ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ.मि.	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	गुरु	१७ ३९	मघा	२० ०१	परिघ	१९ ३२	०६ ०५	१८ ५६	कन्या२९।४३	०३.२९.४२.५२
०२	शुक्र	२० ०५	पू.फा.	२२ ००	शिव	२० २९	०६ ०५	१८ ५६	कन्या	०४.००.४०.३४
०३	शनि	२२ २३	उ.फा.	२५ ५०	सिद्ध	२१ २१	०६ ०५	१८ ५५	कन्या	०४.०१.३८.१७
०४	रवि	२४ २५	हस्त	२८ २४	साध्य	२२ ०१	०६ ०६	१८ ५४	तुला १७।३३	०४.०२.३६.०१
०५	सोम	२६ ०३	चित्रा	०६ ३४	शुभ	२२ २३	०६ ०६	१८ ५३	तुला	०४.०३.३३.४६
०६	मंगल	२७ ०९	चित्रा	०८ ११	शुक्ल	२२ २०	०६ ०६	१८ ५२	वृश्चि.२६।५७	०४.०४.३१.३३
०७	बुध	२७ ३४	स्वाति	०९ ०७	ब्रह्म	२१ ४७	०६ ०७	१८ ५१	वृश्चिक	०४.०५.२९.२१
०८	गुरु	२७ १४	विशाख	०९ १७	ऐंद्र	२० ३९	०६ ०७	१८ ५२	वृश्चिक	०४.०६.२७.१०
०९	शुक्र	२६ ०६	अनुराधा	०८ ४०	वैधृति	१८ ५३	०६ ०७	१८ ५०	धनु ०८।४०	०४.०७.२५.००
१०	शनि	२४ ११	ज्येष्ठा	०७ १९	विष्कुंभ	१६ २९	०६ ०८	१८ ४९	धनु	०४.०८.२२.५१
११	रवि	२१ ३६	मूल/पूषा	२९ १८	प्रीति	१३ २९	०६ ०८	१८ ४८	मकर१० ।४२	०४.०९.२०.४४
१२	सोम	१८ २६	उ.षा.	२६ ४६	आयु/सौभा	०९ ५८ / ३० ०४	०६ ०९	१८ ४७	मकर	०४.१०.१८.३७
१३	मंगल	१४ ५१	श्रवण	२३ ५३	शोभन	२५ ५३	०६ ०९	१८ ४६	कुंभ १०।२२	०४.११.१६.३२
१४	बुध	११ ०२	धनिष्ठा	२० ४९	अति	२१ ३५	०६ ०९	१८ ४५	कुम्भ	०४.१२.१४.२९
१५	गुरु	०७ ०८	शत्भिषा	१७ ४८	सुकर्मा	१७ १८	०६ १०	१८ ४४	कुम्भ	०४.१३.१२.२७

दिनांक	सितंबर	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
	17	नवीन चन्द्रदर्शन,आदित्य पूजा, मेलाछिन्नमस्तका (चिन्तपूर्णा),
	18	श्रृंगार द्वितीया B पूजन स्वर्ण गौरी व्रत
	19	मधुश्रवा तृतीया, हरियाली तीज, जीवंतिका पूजन, महालक्ष्मी स्थापना व B
	20	भ.११/२३से, **विनायक चतुर्थी,** C **श्री महाकालेश्वर सवारी,**
	21	भ.१२/२१तक, E स.सि.५/१५से६/८तक
	22	जागृतगौरी व नागपंचमी,वर्णषष्ठी,**नागचंद्रेश्वर दर्शन**(अवन्तिका),C
	23	वर्ण, श्रियाल षष्ठी, लुंठन षष्ठी, स्कन्द षष्ठी,कल्की जं.
	24	भ.२७/३१से १५/२६तक,शीतला सप्तमी, गोस्वामी तुलसीदास जं.,
	25	दुर्गाष्टमी, स.सि.६/७से९/१४तक
	26	नकुल नवमी D स.सि.६/७से७/१६तक,
	27	भ.१०/५५से२१/३२तक,पवित्रा(पुत्रदा)एकादशीव्रत,पवित्रार्पण जीवंतिका,D
	28	सोमप्रदोष व्रत, पवित्रा बारस,दमोदर द्वादशी, **श्री महाकालेश्वर सवारी,** E
	29	आखेटक त्रयोदशी, पंचक प्रां.१०/२२ से
	30	भ.१०/५८से२१/१तक,पूर्णिमा व्रत, **रक्षाबंधन** ,शुक्लयजुर्वेदीय उपाकर्म,ऋषि F
	31	स्नान,दान,जप की पूर्णिमा, कृष्ण यर्जुवेदीय उपाकर्म
		F तैतरीय व माध्यन्दिनी श्रावणी उपाकर्म,तर्पण पूजन,

दि. ३१/०८/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०४	१०	०५	०४	००	०३	११	००
१३	११	०८	२५	२१	१८	०९	०१
१०	१२	०१	०९	२१	२०	२२	४०
०९	२९	२६	३९	४१	५०	५६	०३
५७	९१६	३८	४१	००	०९	०४	०३
५९	०५	३४	४८	५४	३८	३२	१५
मघा	शतभि	उ.फा	पू.फा	भरणी	आशे	शतभि	अश्वि
मा	मा	मा	वक्री	मा	वक्री	वक्री	वक्री

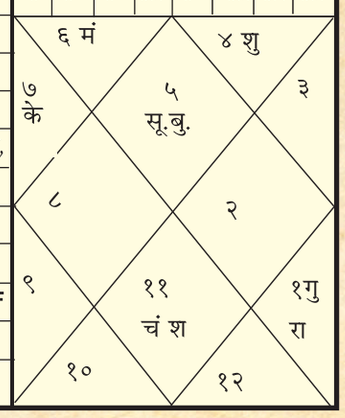

श्री विक्रम सं.२०८० भाद्रपद कृष्ण पक्ष

दिनांक: ०१ सितं. से १५ सित.२०२३ तक

याम्यायन — शरद ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	गुरु	२७ २२	प्रतिपदा तिथि का क्षय							
०२	शुक्र	२५ ५३	पू.भा	१४ ५९	धृति	१३ १२	०६ १०	१८ ४३	मीन ०९।३९	०४.१४.१०.२६
०३	शनि	२३ ५३	उ.भा.	१२ ३३	शूल/गंड	०९ २४ / ३० ०३	०६ १०	१८ ४२	मीन	०४.१५.०८.२८
०४	रवि	२१ २७	रेवती	१० ४१	वृद्धि	२७ १४	०६ १०	१८ ४१	मेष १०।४१	०४.१६.०६.३१
०५	सोम	१५ ४५	अश्विनी	०९ २९	ध्रुव	२५ ०१	०६ ११	१८ ४०	मेष	०४.१७.०४.३६
०६	मंगल	१५ ४९	भरणी	०९ ०३	व्याघा	२३ २६	०६ ११	१८ ३९	वृष.१५।०३	०४.१८.०२.४३
०७	बुध	१५ ४१	कृतिका	०९ २३	हर्षण	२२ २८	०६ ११	१८ ३८	वृषभ	०४.१९.००.५१
०८	गुरु	१६ १७	रोहिणी	१० २७	वज्र	२२ ०४	०६ १२	१८ ३७	मिथु.२३।१५	०४.१९.५९.०२
०९	शुक्र	१७ ३३	मृगशिर	१२ १२	सिद्धि	२२ ०९	०६ १२	१८ ३६	मिथुन	०४.२०.५७.१५
१०	शनि	१९ २१	आर्द्रा	१४ २९	व्यति	२२ ३७	०६ १२	१८ ३५	मिथुन	०४.२१.५५.३०
११	रवि	२१ ३१	पुनर्वसु	१७ ०९	वरिया	२३ २२	०६ १३	१८ ३४	कर्क १०।२७	०४.२२.५३.४७
१२	सोम	२३ ५५	पुष्य	२० ०३	परिघ	२४ १६	०६ १३	१८ ३३	कर्क	०४.२३.५२.०६
१३	मंगल	२६ २४	श्लेषा	२३ ०४	शिव	२५ १३	०६ १३	१८ ३२	सिंह २३।०४	०४.२४.५०.२७
१४	बुध	२८ ५२	मघा	२६ ०३	सिद्ध	२६ १०	०६ १४	१८ ३१	सिंह	०४.२५.४८.५०
३०	गुरु	दि रा	पू.फा	२८ ५७	साध्य	२७ ०१	०६ १४	१८ ३०	सिंह	०४.२६.४७.१५
३०	शुक्र	०७ १२	उ.फा.	दि रा	शुभ	२७ ४४	०६ १४	१८ २९	कन्या ११।१०	०४.२७.४५.४२

दिनांक	सितंबर	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
	00	A स.सि.०६/१६तक
	01	भाद्रपद मास में दही का त्याग करें।
	02	भ.१०/१५ से २०/४९तक,**कज्जली तीज सतुआ तीज,**
	03	**श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत** चंद्रोदय २१/०८,पंचक १०/४१तक, स.सि.१०/३८से
	04	**नाग व रक्षा पंचमी,**मनसा पूजा, हलछट चंद्र षष्ठी, **श्रीमहाकालेश्वर सवारीA**
	05	भ.१५/४६से,रांधन छट, स.सि.०९/०से
	06	भ.२७/३६तक,शीतला सप्तमी,कालाष्टमी,जन्माष्टमी व्रत(स्मार्त), स.सि.९/२०तक
	07	**जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)**
	08	गोगानवमी
	09	भ.०६/२०से१९/१७तक,
	10	**अजाएकादशी व्रत (खारक), संस्कृत दिवस,** स.सि.१७/७से
	11	**श्रीमहाकालेश्वर सवारी,** स.सि.२०/०१तक
	12	**भौमप्रदोष,** स.सि.६/४से२२/०२तक
	13	भ.२६/२१से१५/३५तक, **मासशिवरात्री**
	14	श्राद्ध कुशग्रहणी अमावसस्या
	15	स्नान-दान की अमावस्या

दि.१५/०९/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०४	०४	०५	०४	००	०३	१०	००
२७	२६	१७	१३	२१	२०	०८	०१
४३	५६	४५	५२	१२	११	१६	००
२३	३७	०६	५६	५१	५१	४४	३२
५८	७१६	३९	०७	०२	२२	०४	०३
२८	३६	१६	२७	०६	५१	०८	१२
उफा	उ.फा	हस्त	पूफा	भरणी	आशे	शत	अश्वि
मा	मा	मा	वक्री	वक्री	मा	वक्री	वक्री

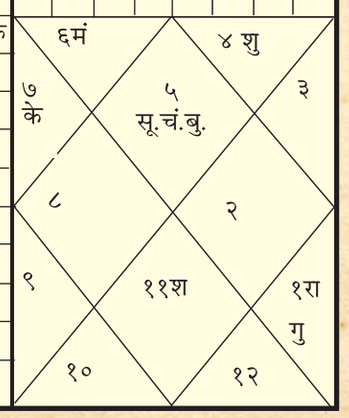

श्री विक्रम सं.२०८० भाद्रपद शुक्ल पक्ष

दिनांक: १६ सितं. से २९ सितं. २०२३ तक

याम्यायन — शरद ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	शनि	०९ २१	उ.फा.	०७ ३८	शुक्ल	२८ १५	०६ १५	१८ २८	कन्या	०४.२८.४४.१०
०२	रवि	११ १२	हस्त	१० ०५	ब्रह्म	२८ ३०	०६ १५	१८ २७	तुला २३।१०	०४.२९.४२.४१
०३	सोम	१२ ४२	चित्रा	१२ १०	ऐन्द्र	२८ २६	०६ १५	१८ २६	तुला	०५.००.४१.१३
०४	मंगल	१३ ४६	स्वाति	१३ ५१	वैधृति	२७ ००	०६ १५	१८ २५	तुला	०५.०१.३९.४७
०५	बुध	१४ १९	विशाखा	१५ ०१	विष्कुंभ	२७ ०७	०६ १६	१८ २४	वृश्चि.०८।४७	०५.०२.३८.२३
०६	गुरु	१४ १८	अनुराधा	१५ ३८	प्रीति	२५ ४६	०६ १६	१८ २३	वृश्चिक	०५.०३.३७.००
०७	शुक्र	१३ ३८	ज्येष्ठा	१५ ३७	आयु	२३ ५५	०६ १६	१८ २२	धनु १५।३७	०५.०४.३५.३९
०८	शनि	१२ २१	मूल	१४ ५९	सौभाग्य	२१ ३३	०६ १७	१८ २१	धनु	०५.०५.३४.२०
०९	रवि	१० २६	पू.षा.	१३ ४४	शोभन	१८ ४२	०६ १७	१८ २०	मकर१९।२०	०५.०६.३३.०२
१०	सोम	०७ ५९	उ.षा.	११ ५८	अति	१५ २५	०६ १७	१८ १९	मकर	०५.०७.३१.४७
११	सोम	२९ ०४	एकादशी तिथि का क्षय							
१२	मंगल	२५ ४९	श्रवण	०९ ४४	सुकर्मा	११ ४८	०६ १८	१८ १८	कुंभ २०।३०	०५.०८.३०.३२
१३	बुध	२२ २२	धनि/शत	०७ १३ २८ ३२	धृति/शूल	०७ ५६ २७ ५७	०६ १८	१८ १७	कुम्भ	०५.०९.२९.२०
१४	गुरु	१८ ५२	पू.भा.	२५ ५१	गंड	२३ ५७	०६ १८	१८ १६	कुम्भ	०५.१०.२८.०९
१५	शुक्र	१५ ३०	उ.भा.	२३ २१	वृद्धि	२० ०५	०६ १९	१८ १५	मीन २०।३१	०५.११.२७.०१

अक्टूं	
	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
16	नवीन चंद्रदर्शन,
17	हरतालीका तीज व्रत, वराह जंयती, सामवेदी उपाकर्म,स.सि.६/६से१०/२तक
18	हरतालीका व्रत(मध्यान्तर से) A चन्द्रदर्शन निषेध
19	भ.२५/१४से१३/४३तक,**श्रीगणेश व कलंक चतुर्थी,**पार्थिव गणेश स्था.,**A**
20	**ऋषि पंचमी,सप्तऋषिअरुन्धती पूजा**, गुरु पंचमी,स.सि.१४/५९से
21	सूर्य,चम्पा स्कन्द,मंथन षष्ठी, **बलदेव जयंती,** स.सि.१५/३५तक
22	भ.१३/३५से,कालाष्टमी,**संतान सप्तमी,** ललीता सप्तमी, ज्येष्ठा गौरी पूजन
23	भ.२५/१तक,राधाष्टमी,दुर्वा,दुर्गा धरोहाष्टमी, दधीची जं०,महालक्ष्मी व्रत प्रां०.
24	तल,अदुखनवमी हरिजं०,**तेजादशमी,**रामदेवजी का मेला,स.सि.१३/४१से
25	भ.१८/३१से,**एकादशीव्रत (स्मार्त),**स.सि.०५/०तक
00	**A** वामन जयंती,श्रवण द्वादशी गौरीरात्री व्रत,पंचक प्रां.२०/३० से
26	भ.०५तक,**परिवर्तनीय एकादशी व्रत(वैष्णव),**डोलग्यारस, जलझूलनी,**A**
27	प्रदोषव्रत
28	भ.१८/४९से,अनन्त चतुर्दशी व्रत, पार्थिव गणेश विर्जसन,
29	भ.५/६तक,स्नान-दान-व्रत पूर्णिमा, कन्याओं द्वारा संज्ञा निर्माण व पूजा, प्रोष्ठपदी की पूनम, महालय श्राद्ध प्रारंभ,स.सि.२३/१९से

दि .२९/०९/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०५	११	०५	०४	००	०३	१०	००
११	०५	२६	२५	२०	२७	०७	००
२४	३६	२९	४३	२४	५७	२३	४७
४१	२३	०९	०१	४०	१७	५५	३३
५८	९१६	३९	९३	०४	४२	०३	०३
५२	१३	५३	५९	४४	११	२०	११
हस्त	उ.भा	चित्रा	पू.फा	भरणी	आश्वे	शत	आश्वि
मा	मा	मा	मा	वक्री	मा	वक्री	वक्री

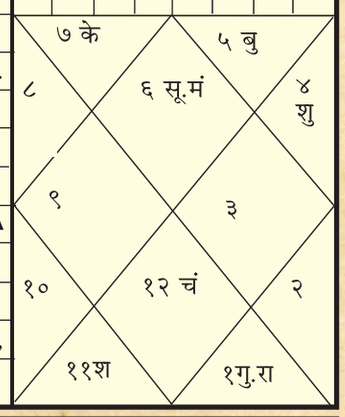

श्री विक्रम सं.२०८० आश्विन कृष्ण पक्ष

दिनांक: ३० सितं. से १४ अक्टू. २०२३ तक

याम्यायन — शरद ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	शनि	१२ २५	रेवती	२१ ११	ध्रुव	१६ २९	०६ १९	१८ १४	मेष २१।११	०५.१२.२५.५४
०२	रवि	०९ ४५	अश्विनी	१९ ३०	व्याघा	१३ १६	०६ १९	१८ १३	मेष	०५.१३.२४.४९
०३	सोम	०७ ३९	भरणी	१८ २७	हर्षण	१० ३१	०६ २०	१८ १२	वृष.२४।१८	०५.१४.२३.४७
०४	सोम	३० १५	चतुर्थी तिथि का क्षय							
०५	मंगल	२९ ३६	कृतिका	१८ ०६	वज्र	०८ २०	०६ २०	१८ ११	वृषभ	०५.१५.२२.४६
०६	बुध	२९ ४४	रोहिणी	१८ ३२	सिद्धि/व्यति	०६ ४५ २९ ४८	०६ २०	१८ १०	वृषभ	०५.१६.२१.४८
०७	गुरु	दि रा	मृगशिरा	१९ ४२	वरिया	२९ २५	०६ २१	१८ ०९	मिथु.०७।०२	०५.१७.२०.५२
०७	शुक्र	०६ ३८	आर्द्रा	२१ ३४	परिघ	२९ ३३	०६ २१	१८ ०८	मिथुन	०५.१८.१९.५९
०८	शनि	०८ ११	पुनर्वसु	२३ ५९	शिव	३० ०५	०६ २२	१८ ०७	कर्क १७।२०	०५.१९.१९.०८
०९	रवि	१० १६	पुष्य	२६ ४७	सिद्ध	दि रा	०६ २२	१८ ०६	कर्क	०५.२०.१८.१९
१०	सोम	१२ ४०	श्लेषा	२९ ४७	सिद्ध	०६ ५३	०६ २२	१८ ०५	सिंह२९।४७	०५.२१.१७.३२
११	मंगल	१५ १२	मघा	दि रा	साध्य	०७ ४९	०६ २३	१८ ०५	सिंह	०५.२२.१६.४८
१२	बुध	१७ ४०	मघा	०८ ४७	शुभ	०८ ४४	०६ २३	१८ ०४	सिंह	०५.२३.१६.०६
१३	गुरु	१९ ५७	पू.फा	११ ३९	शुक्ल	०९ ३२	०६ २३	१८ ०३	कन्या१८।१९	०५.२४.१५.२६
१४	शुक्र	२१ ५४	उ.फा	१४ १३	ब्रह्म	१० ०८	०६ २४	१८ ०२	कन्या	०५.२५.१४.४९
३०	शनि	२३ २८	हस्त	१६ २६	ऐंद्र	१० २७	०६ २४	१८ ०१	तुला २९।२४	०५.२६.१४.१३

सितंबर अक्टूबर	
	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
30	अश्विन में दूध का त्याग, प्रतिपदा श्राद्ध, पंचक २१/११तक,स.सि.६/१६तक
01	भ.२०/३४से,द्वितीया व तृतीया का श्राद्ध, स.सि.६/१८से
02	भ.७/३६तक,श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत,चंद्रोदय २०/२१,चतुर्थी का श्राद्ध **A**
00	**A** लालबहादुर शास्त्री जयंती, स.सि५/५७तक
03	कपीला पंचमी का श्राद्ध, स.सि.६/१९से१८/०४तक
04	षष्ठी का श्राद्ध
05	भ.५/४१से१८/२तक, सप्तमी का श्राद्ध
06	कालाष्टमी, अष्टमी का श्राद्ध,स.सि.२१/३२से
07	नवमी का श्राद्ध अविधवा नवमी, सौभाग्यवतियों का श्राद्ध,स.सि६/२०तक,
08	भ.२३/२२से, दशमी का श्राद्ध, सौभाग्यवतियों का श्राद्ध,स.सि.६/१७से,
09	भ.१२/३६तक,दशमी का श्राद्ध(दोनो दिन मान्य),स.सि.६/४५तक
10	एकादशी व्रत एवं श्राद्ध, मघा श्राद्ध
11	प्रदोषव्रत,द्वादशी व संन्यासियों का श्राद्ध
12	भ.१९/५३से,त्रयोदशी का श्राद्ध, मास शिवरात्री व्रत,
13	भ.८/५४तक,चतुर्दशी श्राद्ध,कलियुगादि,अग्नि,जल,दुर्घटना में मृतकों का श्राद्ध
14	स्नान-दान-श्राद्ध शनेश्वरी अमावस्या, सर्व पितृ का श्राद्ध

दि. १४/१०/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०५	०६	०६	०५	००	०४	११	००
२६	१७	०७	२१	१८	१०	०६	००
११	४४	०३	४१	५६	१०	४७	४७
५२	४०	०१	१७	०१	२६	३५	२८
५९	७३३	४०	१०४	०६	५४	०२	०३
२५	३५	३८	४२	५७	३१	०७	१०
चि	हस्त	स्वा	हस्त	भर	मघा	शत	अश्वि
मा	मा	मा.अ	मा.अ	वक्री	मा	वक्री	वक्री



श्री विक्रम सं.२०८० आश्विन शुक्ल पक्ष

दिनांक: १५ अक्टू. से २८ अक्टू.२०२३ तक

याम्यायन — शरद ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	रवि	२४ ३६	चित्रा	१८ १५	वैधृति	१० २६	०६ २५	१८ ५९	तुला	०५.२७.१३.४०
०२	सोम	२५ १६	स्वाति	१९ ३८	विष्कुंभ	१० ०६	०६ २५	१७ ५८	तुला	०५.२८.१३.३९
०३	मंगल	२५ ३०	विशाखा	२० ३४	प्रीति	०९ २४	०६ २६	१७ ५७	वृश्चि.१४।२२	०५.२९.१२.३९
०४	बुध	२५ १६	अनुराधा	२१ ०३	आयु	०८ २१	०६ २६	१७ ५७	वृश्चिक	०६.००.१२.१२
०५	गुरु	२४ ३५	ज्येष्ठा	२१ ०६	सौभ/शोभ	०६ ५६ २९ ११	०६ २६	१७ ५६	धनु २१।०६	०६.०१.११.४६
०६	शुक्र	२३ २८	मूल	२० ४४	अति	२७ ०५	०६ २७	१७ ५५	धनु	०६.०२.११.२२
०७	शनि	२१ ५६	पू.षा.	१९ ५७	सुकर्मा	२४ ३९	०६ २७	१७ ५४	मकर२५।४१	०६.०३.११.००
०८	रवि	२० ०२	उ.षा.	१८ ४७	धृति	२१ ५५	०६ २८	१७ ५४	मकर	०६.०४.१०.४०
०९	सोम	१७ ४८	श्रवण	१७ १७	शूल	१८ ५५	०६ २८	१७ ५३	कुंभ २८।२५	०६.०५.१०.२१
१०	मंगल	१५ १७	धनिष्ठा	१५ ३०	गण्ड	१५ ४२	०६ २९	१७ ५२	कुम्भ	०६.०६.१०.०४
११	बुध	१२ ३५	शतभिष	१३ ३३	वृद्धि	१२ २०	०६ २९	१७ ५१	मीन ३०।००	०६.०७.०९.४८
१२	गुरु	०९ ४७	पू.भा.	११ २९	ध्रुव/व्याघ	०८ ५२ २९ २५	०६ ३०	१७ ५१	मीन	०६.०८.०९.३५
१३	शुक्र	०७ ००	उ.भा.	०९ २७	हर्षश	२६ ०४	०६ ३०	१७ ५०	मीन	०६.०९.०९.२३
१४	शुक्र	२८ २०	चतुर्दशी तिथि का क्षय							
१५	शनि	२५ ५७	रेव/अश्वि	०७ ३४ २९ ५७	वज्र	२२ ५४	०६ ३०	१७ ५०	मेष ०७।३१	०६.१०.०९.१३

अक्टू बर	
	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में सामन रूप से ग्राह्य रहेगा ।
15	**शारदीय नवरात्र प्रां.घट स्थापना, अग्रसेन जं०,**
16	नवीन चंद्रदर्शन,
17	
18	भ.१३/२२से,दुर्वा गणपति व्रत, विनायक चतुर्थी,स.सि.६/३२से२१/१तक
19	भ.२५/१२तक,उपांग ललीता व्रत, ललीत पंचमी
20	श्रीसरस्वती आवाहन **A**स.सि.६/२५से१८/४४तक
21	भ.२१/५३से,भद्रकाली प्राकाट्य, सरस्वती पूजन, सप्तमी का पूजन
22	भ.८/५८तक,दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, गढ़कालिका यात्रा, सरस्वती विसर्जन,**A**
23	महानवमी पूजन,बलीदान विजयादशमी,पंचक २८/२५से स.सि.६/२६से१७/१४तक
24	दशहरापर्व शमी व शस्त्र एवं शास्त्र पूजन,विजया दशमी उत्सव
25	भ.२५/५४से१२/३२तक,एकादशी व्रत,
26	प्रदोष व्रत
27	स.सि.९/२५से,
00	
28	भ.४/१७से१५/२तक,स्नान-दान-व्रत की शरद पूर्णिमा,कोजागरी पूनम, स.सि.६/२९तक,पंचक ७/३१तक

दि .२८/१०/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०६	११	०६	०६	००	०४	१०	००
१०	२८	१६	१५	१७	२३	०६	००
०६	४५	३६	०९	०९	४५	२२	५०
५१	३९	३५	०३	४२	१६	२०	१५
५९	८६४	४१	९६	०८	६१	००	०३
५१	२०	१८	२५	०३	२६	४५	१०
स्वा	रेव	स्वा	स्वा	भर	पूफा	धनि	अश्वि
मा	मा	मा.अ	मा.अ	व	मा	वक्री	वक्री

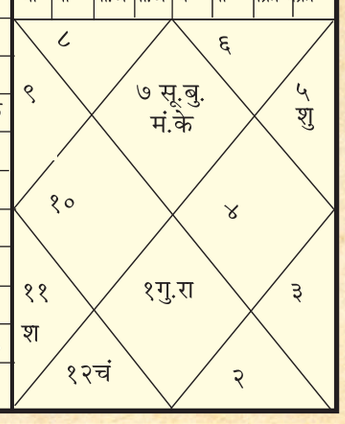

श्री विक्रम सं.२०८० कार्तिक कृष्ण पक्ष

दिनांक: २९ अक्टू. से १३ नव.२०२३ तक

याम्यायन — हेमंतऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं.मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०
०१	रवि	२३ ५६	भरणी	२८ ४४	सिद्धि	२० ०३	०६ ३१	१७ ४९	मेष	०६.११.०९.०५
०२	सोम	२२ २६	कृतिका	२८ ०४	व्यति	१७ ३५	०६ ३२	१७ ४९	वृष.१०।३१	०६.१२.०९.०७
०३	मंगल	२१ ३३	रोहिणी	२८ ००	वरिया	१५ ३६	०६ ३२	१७ ४८	वृषभ	०६.१३.०९.०३
०४	बुध	२१ २२	मृगशिर	२८ ३९	परिघ	१४ ०९	०६ ३३	१७ ४७	मिथु.१६।१४	०६.१४.०९.००
०५	गुरु	२१ ५५	आर्द्रा	२९ ५७	शिव	१३ १५	०६ ३४	१७ ४७	मिथुन	०६.१५.०९.००
०६	शुक्र	२३ ११	पुनर्वसु	दि रा	सिद्ध	१२ ५५	०६ ३४	१७ ४६	कर्क२५।२६	०६.१६.०९.०२
०७	शनि	२५ ०३	पुनर्वसु	०७ ५७	साध्य	१३ ०५	०६ ३५	१७ ४६	कर्क	०६.१७.०९.०६
०८	रवि	२७ २१	पुष्य	१० ३२	शुभ	१३ ३८	०६ ३५	१७ ४५	कर्क	०६.१८.०९.१३
०९	सोम	२९ ५४	श्लेषा	१३ २५	शुक्ल	१४ २७	०६ ३६	१७ ४५	सिंह१३।२५	०६.१९.०९.२१
१०	मंगल	दि रा	मघा	१६ २६	ब्रह्म	१५ २२	०६ ३६	१७ ४४	सिंह	०६.२०.०९.३१
१०	बुध	०८ २६	पू.फा	१९ २२	ऐंद्र	१६ १३	०६ ३७	१७ ४४	कन्या२६।०३	०६.२१.०९.४४
११	गुरु	१० ४५	उ.फा.	२१ ५७	वैधृति	१६ ५०	०६ ३८	१७ ४३	कन्या	०६.२२.१०.५८
१२	शुक्र	१२ ३९	हस्त	२४ ११	विष्कुंभ	१७ ०८	०६ ३८	१७ ४३	कन्या	०६.२३.१०.१५
१३	शनि	१४ ०१	चित्रा	२५ ४९	प्रीति	१७ ०१	०६ ३९	१७ ४२	तुला १३।०४	०६.२४.१०.३३
१४	रवि	१४ ४८	स्वाति	२६ ५४	आयु	१६ २६	०६ ४०	१७ ४२	तुला	०६.२५.१०.५३
३०	सोम	१५ ००	विशाख	२७ २५	सौभाग्य	१५ २५	०६ ४१	१७ ४१	वृश्चि.२१।२०	०६.२६.११.१५

अक्टू नवं	
	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में सामन रूप से ग्राह्य रहेगा ।
29	कार्तिक में द्वि-दल का परित्याग करें,
30	हेमन्त ऋत,
31	भ.९/५१से२१/३०तक,श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत(करवाचौथ),चंद्रोदय २०/३६
01	स.सि.६/३२से
02	स.सि.२८/३६तक,
03	भ.२३/०७से, स.सि.५/५७से,
04	भ.११/५९तक,स.सि.६/३३तक
05	कालाष्टमी अहोई अष्टमी, काली पूजा,कराष्टमी,स.सि.६/३४से१०/२९तक
06	भ.१९/०७से,
07	भ.०८/२३तक,
08	**B** केदार गौरी व्रत, अभ्यङ्ग स्नान,स.सि.२५/४७से
09	रमा एकादशी व्रत(केला), **C**६/३८तक
10	**शनि प्रदोषव्रत,**गोत्रिरात दिवस,गोवत्स द्वादशी,**धन्वन्तरी जयंती,**धनतेरस,
11	भ.१३/५७से,नरकहरा चतुर्दशी, मासशिवरात्री व्रत,रूपचौदस, **B**
12	भ.०२/२५तक,**दीपावली महापर्व लक्ष्मी व कुबेर पूजन, C**
13	स्नान,दान,पूजन की अमावस्या, **गोवर्धन पूजा, अन्नकुट,**

दि .१३/११/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०७	०६	०६	०७	००	०५	१०	००
२६	२१	२७	०९	१५	१०	०६	००
०८	२३	४४	५५	००	५२	२३	४०
४८	५८	०१	१२	२३	०५	३०	३३
६०	७७७	४२	८९	०७	६६	००	०३
२३	०४	०८	४३	५०	३१	५५	०९
विश	विश	विश	अनु	भर	हस्त	धनि	आश्वि
मा	मा	मा.अ	मा.अ	वक्री	मा	मा	वक्री

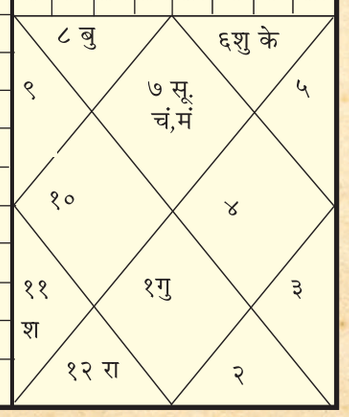

श्री विक्रम सं.२०८० कार्तिक शुक्ल पक्ष

१४ नवम्बर से २७ नवम्बर २०२३ तक

सौम्यायन — हेमंत ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३०
०१	मंगल	१४ ३७	अनु.	२७ २४	शोभन	२३ ५६	०६ ३३	१७ ४३	वृश्चिक	०६ २७ ०९
०२	बुध	१३ ४८	ज्येष्ठा	२७ ०१	अति.	१२ ०७	०६ ४१	१७ ४३	च.२७/०१	०६ २८ १०
०३	गुरु	२२ ३५	मूल	२६ १७	सुकर्मा	९ ५९	०६ ४२	१७ ४२	धनु	०६ २९ङ १०
०४	शुक्र	११ ०४	पू.षा.	२५ १७	धृति शूल	७ ३६ २९ ०१	०६ ४३	१७ ४२	धनु	०७ ०० ११
०५	शनि	०९ १९	उ.षा.	२४ ०७	गण्ड	२६ १७	०६ ४३	१७ ४२	म. ७/०१	०७ ०१ ११
०६	रवि	०७ २४	श्रवण	२२ ४९	वृद्धि	२३ २८	०६ ४४	१७ ४२	मकर	०७ ०२ १२
०७	रवि	१२ २२	००	० ०	००	० ०	० ०	० ०	० ०	०० ०० ००
०८	सोम	२७ १७	धनिष्ठा	२१ २६	ध्रुव	२० ३५	०६ ४५	१७ ४१	कु.१०/०८	०७ ०३ १२
०९	मंगल	२४ १०	शत.	२० ०१	व्यापात	१७ ४०	०६ ४६	१७ ४१	कुम्भ	०७ ०४ १३
१०	बुध	२३ ०५	पू.भा.	१८ ३८	हर्ष	१४ ४६	०६ ४७	१७ ४१	मीन१२/२८	०७ ०५ १३
११	गुरु	२१ ०३	उ.भा.	१७ ६	वज्र	११ २३	०६ ४७	१७ ४१	मीन	०७ ०६ १४
१२	शुक्र	१९ ०७	रेवती	१६ ०१	सिद्धि व्याति	९ ५ ३० २३	०६ ४८	१७ ४१	मेष१६/१	०७ ०७ १४
१३	शनि	१७ २३	अश्विनी	१४ ५६	वरियान	२७ ५३	०६ ४८	१७ ४१	मेष	०७ ०८ १५
१४	रवि	१५ ५४	भरणी	१४ ०६	परिघ	२५ ३६	०६ ४९	१७ ४१	वृ१९/५६	०७ ०९ १६
१५	सोम	१४ ४६	कृतिका	१३ ३५	शिव	२३ ३८	०६ ४९	१७ ४१	वृषभ	०७ १० १६

नवम्बर	यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
14	चंद्र दर्शन मु., अन्नकूटोत्सव श्री गोवर्धन पूजा,गुजराती नूतनवर्षारम्भ,**A**
15	भाईदूज,यम द्वितीया,श्री विश्वकर्मा पूजा,श्री चित्रगुप्त पूजा(भगिनीगृहे भोजनम)
16	भ२३/५२ सूर्य वृश्चिक में २५/२० मंगल वृश्चिक में १०/४७ विनायक ४
17	भ. ११/ (पाता) बुध ज्येष्ठ में १८/५०
18	सूर्यषष्ठी, ज्ञान पंचमी, लाभ ५ सर्वार्थसिद्धी २४/०८से ३०/५० तक
19	भ. २९/२२ से (पाता) **A** महावीर संवत वीरानिर्माण २५५० प्रा.
00	सप्तमी क्षय तिथि
20	भ. १६/१९ तक पा.भू.दुर्गाष्टमी,गोपाष्टमी पंचक प्रा.१०/०८से सूर्य **B**
21	कुष्माण्ड ९,अक्षय आँवलानवमी **B**अनु. में ०८/३८ मंगल अनु. २५/०१
22	सायनरवि धनु में १९/३२ **D** २९/५५ वक्री अश्वि (४) में २७/४४
23	भ.१०/१४से२१/०३तक,देव प्रबोधिनी११ व्रत बिल्वपत्रम, तुलसी विवाह
24	प्रदोषव्रतम पंचक समा. १६/१९ से शनि शत. में ०६/५८ से चातुर्मास **C**
25	वैकुण्ठचतुर्दशी व्रतम(हरिहर मिलाप,उज्जैन) **C** विधानपूर्ण (सर्वासि. दिनरात)
26	भ. १५/५४से २७/४० तक (स्.) व्रत की पूर्णिमा, बुध मूल धनु में **D**
27	स्नान पूर्णिमा श्री गुरूनानक जं.,निम्बार्क ज.कार्तिकस्नान विधानयम नियमपूर्ण
	भीष्यमपंचकव्रतायपूर्णता सर्वासि.१३/२७से३०/५६तक देव दिपावलीदीपदान

दि.२७/११/२०२३ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
७	१	७	७	०	५	११	११
१०	५	७	२९	१३	२६	१८	२८
१६	२६	३८	५८	१९	४४	३२	३२
२६	१२	४२	४४	२३	१२	३६	०७
६०	८०७	४२	४९	६	६९	०३	०३
४१	३२	५०	१५	२०	२४	११	११
अनु.	कृति	अनु	ज्ये	अश्वि.	चित्रा	शत.	रेव
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व

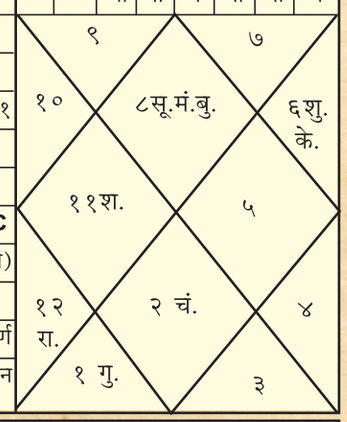

श्री विक्रम सं.२०८० मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

२८ नवम्बर से १२ दिसम्बर २०२३ तक

सौम्यायन — हेमंत ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३०
०१	मंगल	१४ ०६	रोहिणी	१३ ३२	सिद्ध	२२ ०३	०६ ५०	१७ ४०	मि.१३/४१	०७ ११ १७
०२	बुध	१३ २७	मृग.	१३ ५९	साध्य	८ ५५	०६ ५१	१७ ४०	मिथुन	०७ १२ १८
०३	गुरु	१४ २६	आर्द्रा	१५ ०२	शुभ	२० १७	०६ ५१	१७ ४१	मिथुन	०७ १३ १९
०४	शुक्र	१५ ३४	पु.	१६ ४१	शुभ	२० ०३	०६ ५२	१७ ४१	क.१०/१२	०७ १४ १९
०५	शनि	१७ १५	पुष्य	१८ ५४	ब्रह्म	२० १९	०६ ५३	१७ ४१	कर्क	०७ १५ २०
०६	रवि	१ २८	अश्लेषा	२१ ३६	ऐन्द्र	२० ५९	०६ ५३	१७ ३९	सि.२१/३६	०७ १६ २१
०७	सोम	२२ ०७	मघा	२४ ३५	वैधृति	२१ ४७	०६ ५४	१७ ४१	सिंह	०७ १७ २२
०८	मंगल	२४ ३८	पू.फा.	२७ ३८	विक्रम	२२ ४२	०६ ५५	१७ ४१	सिंह	०७ १८ २३
०९	बुध	२७ ०५	उ.फा.	३० २९	प्रीति	२३ २९	०६ ५६	१७ ४१	क.१०/२२	०७ १९ २४
१०	गुरु.	२९ ०७	हस्त	दि रा	आयु.	२४ ००	०६ ५७	१७ ४२	कन्या	०७ २० २४
११	शुक्र.	३० ३२	हस्त	८ ५४	सौभा.	२४ ०४	०६ ५७	१७ ४२	तु२१/५३	०७ २१ २५
१२	शनि.	दि रा	चित्रा	१० ४३	शोभ	२३ ३७	०६ ५८	१७ ४२	तुला	०७ २२ २६
१२	रवि	०७ ११	स्वाति	११ ५०	अति	२२ ३४	०६ ५८	१७ ४२	वृष३०/१२	०७ २३ २७
१३	सोम	१० २५	विशाखा	११ १३	सुकर्मा	२० ५८	०६ ५९	१७ ४२	वृश्चिक	०७ २४ २८
१४	सोम	३० २५	००	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	०० ०० ००
३०	मंगल	२९ ०२	अनु.	११ ५७	धृति	१८ ५१	०७ ०७	१४ ४१	वृश्चिक	०७ २५ २९

दिसम्बर	यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
28	
29	भ. २६/११ (स्व.) शुक्र तुला मं २५/०३सर्वासि.६/५८से१३/५९ तक
30	भ.१४/३६ तक (स्व.) श्री संकष्टी ४ व्रत चंद्रोदय २०/१५
1	दिसम्बर प्रारंभ सर्वा. १६/४१ तक
2	नरसिंह मेहता जयंती
3	भ. १९/२८ से (भूमि) सूर्य ज्येष्ठा से १३/०२
4	भ. १८/४३ तक भूमि
5	श्रीकाल भैरवाष्टमी, श्रीकाल भैरव जं. कालाष्टमी शुक्र स्वा. में १७/४८
6	सर्वासि. ३०/३० से ३१/०२ तक
7	भ. १६/०६ से ०९/०६ तक (पाताल)
8	उत्पत्ति ११ एकादशी व्रत (बादाम) स्मा.
9	उत्पत्ति ११ व्रत वैष्णव
10	प्रदोष व्रत
11	भ.०७/११से१८/४८तक स्वर्ग शिवरात्रि व्रत सर्वा.१२/१५से३१/०६तक
0	
12	देवपितृ कार्यो गौमवती ३०

दि.१२/१२/२०२३स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
७	७	७	८	०	७	१०	११
२५	१३	१८	१४	१२	१४	७	७
२९	०	२६	९	१	२०	३२	४८
१६	४०	३३	२१	१०	३९	००	३५
१	८२४	४३	८	३	४१	३	०३
१	४६	३५	९	४९	२६	४७	११
ज्ये	वि.	ज्ये	पूषा	अश्वि.	स्वा	शत.	रेव
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व

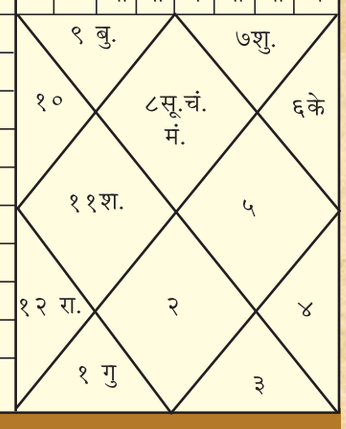

श्री विक्रम सं.२०८० मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

१३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर २०२३ तक

सौम्यायन — हेमंत ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३०
०१	बुध	२७ १०	ज्येष्ठ	११ ०५	शूल	१६ १८	७ ००	१७ ४२	ध. ११/०५	०७ २६ ३०
०२	गुरु	२४ ५७	मूल	९ ४७	गण्ड	१३ २४	७ ०१	१७ ४३	धनु	०७ २७ ३१
०३	शुक्र	२२ ३१	पू.फा. उ.भा.	८ ११ ३७ २५	वृद्धि ध्रुव	१० १७ ३१ ०३	७ ०१	१७ ४४	म. ११३/४५	०७ २८ ३२
०४	शनि	२० ०१	श्रवण	२८ ३७	व्याधा	२७ ४७	७ ०२	१७ ४४	मकर	०७ २२९ ३३
०५	रवि	१७ ३४	धनिष्ठ	२६ ५५	हर्षल	२४ ३५	७ ०२	१७ ४४	कु.१५/४५	०८ ०० ३४
०६	सोम	१५ १५	शत.	२५ २२	वज्र	२१ ३२	७ ०३	१७ ४५	कुंभ	०८ ०१ ३६
०७	मंगल	१३ ०७	पू.भा.	२४ ०२	सिद्धि	१८ ३८	७ ०३	१७ ४५	मी.१८/२९	०८ ०२ ३७
०८	बुध	११ १४	उभा.	२२ ५८	व्यति	१५ ५६	७ ०४	१७ ४६	मीन	०८ ०३ ३८
०९	गुरु	०९ ३८	रेवती	२२ ०९	वरी.	१३ १७	७ ०५	१७ ४६	म.२२/०९	०८ ०४ ३९
१०	शुक्र	०८ १७	अश्विन	२१ ३६	परीध	११ ११	७ ०५	१७ ४७	मेष	०८ ०५ ४०
११	शुक्र	३१ १२	०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ४७	०	०० ०६ ४१
१२	शनि	३० २५	भरणी	२१ १९	शिव सिद्ध	९ ०७ ३१ १७	७ ०७	१७ ४७	वृ.२७/१७	०८ ०० ००
१३	रवि	२६ ५६	कृतिका	२१ १९	साघ	२९ ४२	७ ०७	१७ ४७	वृषभ	०८ ०७ ४२
१४	सोम	२९ ४७	रोहिणी	२१ ३९	शुभ	२८ २२	७ ०७	१७ ४७	वृषभ	०८ ०८ ४३
१५	मंगल	३० ०३	मृग.	२२ २१	शुक्ल	२७ २१	७ ०७	१७ ४९	मि.९/५७	०८ ०९ ४४

दिसम्बर	यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
13	बुध (-) वक्री १२/४०
14	नवीन चन्द्र दर्शन
15	रवि योग ८/११ से ३०/२५
16	भ.०९/१७से२०/०१तक (प्रा.)सूर्य धनु मूल में१५/५९
17	विवाह ५, श्री राम जानकी विवाहोत्सव, पंचक प्रारं. १५/४५ से
18	स्कंदषष्ठी, चम्पाषष्ठी
19	भ.१३/०७ से २४/११ तक (भूमि.) मित्र सप्तमी,
20	दुर्गाष्टमी व्रत
21	पंचक समाप्त२२/०९से सर्वा.सि.०७/१२से२२/०९तक
22	भ.१९/४४से३१/१२तक (स्व.)मोक्षदा ११ (एकादशी) व्रत राजगरा
0	क्षय तिथि
23	मोक्षदा ११ व्रत, वैष्णव
24	प्रदोष व्रत, शुक्र वृश्चिक में ३०/४६
25	भ.२९/४७ से (स्व.) पं. मदनमोहन मा. जयंती, क्रिसमस
26	भ.१७/५५तक, स्नानदान व्रत, पुण्य पूर्णिमा, श्री दतात्रेय जयंती

दि.२६/१२/२०२३स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
८	१	७	८	०	७	१०	११
९	२७	२८	२	११	९	८	२७
४४	४५	४१	१५	२६	८	३२	०३
१३	४४	१	३	९	४४	३५	०६
६१	७७३	४४	६६	०	४२	४	०३
६	२७	१३	१५	५८	३६	५५	११
मूल	रो.	ज्ये	मूल	अश्वि.	विश	शत.	रेव
-	-	मा	व	व	मा	मा	व

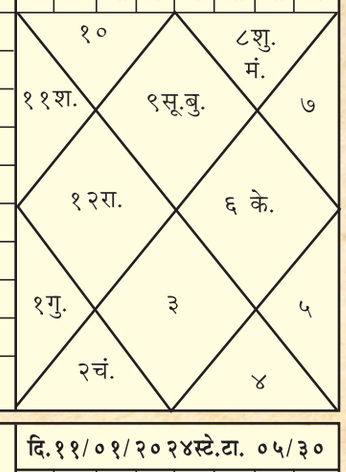

श्री विक्रम सं.२०८० पौष कृष्ण पक्ष

२७ दिसम्बर से ११ जनवरी २०२४ तक

सौम्यायन — शिशिर ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३०
०१	बुध	३० ४६	आद्रा	२३ २९	ब्रह्म	२६ ४१	७ ०६	१७ ४९	मिथुन	०८ १० ४५
०२	गुरु	दि रा	पु.	२५ ०५	ऐन्द्र	२६ २३	७ ०६	१७ ४९	कर्क१८/३८	०८ ११ ४७
०२	शुक्र	८ ००	पुष्य	२७ १०	वैधृति	२६ २९	७ १६	१७ ५०	कर्क	०८ १२ ४८
०३	शनि	९ ४४	आर्द्रा	२९ ४१	विष्कुंभ	२६ ५६	७ ०७	१७ ५१	सि.२०/४१	०८ १३ ४९
०४	रवि	११ ५५	मघा	दि रा	प्रीति	२७ ४०	७ ०७	१७ ५१	सिंह	०८ १४ ५०
०५	सोम	१४ २९	मघा	८ ३६	आयु.	२८ ३५	७ ०७	१७ ५२	सिंह	०८ १५ ५१
०६	मंगल	१७ ११	पू.फा.	११ ४२	सौभाग्य	२९ ३३	७ ०८	१७ ५३	क.१८/२९	०८ १६ ५२
०७	बुध	१९ ४९	उ.फा.	१४ ४६	शोमन	३० २१	७ ०८	१७ ५३	कन्या	०८ १७ ५३
०८	गुरु	२२ ५	हस्त	१७ ३४	अति	३० ४९	७ ०८	१७ ५४	तु३०/४६	०८ १८ ५४
०९	शुक्र	२३ ४७	चित्रा	१९ ५	सुकर्मा	३० ४७	७ ०९	१७ ५५	तुला	०८ १९ ५६
१०	शनि	२४ ४१	स्वाति	२१ २	धृति	३० १०	७ ०९	१७ ५५	तुला	०८ २० ५७
११	रवि	२४ ५७	विशाखा	२२ ८	शूल	२८ ५३	७ ०९	१७ ५६	वृ.१६/०२	०८ २१ ५८
१२	सोम	२३ ५९	आर्दा	२२ ३	गण्ड	२६ ५३	७ ०९	१७ ५७	वृश्चिक	०८ २२ ५९
१३	मंगल	२२ २५	ज्येष्ठ	२१ ११	वृद्धि	२४ २२	७ १०	१७ ५७	ध.२१/१०	०८ २४ ००
१४	बुध	२० ११	मूल	१५ ४०	ध्रुव	२१ १७	७ १०	१७ ५८	धनु	०८ २५ ०१
३०	गुरु	१७ २७	पू.षा.	१७ ३९	व्यापात	१७ ४९	७ १०	१७ ५९	मकर२३/०५	०८ २६ ०३

दिसम्बर जनवरी	यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
27	मंगल मूल धनु में २४/२२
28	सर्वार्थसिद्ध७/११से२५/५तक
29	भ.२०/५१से सूर्यपू.षा. में १८/१६
30	भ.०९/४४ तक संकष्टी४ व्रत चंद्रोदय २०/५३ बबजे
31	गरु मार्गी (+) ०८/१५
1	जनवरी २०२४ ई.प्रा. राहु रेवती च.व.केतु चित्रा (१) च. में १२/३७
2	भ.१७/११से३०/३०तक (भू.षा) बुध (+) मार्गी रवि योग ११/४२से
3	सर्वासि. १४/४७ से ३१/१७ तक रवि योग१४/४५तक
4	कालाष्टमी व्रत (प्रदोष व्या.) श्री हनुमान अष्टमी
5	-
6	भ. १२/१४ से २४/४२ तक (पाता.) पौषी दशमी
7	सफला (११) एकादशी व्रत (तिल शक्कर)
8	सर्वासि. ०७/१९ से २२/०३ तक
9	भ. २२/२५ से (पाता) भौमप्रदोष व्रत मा.शिवरात्रि
10	भ. ०९/१९ तक (पाता)
11	देवपितृकामें पौषी ३० सूर्य उषा में २०/१४ शनि शत (२) चं. ७/४७

दि.११/०१/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
८	८	८	८	०	७	१०	११
२६	१९	१०	२	११	२०	९	२६
२	१६	३४	४०	३५	३७	५९	१८
३१	६	९	४०	४०	३५	२८	३४
६१	४०	४४	५६	२	७३	५	०३
९	४७	५७	५३	२१	२८	२८	११
पूषा	अनु.	मूल	मूल	अश्वि.	ज्ये.	शत.	रेव
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व

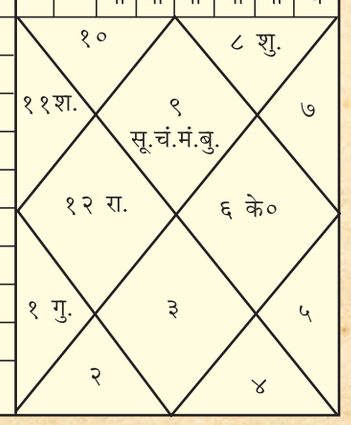

श्री विक्रम सं.२०८० पौष शुक्ल पक्ष

१२ जनवरी से २५ जनवरी २०२४ तक

सौम्यायन — शिशिर ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३०
०१	शुक्र	१४ २४	उ.षा	१५ १८	हर्ष	१४ ५	७ १९	१९ ५८	मकर	०८ २७ ०४
०२	शनि	११ १२	श्रवण	१२ ५०	वज्र सिद्धी	१० १३ ३० २३	७ १९	१९ ५८	कु. २३/३६	०८ २८ ०५
०३	रवि	८ ००	धनिष्ठा	१० २३	व्याति	२६ ४०	७ १९	१९ ५९	कुम्भ	०८ २९ ०६
०४	रवि	२९ ००	..	० ०	०	० ०	० ०	० ०	० ०	०० ०० ००
०५	सोम	२६ १७	शत पू.भा.	८ ७ ३० १०	वरि	२३ ११	७ १९	१८ ००	मी २४/३७	०९ ०० ०७
०६	मंगल	२३ ५८	उ.भा.	१८ ३८	परिध	२० ९	७ १९	१८ ०१	मीन	०९ ०१ ०८
०७	बुध	२२ ०७	रेवती	२७ ३४	शिव	१७ १३	७ १९	१८०१	मे. २७/३४	०९ ०२ ०९
०८	गुरु	२० ४५	अश्विनी	२६ ५८	सिद्ध	१४ ४८	७ १९	१८ ०२	मेष	०९ ०३ १०
०९	शुक्र	१९ ५२	भरणी	२६ ५१	साध्य	१२ ४६	७ १९	१८ ०३	मेष	०९ ०४ १२
१०	शनि	१९ २७	कृतिका	२७ ०९	शुभ	११ ०६	७ १९	१८ ०४	वृ.८/५३	०९ ०५ १३
११	रवि	१९ २८	रोहिणी	२७ ५२	शुक्ल	९ ४७	७ १८	१८ ०४	वृषभ	०९ ०६ १४
१२	सोम	१९ ५२	मृग	२८ ५९	ब्रह्म	८ ४६	७ १८	१८ ०५	सि. १६/२३	०९ ०७ १५
१३	मंगल	२० ४०	आर्द्रा	३० २७	ऐन्द्र	८ ०४	७ १८	१८ ०६	मिथुन	०९ ०८ १६
१४	बुध	२१ ५१	पुनः	दि रा	वैधृति	७ ३९	७ १८	१८ ०७	क. २५/१७	०९ ०९ १७
१५	गुरु	२३ २४	पुनः	८ ०७	विषकुंभ	७ ३२	७ १८	१८ ०७	कर्क	०९ १० १८

जनवरी	यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
12	चन्द्रदर्शनम् मु. रा. युवा दिवस सर्वासि. १५/१९ से
13	पंचक प्रा. २३/३५से लोहड़ी पर्व सर्वासि.१२/५० तक विनायक
14	भ.१८/२९से २९/००तक (भूमि)सूर्य मकर में २६/४४मलमास प्रारंभ, **A**
0	क्षय तिथि **A** मंगल पू.षा में २१/५९
15	मकर संक्रांति पुण्यकाल प्रातः से, थल सेना दिवस
16	२७/१४ से स.सि.२८/३८ तक
17	भ.२२/०७ से (भू/सा) पंचक समा. २७/३८ से
18	भ.०९/२७ (स्व.) तक श्री दुर्गाष्टमी शुक्र धनुमूल में२०/५७ **C**
19	
20	सर्वासि.२७/०९ से ३१/१९ तक बुध पूषा में १५/३७
21	भ.०७/२७से १९/२८ तक पुत्रदा११ व्रत(गोछाछ)
22	
23	प्रदोष व्रत (भौम १३) **C** सर्वासि.०७/१९से२६/५८तक
24	भ.२१/५० से शाकम्भरी पूर्णिमा व्रत सूर्य श्रवण में २२/३२
25	भ.१०/३७ तक (भू.) स्नानदान व्रत पुण्य पूर्णिमा सर्वासि. ७/१८ से
	३१/१७ तक माघ स्नान

दि.२५/०१/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
९	३	८	८	०	८	१०	११
१०	१	२१	१९	१२	७	११	२५
१०	५४	६	२६	२६	४९	२७	३४
४६	४४	५२	६	२२	१	३७	०५०३
६०	७३४	४५	८३	५	७३	६	११
५९	२४	२८	७	३	५३	३८	
उषा	मृग	पूषा	पूषा	अश्वि.	मूल	शत.	रेव
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व

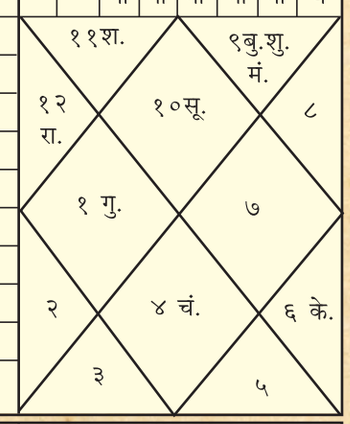

श्री विक्रम सं.२०८० माघ कृष्ण पक्ष

२६ जनवरी से ९ फरवरी २०२४ तक

सौम्यायन — शिशिर ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३०
०१	शुक्र	२५ २०	पुष्य	१० २८	प्रीति	७ ४२	७ १७	१८ ०८	कर्क	०९ ११ १९
०२	शनि	२७ ३७	आश्ले.	१३ ०१	आयु.	८ ८	७ १७	१८ ०९	सि.१३/०१	०९ १२ २०
०३	रवि	३० ११	मघा	१५ ५३	सौभा.	८ ५०	७ १७	१८ ०९	सिंह	०९ १३ २१
०४	सोम	दि रा	पू.फा.	१८ ५७	शोभा	९ ४३	७ १६	१८ १०	कर्क२५/४५	०९ १४ २२
०४	मंगल	८ ५५	उ.फा.	२२ ०६	अति.	१० ४३	७ १६	१८ ११	कन्या	०९ १५ २३
०५	बुध	११ ३७	हस्त	२५ ०८	सुकर्मा	११ ४१	७ १६	१८ ११	कन्या	०९ १६ २४
०६	गुरु	१४ ४	चित्रा	२७ ४९	धृति	१२ २८	७ १६	१८ १२	तु.१४/३२	०९ १७ २४
०७	शुक्र	१६ ३	स्वाति	२९ ५७	शूल	१२ ५४	७ १५	१८ १२	तुला	०९ १८ २५
०८	शनि	१७ २१	विशा.	३१ २१	गण्ड	१२ ५१	७ १५	१८ १३	वृ.२५/०४	०९ १९ २६
०९	रवि	१७ ५०	विशाखा	दि रा	वृद्धि	१२ १२	७ १४	१८ १४	वृश्चिक	०९ २० २७
१०	सोम	१७ २५	अनु.	७ ५४	ध्रुव	१० ५२	७ १४	१८ १४	वृश्चिक	०९ २१ २
११	मंगल	१६ ०८	ज्येष्ठा मूल	७ ३५ ३० २७	व्याधा. हर्षण	८ ५० ३९ ९	७ १३	१८ १५	ध.७/३५	०९ २२ २९
१२	बुध	१४ ०२	पू.षा.	२८ ३७	वज्र	२६ ५३	७ १३	१८ १५	धनु	०९ २३ ३०
१३	गुरु	११ १८	उ.षा.	२६ १४	सिद्धि	२३ ९	७ १२	१८ १६	म.१०/०४	०९ २४ ३०
१४	शुक्र	८ ०३	श्रवण	२३ २९	व्यति.	१९ ७	७ १२	१८ १७	मकर	०९ २५ ३१
३०	शुक्र	२८ २९	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	० ०	०० ०० ००

फरवरी	यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
26	भारतीय गणतंत्र दिवस
27	(माघ मास में शिवजी पर बिल्वपत्र अर्पण का विशेष महत्व है)
28	भ. १६/५४ से ३०/११ तक (भूमि)
29	श्री संकष्टी ४ व्रत, चंद्रोदय २१/२२, शुक्र पू.षा. में १६/५८
30	बुध उ.षा. में ०७/५९
31	सर्वासि. ०७/१६ से २५/०८ तक
1	भ. १४/०४ से २७/०४ तक (पाताल) बुध मकर में १४/२० **A**
2	श्री रामानंदाचार्य जयंती (कालाष्टमी)
3	गुरु भरणी (३) च. में १२/४५ **A** फरवरी मास प्रारंभ
4	भ. २९/३७ से (स्व.)
5	भ. १७/२५ तक (स्व.) मंगल मकर में २१/४३
6	षटतिला ११ व्रत (खोपरा) सूर्य धनिष्ठा में २५/४३
7	प्रदोष व्रत, बुध श्रवण में २७/२८
8	भ. ११/१८ से २१/४१ तक) पाताल), मास शिवरात्रि पर्व
9	देवपितृ कार्ये ३०, शुक उ.षा. में १२/१०, मौनी अमावस्या
0	क्षय तिथि

दि.०९/०२/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
९	९	९	९	०	८	२०	११
२५	१२	२	११	१३	२६	१३	२४
३१	२	३२	४२	५९	१९	१०	४९
१३	१२	४०	३६	५४	२६	४९	३४
६०	९०५	४५	९५	७	७४	७	०३
४६	४८	५९	२६	३२	१०	७	११
श्रव	अनु.	उषा	उषा	भर	पूषा	शत.	रेव
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व

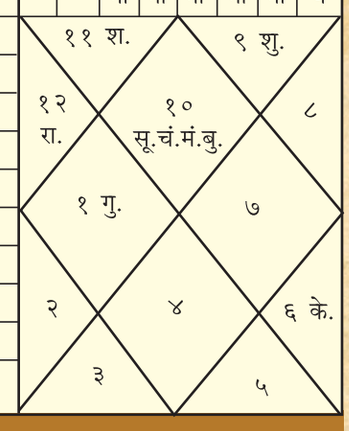

श्री विक्रम सं.२०८० माघ शुक्ल पक्ष

१० फरवरी से २४ फरवरी २०२४ तक

सौम्यायन — शिशिर ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३०
०१	शनि	२४ ४८	धनिष्ठा	२० ३४	वरीया.	१४ ५३	०७ ११	१८ १८	कुंभ१०/०२	०९ २६ ३२
०२	रवि	२१ १०	शत.	१७ ४०	परिध शिव	१० ३८ ३० ३०	०७ १०	१८ १९	कुम्भ	०९ २७ ३३
०३	सोम	१७ ४५	पू.भा.	१४ ५७	सिद्ध	२६ ३७	०७ ०९	१८ १९	मीन.९/३६	०९ २८ ३३
०४	मंगल	१४ ४३	उ.भा.	१२ ३६	साध्य	२३ ०५	०७ ०९	१८ २०	मीन	०९ २९ ३४
०५	बुध	१२ १०	रेवती	१० ४३	शुभ	१९ ५९	०७ ०८	१५ २२	मेष१०/४३	१० ०० ३५
०६	गुरु	१० १३	अश्विन	९ २६	शुक्ल	१७ २२	०७ ०७	१८ २१	मेष	१० ०१ ३६
०७	शुक्र	८ ५५	भरणी	८ ४७	ब्रह्म	१५ १७	०७ ०७	१८ २२	वृ.१४/४३	१० ०२ ३६
०८	शनि	८ १७	कृतिका	८ ४६	ऐन्द्र	१३ ४३	०७ ०६	१८ २२	वृषभ	१० ०३ ३७
०९	रवि	८ १६	रोहिणी	९ २३	वैधृति	१२ ३९	०७ ०५	१८ २३	मि.२१/५४	१० ०४ ३७
१०	सोम	८ ५१	मृगशि.	१० ३३	विष्कुं	१२ ०१	०७ ०४	१८ २४	मिथुन	१० ०५ ३८
११	मंगल	९ ५६	आर्द्रा	१२ १३	प्रीति	११ ४६	०७ ०४	१८ २४	मिथुन	१० ०६ ३८
१२	बुध	११ २८	पुन.	१४ १८	आयु.	११ ५१	०७ ०३	१८ २४	कर्क७/४४	१० ०७ ३९
१३	गुरु	१३ २२	पुष्य	१६ ४३	सौभा.	१२ १२	०७ ०२	१८ २४	कर्क	१० ०८ ३९
१४	शुक्र	१५ ३४	आश्ले.	१९ २६	शोभन	१२ ४८	०७ ०१	१८ २६	सिंह१९/२६	१० ०९ ४०
१५	शनि	१८ ००	मघा	२२ २१	अति.	१३ ३४	०७ ००	१८ २४	सिंह	१० १० ४०

फरवरी	यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
10	गुप्त नवरात्रि विधान प्रा. पंचक प्रा.१०/०२ शनि शत.(३)में१२/२३**A**
11	चन्द्रदर्शनम् मु. शुक्र मकर में २८/५० शनि पश्चिमास्त २९/४०
12	भ. २८/१३ से (भूमि) गौर ३, वर विनायक तिल चतुर्थी व्रत
13	भ.१४/४२तक(भूमि),सूर्य कंभ में१५/४४,सर्वासि०७/०९से १२/३६ तक
14	बसंत पंचमी, श्री पंचमी, सरस्वती जयंती, पंचक पूर्ण (समाप्त) १०/४३ पर
15	सर्वासि. ०७/०७ से ०९/२६ तक **A** बुधास्त पू.१५/०२
16	भ.०८/५५से२०/३६ तक(स्व.) रथ आरोगय७, नर्मदा जयंती,**B**
17	
18	गुप्त नवरात्रि विधानपूर्ण **D** व्रताय पूर्णम, महीनदी स्नान
19	भ.२१/२३से (स्व.),
20	भ.०९/५६तक (स्व.) जया ११ व्रत (गन्ना) भीष्म द्वादशी
21	प्रदोष व्रतम्
22	विश्वकर्मा जयंती, पुष्य०७/२से१६/४३तक
23	भ.१५/३४से२७/४७ तक(भू./पा.),व्रत की पूर्णिमा बुध शतभिषा में २४/२८
24	स्नानादान पुण्य पुर्णिमा, दाण्डारोपणी पूर्णिमा गुरु रविदास जयंती, ललिता
	जयंती, माघ स्नान समाप्त

दि.२४/०२/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
१०	४	९	२०	०	९	१०	११
१०	५	१४	७	२६	१४	१४	२३
४०	०	५	२	७	५२	५९	४९
३	१२	४	३७	५६	२९	१६	३२
६०	७११	४६	१०८	९	७४	७	०३
२२	५०	२०	३४	३६	१५	१९	११
श्रव	अनु.	उषा	उषा	भर	पूषा	शत.	रेव
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व

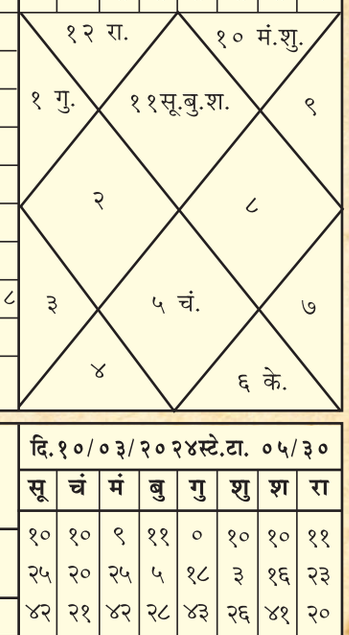

श्री विक्रम सं.२०८० फाल्गुन कृष्ण पक्ष

२५ फरवरी से १० मार्च २०२४ तक

सौम्यायन — बसंत ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३०
०१	रवि	२० ३६	पू.फा.	२५ २४	सुकर्मा	१४ २८	०६ ५२	१८ २८	सिंह	१० ११ ४०
०२	सोम	२३ १७	उ.फा.	२८ ३२	धृति	१५ २७	०६ ५१	१८ २८	क.८/११	१० १२ ४१
०३	मंगल	२५ ५४	हस्त	दि रा	शूल	१६ २५	०६ ५०	१८ २९	कन्या	१० १३ ४१
०४	बुध	२८ १९	हस्त	७ ३३	गण्ड	१७ २६	०६ ५०	१८ २९	तु.२१/००	१० १४ ४१
०५	गुरु	३० २३	चित्रा	१० २२	वृद्धि	१७ ५६	०६ ४९	१८ २९	तुला	१० १५ ४२
०६	शुक्र	दि रा	स्वाति	१२ ४९	ध्रुव	१८ १५	०६ ४८	१८ ३०	तुला	१० १६ ४२
०६	शनि	७ ५४	विशा.	१४ ४२	व्या.	१८ ०६	०६ ४७	१८ ३०	वृ.०८/१७	१० १७ ४२
०७	रवि	८ ४५	अनु.	१५ ५५	हर्षण	१७ २४	०६ ४६	१८ ३०	वृश्चिक	१० १८ ४२
०८	सोम	८ ५०	ज्येष्ठ.	१६ २०	वज्र	१६ ०६	०६ ४६	१८ ३१	ध.१६/२१	१० १९ ४२
०९	मंगल	८ ०७	मूल	१६ ००	सिद्धी	१४ ०८	०६ ४५	१८ ३२	धनु.	१० ३० ४२
१०	मंगल	३० ३१	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	०० ०० ००
११	बुध	२८ १४	पू.षा.	१४ ५२	व्यति.	११ ३३	०६ ४३	१८ ३२	म.२०/२८	१० २१ ४३
१२	गुरु	२५ २०	उ.षा.	१३ ०३	वरी परिध	८ २४ २८ ४६	०६ ४३	१८ ३३	मकर	१० २२ ४३
१३	शुक्र	२१ ५८	श्रवण	१० ४१	शिव	२४ ४६	०६ ४२	१८ ३३	कु.२१/२०	१० २३ ४३
१४	शनि	१८ १९	धनिष्ठा शतभि	७ ५५ २८ ५६	सिद्ध	२० ३२	०६ ४१	१८ ३३	कुम्भ	१० २४ ४३
३०	रवि	१४ ३०	पू.भा.	२५ २५	साध्य	२६ २३	०६ ४०	१८ ३४	मी.२०/४०	१० २५ ४३

फरवरी मार्च	यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
25	सर्वार्थ सिद्धि २५/२५ से ३०/५८ तक
26	
27	भ.१३/२५ से २५/५४ तक (पाताल), गुरु भरणी (२) में १२/४०
28	श्री संकष्टी ४ व्रत, चंद्रोदय २१/४८,रा.विज्ञान दिवस सर्वासि.०६/५७ से **A**
29	श्री महाकालेश्वर नवरात्र विधान प्रा. (उज्जैन) **A** ०७/३३ तक
1	मार्च मास प्रारंभ बुध पू.भा. में २९/८, शुक्र धनि. में २५/३३
2	भ.०७/५५ से २०/१९ तक (पाताल/स्वर्ग)
3	कालाष्टमी व्रतं
4	
5	भ. १९/१९से३०/३१ तक (पाताल), स्वामी समर्थ रामदास नवमी
0	क्षयतिथि
6	विजया११व्रत (फ.पेड़ा),स्मार्त धनि.में२८/१३
7	विजया ११ व्रतं (वैष्णव),
8	भ.२१/५८से(भूमि)पंचक२१/२०से प्रदोषव्रतं महाशिवरात्रि व्रतं **B**
9	भ. ०८/०९ तक (भू.) **B** विश्व महिला दिवस
10	देवपित कार्ये अमावस्या, सर्वासि.२५/५६ से ३०/४७ तक

दि.१०/०३/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
१०	१०	९	११	०	१०	१०	११
२५	२०	२५	५	१८	३	१६	२३
४२	२१	४२	२८	४३	२६	४१	२०
४३	४४	१९	५४	४३	३२	५८	२८
५९	९१४	४६	११५	११	७४	७	०३
५६	४०	३६	१२	१३	१७	१६	११
शत	ज्ये	श्रव	पूभा	भर	धनि	शत.	रेव
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व

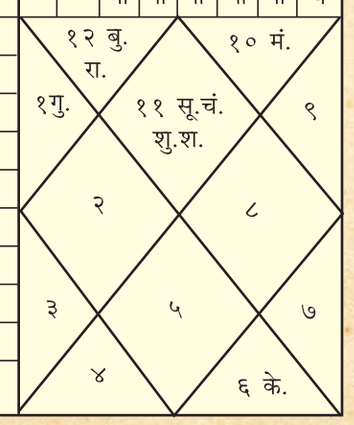

श्री विक्रम सं. २०८० फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३०
०१	सोम	१० ४६	उ.भा.	२३ ०३	शुभ	११ ५८	०६ ४७	१८ ३३	मीन	१० २६ ४३
०२	मंगल	०७ १४	रेवती	२० ३०	शुक्ल ब्रह्म	७ ५३ २८ ८	०६ ४६	१८ ३४	मे.२०/३०	१० २७ ४२
०३	मंगल	२८ ०४	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	० ० ०
०४	बुध	२५ २६	अश्वि.	१८ २५	ऐन्द्र	२४ ४८	०६ ४५	१८ ३४	मेष	१० २८ ४२
०५	गुरु	२३ २७	भरणी	१६ ५६	वैधृति	२२ ००	०६ ४४	१८ ३५४	वृ.२२/४०	१० २९ ४२
०६	शुक्र	२२ १०	कृतिका	१६ ०८	विष्कुं	१९ ४५	०६ ४३	१८ ३५	वृषभ	११ ० ४२
०७	शनि	२१ ३९	रोहिणी	१६ ०६	प्रीति	१८ ०८	०६ ४२	१८ ३६	मि.२८/२१	११ १ ४१
०८	रवि	२१ ५४	मृगशि.	१६ ४७	आयु	१७ ०५	०६ ४१	१८ ३६	मिथुन	११ २ ४१
०९	सोम	२२ ५०	आर्द्रा	१८ ११	सौभा	१६ ३६	०६ ४०	१८ ३६	मिथुन	११ ३ ४१
१०	मंगल	२४ २२	पुन.	२० १०	शोभ	१६ ३७	०६ ३९	१८ ३७	कक१३/३७	११ ४ ४१
११	बुध	२६ २३	पुष्य	२२ ३८	अति	१७ ००	०६ ३८	१८ ३७	कर्क	११ ५ ४०
१२	गुरु	२८ ४५	आश्ले.	२५ २७	सुकर्मा	१७ ४२	०६ ३७	१८ ३७	सि.२५/२७	११ ६ ४०
१३	शुक्र	दि रा	मघा	२८ २८	धृति	१८ ३५	०६ ३६	१८ ३८	सिंह	११ ७ ९
१३	शनि	०८ १८	पू.फा.	दि रा	शूल	१९ ३३	०६ ३५	१८ ३८	सिंह	११ ८ ३९
१४	रवि	०९ ५६	पू.फा.	७ ३४	गण्ड	२० ३४	०६ ३४	१८ ३९	कन्या१४/२०	११ ९ ३८
१५	सोम	१२ ३०	उ.फा.	१० ३८	वृद्धि	२१ ३०	०६ ३३	१८ ३९	कन्या	११ १० ३८

११ मार्च से २५ मार्च २०२४ तक

सौम्यायन — बसंत ऋतु

मार्च	यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
11	चन्द्रदर्शनम् १२दिवसीय पयोव्रत प्रा. (पुत्र संतान प्राप्ति हेतु)
12	पंचक समाप्त२०/३०,शुक्र शत.में २०/०१,रामकृष्ण परमहंस जं.फुलेरादूज
0	तिथि क्षय
13	भ.१४/४५से २५/५६ तक (स्व.) श्री विनायक चतुर्थी
14	सूर्य मीन में १२/३६, मलमास प्रारंभ
15	मंगल कुंभ में १८/०८,
16	भ. २१/४० से (स्व.),
17	भ.०९/४८तक (स्व.) होलाष्टक प्रारंभ, दुर्वाष्टमी (दुर्वा)
18	
19	**A** खाटूश्याममेला प्रां. आमला११संभरी११
20	भ. १३/२२ से २६/२३ तक (भूमि), आमलकी११ व्रत सा. रवि मेष में **A**
21	रा.चौ.मास प्रा. रा.शाके १९/४६ प्रारंभ
22	प्रदोष व्रत, रंगपंचमी **B** होली होलाष्टक समाप्त
23	
24	भ. ०९/५६ से २३/१३ तक व्रत की पूर्णिमा, होलिका दहन
25	स्नानदान पुण्य पूर्णिमा, धुलेण्डी, धुलोत्सव, श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती, **B**

दि.२५/०३/२०२४ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
११	५	१०	११	०	१०	१०	११
१०	७	७	२९	२१	२२	१८	२२
३८	२८	२२	११	४१	०	३६	१४
१७	२०	९	१२	५	७	११	९
५९	७११	४६	५४	१२	७४	६	०३
२४	४७	४२	१६	२७	१२	५७	११
श्रव	अनु.	उषा	उषा	भर	पूषा	शत.	रेव
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व

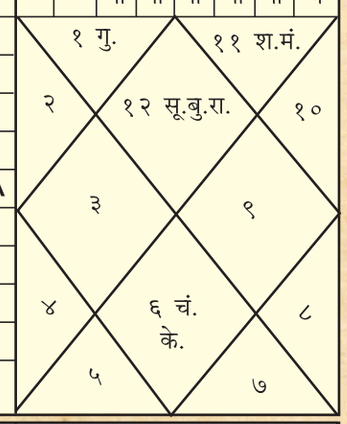

श्री विक्रम सं. २०८० चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३०
०१	मंगल	१४ ५६	हस्त	१३ ३४	ध्रुव	२२ १८	०६ ३२	१८ ४०	तु.२६/५७	११ ११ ३८
०२	बुध	१७ ०७	चित्रा	१६ १६	व्याघा	२२ ५३	०६ ३१	४८ ४०	तुला	११ १२ ३७
०३	गुरु	१८ ५७	स्वाति	१८ ३८	हर्षण	२३ १६	०६ ३०	१८ ४०	तुला	११ १३ ३६
०४	शुक्र	२० २१	विशा.	२० ३६	वज्र	२३ ११	०६ २९	१८ ४१	वृ.१४/०९	११ १४ ३६
०५	शनि	२१ १४	अनु.	२२ ०४	सिद्धि	२२ ४६	०६ २८	१८ ४१	वृश्चिक	११ १५ ३५
०६	रवि	२१ ३२	ज्येष्ठ	२२ ५७	व्यति.	२१ ५३	०८ २७	१८ ४२	ध.२/५७	११ १६ ३४
०७	सोम	२१ १०	मूल	२३ १२	वरी.	२० ३०	०६ २६	१८ ४२	धनु.	११ १७ ३४
०८	मंगल	२० ०९	पू.षा.	२२ ४९	परिध	१८ ३५	०६ २५	१८ ४२	म.२८/३७	११ १८ ३३
०९	बुध	१८ ३०	उ.षा.	२१ ४८	शिव	१६ १०	०६ २४	१८ ४३	मकर	११ १९ ३२
१०	गुरु	१६ १४	श्रवण	२० १२	सिद्ध	१३ १५	०६ २३	१८ ४३	मकर	११ २० ३१
११	शुक्र	१३ २९	धनिष्ठा	१८ ०७	साध्य शुभ	९ ५५ ३० १५	०६ २२	१८ ४४	कु.७/१३	११ २१ ३०
१२	शनि	१० २०	शत.	१५ ४०	शुक्ल	२६ २०	०६ २१	१८ ४४	कुंभ	११ २२ २९
१३	रवि	६ ५४	पू.भा.	१२ ५८	ब्रह्म	२२ १७	०६ २०	१८ ४४	मी.७/४०	११ २३ २८
१४	रवि	२७ २२	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	०० ०० ००
३०	सोम	२३ ५१	उ.भा.	१० १२	ऐन्द्र	१८ १४	०६ १९	१८ ४५	मीन	११ २४ २७

२६ मार्च से ८ अप्रैल २०२४ तक

सौम्यायन — बसंत ऋतु

मार्च अप्रैल	यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
26	बसन्तोत्सव
27	भ.३०/०२से (पाताल), संत तुकाराम जयंती
28	भ.१८/५७ तक (पाताल), श्री संकष्टी चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय २१/२४ बजे
29	
30	श्री रंग पंचमी
31	भ. २१/३१ से (स्व./पा.)
1	भ. ०९/२० तक (पा.) शीतला सप्तमी, शीतला माता पूजन,अप्रैल मासप्रारंभ
2	कालाष्टमी व्रतं, श्री ऋषभदेव जन्म, श्री शीतला अष्टमी
3	भ. २९/२३ से (पा.)
4	भ. १६/१५ तक (पाताल) दशा माता पूजन
5	पाप मोचनी , ११ व्रत (चारोली), पंचक प्रा. ०७/१३ से
6	प्रदोष व्रत, पू.भा. शनि प्रदोष
7	भ.०६/५४से१७/०८तक(भू.)मासशिवरात्रि व्रतं सर्वसि.१२/५९से **B**
0	क्षय तिथि **B** ३०/१८तक रंग त्रयोदशी
8	देवपितृ कार्ये, चैत्री सोमवती अमावस्या, विक्रम संवत २०८० पूर्ण

दि.०८/०४/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
११	११	१०	०	०	११	१०	११
२४	१३	१८	१	२४	९	२०	२१
२७	४२	१५	४	४०	१८	१०	२९
१६	४८	४६	२४	५७	२४	४१	१७
५८	९०१	४६	३७	१३	७४	६	०३
५९	२२	३९	२०	१६	७	२८	११
रेव	उभा	शत	अश्वि	भर	उभा	पूभा	रेव
-	-	मा	व	मा	मा	मा	व

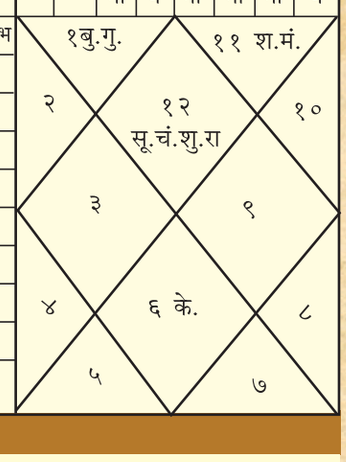

दिन का चौघड़िया

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
6 से 7:30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
7:30 से 9 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
9 से 10:30 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
12 से 1:30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
1:30 से 3 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
3 से 4:30 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
4:30 से 6 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
6 से 7:30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
7:30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
9 से 10:30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
12 से 1:30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
1:30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
3 से 4:30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
4:30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

चौघड़िया - चौघड़िया वैदिक ज्योतिषीय समय गाइड है जो 24 घंटे के शुभ मुहूर्त के बारे में जानकारी देता है। यह प्रत्येक दिन और रात को 8 बराबर अवधि में विभाजित करता है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिन का समय चौघड़िया कहा जाता है और सूर्यास्त से लेकर अगले दिन के सूर्योदय तक के समय को रात का चौघड़िया कहा जाता है।

चौघड़िया का अर्थ

चौघड़िया का अर्थ चार घड़ी से है जिसमें कुल 96 मिनट होते हैं। हिंदी शब्दों से व्युत्पन्न, चौघड़िया में 'चै', का अर्थ चार है और 'घड़ी' का अर्थ है समय अवधि। इसे 'चतुर्षिका मुहूर्त' के रूप में भी जाना जाता है। ज्योतिषीय दृष्टि से अच्छे और बुरे सात चौघड़िया हैं। वो हैं:

उदवेग - चौघड़िया में, उदवेग पहला मुहूर्त है जो कि सूर्य ग्रह द्वारा शासित है। इस घड़ी को अशुभ माना जाता है। हालांकि, उदवेग में सरकार से संबंधित कार्य करने से फलदायक परिणाम मिलते हैं।

लाभ - लाभ दूसरा चौघड़िया है जो बुध ग्रह द्वारा शासित है। यह समय शुभ माना जाता है और किसी भी व्यावसायिक या शैक्षिक संबंधित कार्य को शुरू करने के लिए बहुत उपयुक्त है।

चर - शुक्र द्वारा शासित, चर तीसरा चौघड़िया है जिसे यात्रा के प्रयोजनों के लिए शुभ मुहूर्त माना जाता है।

रोग- चौघड़िया का चैथा मुहूर्त रोग, मंगल ग्रह द्वारा शासित है। इस अशुभ मुहूर्त में व्यक्ति को कोई भी शुभ काम शुरू नहीं करना चाहिए और न ही चिकित्सकीय परामर्श लेना चाहिए। इस अवधि में युद्ध और शत्रु से संघर्ष होता है।

शुभ- शुभ चौघड़िया बृहस्पति ग्रह द्वारा शासित है और किसी भी कार्य को करने के लिए बहुत ही शुभ माना जाता है। इस दौरान विवाह, पूजा, यज्ञ और अन्य धार्मिक गतिविधियां की जानी चाहिए।

काल - काल एक अशुभ चौघड़िया है जो कि शनि ग्रह द्वारा शासित है। धन संचय के लिए, इस अवधि को शुभ मुहूर्त या फलदायी समय माना जाता है।

अमृत - चौघड़िया के इस अंतिम मुहूर्त पर चंद्रमा ग्रह का शासन होता है। यह दिन का सबसे शुभ समय है। इस अवधि में किया गया कोई भी काम सकारात्मक परिणाम देता है।

विक्रम पंचांग



Printed by **Tanishq Printers**